आज़ादी का अमृत महोत्सव

श्रम संगम

वर्ष: 8, अंक: 1 | 'आजादी का अमृत महोत्सव' विशेषांक | जनवरी–जून 2022

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान

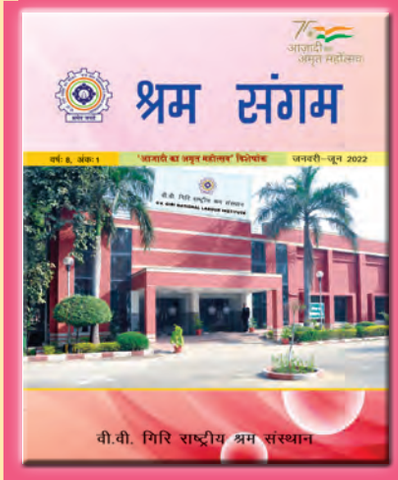

मुख्य संरक्षक
श्री अमित निर्मल
महानिदेशक

संपादक मंडल
डॉ. संजय उपाध्याय
सीनियर फेलो

डॉ. ओतोजीत क्षेत्रिमयूम
फेलो

श्री बीरेन्द्र सिंह रावत
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान
सैक्टर-24, नौएडा-201301
उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का दायित्व स्वयं लेखकों का है तथा पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लिए वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान उत्तरदायी नहीं है।

मुद्रणः चन्दु प्रेस
डी-97, शकरपुर
दिल्ली-110092

श्रम संगम

वर्षः 8, अंकः 1, जनवरी-जून 2022

अनुक्रमणिका

❍	महानिदेशक की कलम से	ii
❍	नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेताः श्री कैलाश सत्यार्थी – डॉ. संजय उपाध्याय	1
❍	करबद्ध विनती (कविता) – बीरेन्द्र सिंह रावत	2
❍	आजादी से अमृत महोत्सव तक का सफर – राजेश कुमार कर्ण	3
❍	पर्यावरण संरक्षण में ग्रीन जॉब्स – डॉ. शशि बाला	11
❍	व्हीलचेयर पर उदास सी जिंदगी (कविता) – मंजू सिंह	12
❍	भारत और रूस की चिरस्थायी मित्रता – बीरेन्द्र सिंह रावत	13
❍	आजादी का अमृत महोत्सव के तहत संस्थान द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन	17
❍	भारतीय स्वतंत्रता में युवा क्रांतिकारियों की भूमिका (I) – राजेश कुमार कर्ण	24
❍	बाल श्रमिक का दर्द (कविता) – सतीश कुमार	28
❍	स्वाधीनता आंदोलन में युवा क्रांतिकारियों का योगदान (II) – सुधा वोहरा	29
❍	गेहूँ के दाने (कहानी)	33
❍	स्वतंत्रता आंदोलन में वीर एवं विदुषी महिलाओं का योगदान – बीरेन्द्र सिंह रावत	34
❍	जीना इसी का नाम हैः पूर्णा मालावत	40
❍	बरसात में एक शाम (कविता) – लमजिंगरेनबा क्षेत्रिमयूम	41
❍	हमारे राष्ट्र की शान का प्रतीकः तिरंगा – गीता अरोड़ा	42
❍	आजादी के 75वें वर्ष में अमृत काल का संकल्प – राजेश कुमार कर्ण	45

महानिदेशक की कलम से...

यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि आजादी के 75 साल पूरे होने का जश्न मनाने को समर्पित 'आजादी का अमृत महोत्सव' के दौरान अंतर्राष्ट्रीय स्तर के दो समाचारों ने हिंदी के सम्मान में वृद्धि की है। पहला, 10 जून 2022 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में बहुभाषावाद पर भारत द्वारा लाए गए प्रस्ताव को अपना लिया गया। इस पारित प्रस्ताव में बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं (अरबी, चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी और स्पेनिश) के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, उर्दू, पुर्तगाली, स्वाहिली और फारसी को संयुक्त राष्ट्र की अनाधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। अब संयुक्त राष्ट्र के सभी कामकाज और जरूरी संदेश इन भाषाओं में भी पेश किए जाएंगे। और दूसरा, इस विशिष्ट उपलब्धि के कुछ ही दिन पूर्व मई 2022 में प्रसिद्ध हिंदी लेखिका सुश्री गीतांजलि श्री को उनके हिंदी उपन्यास 'रेत–समाधि' के लिए अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार प्रदान किया गया। साहित्य के पुरस्कार के क्षेत्र में हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी मान्यता पहली बार मिली है।

निस्संदेह, उपरोक्त दोनों ही उपलब्धियों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का मान एवं महत्व बढ़ा है। फिर भी, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक प्रतिष्ठित स्थान पाने के लिए हिंदी को अभी भी काफी लंबा रास्ता तय करना है। इसके लिए हम सबको व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर और भी ज्यादा प्रयास करने होंगे। आइये, हम उन सभी महान विभूतियों, जिन्होंने उन्नीसवीं सदी से ही हिंदी को देश की राजभाषा बनाने के लिए प्रस्ताव पेश किए, स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता के लिए इसे संपर्क भाषा बनाया और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिंदी के प्रयोग की शुरुआत की, को नमन करते हुए सारे कार्य राजभाषा हिंदी में करने का संकल्प लें।

श्रम संगम' पत्रिका की नियमितता बनाए रखने तथा इसके आगामी अंकों को अधिकाधिक रुचिकर बनाने हेतु आपके बहुमूल्य विचारों और सुझावों का सदैव स्वागत है। पत्रिका अनवरत इसी प्रकार आकर्षक रूप में हमारे बीच आती रहे तथा हिंदी के प्रचार–प्रसार में सदैव सफलता प्राप्त करे, इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(अमित निर्मल)

नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेता – श्री कैलाश सत्यार्थी

संजय उपाधयाय*

श्री कैलाश सत्यार्थी एक भारतीय बाल अधिकार कार्यकर्ता और बाल श्रम के घोर विरोधी हैं। उन्होंने 1980 में बचपन बचाओ आन्दोलन की स्थापना की जिसके बाद से वे विश्व भर के 144 देशों के लगभग एक लाख बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए कार्य कर चुके हैं और उनका यह संगठन हजारों बच्चों को बंधुआ मज़दूरी, मानव तस्करी और बाल श्रम के चंगुल से छुड़ा चुका है। गैर–सरकारी संगठनों तथा कार्यकर्ताओं की सहायता से कैलाश सत्यार्थी जी ने हज़ारों ऐसे कारखानों तथा गोदामों पर छापे पड़वाए, जिनमें बच्चों से काम करवाया जा रहा था। उनके दृढ़ निश्चय एवं उत्साह के कारण ही गैर–सरकारी संगठन बचपन बचाओ आंदोलन का गठन हुआ। कैलाश सत्यार्थी जी ने 1994 में 'रगमार्क फाउंडेशन' (Rugmark Foundation) की शुरुआत की। रगमार्क फाउंडेशन एक प्रमाणन ट्रेडमार्क प्रदान करता है, जो आयातकों और खरीदारों को आश्वस्त करता है कि उनके उत्पाद (कालीन) एक ऐसी कंपनी द्वारा निर्मित/निर्यात किए गए हैं, जिसने अवैध बाल श्रम के बिना काम करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया है, और जो एक प्रभावी निगरानी तंत्र के अधीन है। इस पहल से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बाल अधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करने में काफ़ी सफलता मिली। उन्होंने विभिन्न रूपों में प्रदर्शनों तथा विरोध–प्रदर्शनों की परिकल्पना और नेतृत्व को अंजाम दिया, जो सभी शांतिपूर्ण ढंग से पूरे किए गए। इन सभी का मुख्य उद्देश्य आर्थिक लाभ के लिए बच्चों के शोषण के खिलाफ़ काम करना था। सत्यार्थी जी के अनवरत व अथक प्रयासों के कारण ही वर्ष 1999 में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा बाल श्रम की निकृष्टतम श्रेणियों पर संधि सं. 182 को अंगीकृत किया गया, जो अब दुनियाभर की सरकारों के लिए इस क्षेत्र में एक प्रमुख मार्गनिर्देशक है। 11 जनवरी 1954 को भारत के मध्य प्रदेश के विदिशा में जन्मे कैलाश सत्यार्थी जी वर्तमान समय में सपरिवार नई दिल्ली में रहते हैं। कैलाश सत्यार्थी जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गवर्नमेंट बॉयज हायर सेकेण्ड्री स्कूल से प्राप्त करने के बाद सम्राट अशोक टेक्नोलॉजिकल इंस्टिट्यूट, विदिशा से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की पढाई पूरी की और फिर हाई–वोल्टेज इंजीनियरिंग में उन्होंने पोस्ट ग्रेजुएशन की उपाधि प्राप्त की।

बचपन बचाओ आंदोलन

कैलाश सत्यार्थी जी पेशे से विद्युत इंजीनियर हैं लेकिन उन्होंने 26 वर्ष की उम्र में ही 1980 में अपने इलेक्ट्रिक इंजीनियर के करियर को छोड़कर बाल श्रम के खिलाफ़ 'बचपन बचाओ आंदोलन' की स्थापना की। इस समय वे 'ग्लोबल मार्च अगेंस्ट चाइल्ड लेबर' (बाल श्रम के ख़िलाफ़ वैश्विक अभियान) के अध्यक्ष भी हैं। यह देश में बाल अधिकारों का सबसे प्रमुख समूह बना और सत्यार्थी जी बच्चों के हितों को लेकर वैश्विक आवाज़ बनकर उभरे। बचपन बचाओ आन्दोलन में लगभग 75,000 स्वयंसेवक हैं, जो लगातार मासूमों के जीवन में खुशियों के रंग भरने के लिए कार्यरत हैं। उन्होंने बाल तस्करी एवं मज़दूरी के खिलाफ़ कड़े कानून बनाने की वकालत की और अभी तक उन्हें मिश्रित सफलता मिली है। सत्यार्थी जी कहते रहे हैं कि वह बाल मज़दूरी को लेकर चिंतित रहे और इससे उन्हें संगठित आंदोलन खड़ा करने में मदद मिली। बाल मजदूरी कराने वाली फैक्ट्रियों में छापेमारी के उनके प्रारंभिक प्रयासों का फैक्ट्री मालिकों ने कड़ा विरोध किया तथा कई बार पुलिस ने भी उनका साथ नहीं दिया, किन्तु धीरे–धीरे उनके काम की महत्ता को पहचान मिली। 17 मार्च 2011 को दिल्ली की एक कपड़ा फैक्ट्री पर छापे के दौरान उन पर हमला किया गया। इससे पहले वर्ष 2004 में ग्रेट रोमन सर्कस से बाल कलाकारों को छुड़ाने के दौरान भी उन पर हमला हुआ था, किन्तु दृढ़ इच्छाशक्ति वाले और कर्त्तव्यनिष्ठ सत्यार्थी जी इस दिशा में आगे बढ़ते गए। उन्होंने बच्चों के लिए आवश्यक शिक्षा को लेकर शिक्षा के पूर्ण अधिकार का आन्दोलन चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सत्यार्थी जी ने भोपाल गैस त्रासदी के राहत अभियान में भी जमकर काम किया।

पुस्तकें एवं लेख

सत्यार्थी जी ने बाल श्रम के विविध आयामों पर अनेक लेख व पुस्तकें लिखी हैं जिनमें प्रमुखता से शामिल हैं – ग्लोबलाइजेशन, डेवलपमेंट एण्ड चाइल्ड राइट्स, अगस्त 2008; मिसिंग चिल्ड्रेन ऑफ़ इंडिया, अप्रैल 2012; आज़ाद बचपन की ओर, फरवरी 2016; बिकॉज वर्ड्स मैटर, अक्टूबर 2017; विल फॉर चिल्ड्रेन, 2017; एवरी चाइल्ड मैटर्स, 2018; बदलाव के बोल, जनवरी 2018; कोविड–19: सभ्यता का संकट और समाधान, जनवरी 2021।

पुरस्कार एवं सम्मान

सत्यार्थी जी के सामाजिक योगदान और मानवता के प्रति उनकी

* सीनियर फेलो, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

सेवा एवं प्रतिबद्धता के मान्यता स्वरूप उन्हें अब तक दर्जनों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय उपाधियाँ और पुरस्कार प्रदान किये जा चुके हैं, जिनमें प्रमुखता से शामिल हैं – अशोका फेलोशिप (यूनाइटेड स्टेट्स) 1993; द आचेनेर इंटरनेशनल पीस अवॉर्ड (जर्मनी) 1994; रॉबर्ट एफ. केनेडी मानव अधिकार पुरस्कार (यूनाइटेड स्टेट्स) 1995; ट्रम्पेटर पुरस्कार (यूनाइटेड स्टेट्स) 1995; गोल्डन फ्लैग पुरस्कार (नीदरलैण्ड्स) 1998; एफ.ई.एस पुरस्कार (जर्मनी) 1999; वालेनबर्ग मेडल (मिशिगन विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त) 2002; फ्रीडम पुरस्कार (यूनाइटेड स्टेट्स) 2006; इटली के सीनेट का स्वर्ण पदक, 2007; अमेरिका के स्टेट विभाग द्वारा 'आधुनिक दासता को समाप्त करने के लिये कार्यरत नायक' का सम्मान 2007; अल्फांसो कोमिन अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार (स्पेन) 2008; डिफेण्डर्स ऑफ डेमोक्रैसी पुरस्कार (अमेरिका) 2009; नोबेल शांति पुरस्कार 2014; हार्वर्ड विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त 'ह्यूमनिटेरियन पुरस्कार', 2015 (यह पुरस्कार सबसे पहले भारत में सत्यार्थी जी को प्राप्त हुआ); मेंबर फेलो (ऑस्ट्रेलियन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट) 2016; डॉक्टर ऑफ लॉ (एल एल.डी.), वेस्ट बंगाल यूनिवर्सिटी ऑफ जुरिडिकल साइंसेज 2016; रामकृष्ण फाउन्डेशन द्वारा प्रदत्त संतोकबा ह्यूमनिटेरिअन अवॉर्ड, 2018; वॉकहार्ट फाउंडेशन द्वारा प्रदत्त लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड, 2019; मदर टेरेसा मेमोरियल अवॉर्ड फोर सोशल जस्टिस, 2019।

सत्यार्थी जी के अनुसार बाल मजदूरी महज एक बीमारी नहीं है, बल्कि कई बीमारियों की जड़ है। इसके कारण कई जिन्दगियाँ तबाह होती हैं। कैलाश सत्यार्थी जी का मानना है कि जमीनी स्तर पर कोई भी काम करना नहीं चाहता। सेवा ने अब एक व्यवसाय का रूप ले लिया है। समस्या को खत्म करने में किसी की दिलचस्पी नहीं है, अगर होती तो बाल मजदूरी कब की खत्म हो गई होती। दिल्ली और मुम्बई जैसे देश के बड़े शहरों की फैक्ट्रियों में बच्चों के उत्पीड़न से लेकर ओडिशा और झारखण्ड के दूरवर्ती इलाकों से लेकर देश के लगभग हर कोने में उनके संगठन ने बँधुआ मजदूरी के खिलाफ कड़े कानून बनाने की वकालत की। उन्होंने अब तब लगभग एक लाख बच्चों की जिन्दगी बदली है।

सत्यार्थी जी को मिले पुरस्कारों में वर्ष 2014 का नोबेल शान्ति पुरस्कार सर्वाधिक प्रमुखता से शामिल है जो उन्हें पाकिस्तान की नारी शिक्षा कार्यकर्ता मलाला युसुफ़ज़ई के साथ संयुक्त रूप से प्रदान किया गया था। नोबेल शांति परस्कार मिलने पर उन्होंने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा – "यह सम्मान सवा सौ करोड़ भारतीयों का सम्मान है। यह भारत के लोकतंत्र की जीत है, जिसकी वजह से भारत से यह लड़ाई आरम्भ हुई और आज दुनिया में हम जीत रहे हैं। यह उन बच्चों की भी जीत है, जो अपनी जिंदगी बदलने के लिए कड़े संघर्ष में जुटे हैं।" कैलाश सत्यार्थी जी भारत में जन्मे पहले व्यक्ति हैं, जिन्हें नोबेल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। नोबेल कमेटी ने आधिकारिक बयान में कहा था कि कैलाश सत्यार्थी ने बहुत–से विरोध प्रदर्शन किए, लेकिन उन्होंने महात्मा गाँधी की शान्ति और अहिंसा की परम्परा को कायम रखा।

हम सभी भारतवासियों के लिये यह बहुत ही गर्व और गौरव का विषय है कि सत्यार्थी जी जैसी महान विभूति ने भारत भूमि में जन्म लिया है और उन्होंने बाल श्रम के विरोध के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के माध्यम से मानवता की सेवा करते हुए स्वयं एवं राष्ट्र, दोनों ही का नाम दुनिया भर में रोशन किया है। ऐसी महान विभूति को शत् शत् नमन।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

करबद्ध विनती

बीरेन्द्र सिंह रावत

विनती है करबद्ध मेरी, देश के मेरे प्रबुद्ध जनो।
जाति, धर्म, दल से परे तुम, पहले इक भारतीय बनो। विनती है.....

पायी है आजादी ये कैसे, इस पर तुम मनन करो।
ज्ञात–गुम सेनानियों सबको, ससम्मान नमन करो।
विनती है.....

देश की आजादी के खातिर, लोगों ने थीं गंवाई जान।
खूब हैं ज्ञात आंदोलनकारी, रह गए कुछ बिना पहचान।
विनती है.....

राहें थीं जुदा कइयों की, था सबका एक ही ध्येय।
जान जाए तो जाए अपनी, देश को जल्द आजादी मिले।
विनती है.....

मुबारक हो आज का पर्व, जै, जै, जै भारत गणतंत्र।
सुख, शांति खुशहाली का, निष्ठा ही है पहला मंत्र।
विनती है.....

निष्ठावान रहो सबके संग, परिजन देश या हो काम।
रहे सब ओर चैन अमन, बढ़ता जाए देश का नाम।
विनती है.....

जाने कितने हमारे मध्य, होंगे विभीषण अरु जयचंद।
रहे नजर जो इन सब पर, रहेगा प्यारा देश अखंड।
विनती है.....

चाहते हैं अधिकार जैसे, कर्तव्यों का भी करें ख्याल।
समावेशी समाज बने अरु, बने अपना ये देश महान।
विनती है.....

* *वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा*

आजादी से अमृत महोत्सव तक का सफर

राजेश कुमार कर्ण*

भारत को गुलामी की जंजीर तोड़कर आजादी प्राप्त करने के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अनेकों वीर योद्धओं, राजा–महाराजाओं एवं आम नागरिकों ने देश की आन–बान–शान के लिए लड़ाई लड़ी। उनके त्याग एवं बलिदान के बदौलत भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ। भारत के हर क्षेत्र, हर वर्ग और हर समाज ने आजादी की लड़ाई में अपने भीतर राष्ट्र भक्ति की लौ को प्रज्ज्वलित रखा। मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले इन सेनानियों ने वर्षों तक अंग्रेजों से संघर्ष किया और आजादी हासिल की। कुछ वीर जवान ऐसे भी थे जिन्होंने आजादी के बाद भी राष्ट्र रक्षा की परंपरा को जीवित रखा। उनके लिए 'जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गदपि गरीयसी' का मंत्र सर्वोपरि था जो हमें प्रतिपल देश के लिए जीने, देश के लिए कुछ करने के प्रेरित करता है।

भारत की आजादी के 75वें वर्ष में भारत 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रहा है। ''उत्सवेन बिना यस्मात् स्थापनम् निष्फलम् भवेत्'' अर्थात कोई भी प्रयास, कोई भी संकल्प बिना उत्सव के सफल नहीं होता। एक संकल्प जब उत्सव का रूप लेता है तो उसमें करोड़ों लोगों के संकल्प जुड़ जाते हैं, उनकी ऊर्जा जुट जाती है। आजादी का अमृत महोत्सव में जनभागीदारी, यानी 'सबका प्रयास' की मूल भावना है। इसी भावना के साथ आजादी के 75वें वर्ष को अमृत महोत्सव का नाम देकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भारत की विकास यात्रा और स्वर्णिम भारत के संकल्पों को साकार करने की दिशा में अभूतपूर्व कदम उठाया है। एक बच्चा आज अपने आप को आजादी के संघर्ष के साथ जोड़ लेता है तो जीवनभर वह भारत के विकास के प्रति समर्पित रहेगा। भारत की नई पीढ़ी को आजादी और देश के साथ जोड़ने का ये स्वर्णिम अवसर बन गया है। आजादी के 75वें वर्ष में यह भी अपेक्षित है कि हम अपनी उपलब्धियों का मूल्यांकन करें, अपनी सफलताओं का उत्सव मनाएं, जिन मील के पत्थरों को हमने पार किया है उसका गौरव मनाएं। साथ ही उन चुनौतियों पर भी विचार करें जिनके समाधान हम अभी तक नहीं खोज पाए हैं।

आजादी के 75वें वर्ष तक भारत ने कई उपलब्धियाँ हासिल की हैं और हम भारत को शीर्ष देशों में रखने में सफल रहे हैं। सभी के प्रयासों से सभी क्षेत्रों में कई कीर्तिमान स्थापित किए गए हैं। भारत के उप राष्ट्रपति माननीय श्री एम. वेंकैया नायडू ने ठीक ही लिखा है कि निस्संदेह आज विश्व मंच पर भारत की प्रतिष्ठा है। एक स्वतंत्र देश के रूप में विगत 75 वर्षों में भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलताएं अर्जित की हैं। फिर भी आवश्यक है कि हम अपने लंबे स्वाधीनता आंदोलन से प्रेरणा लें। हमारा स्वाधीनता आंदोलन, एक राष्ट्र के रूप में हमारी जिजीविषा, उसके लिए हमारे अदम्य संघर्ष, भविष्य के प्रति हमारी उम्मीदों को दर्शाता है। वह यात्रा आज भी अनवरत जारी है। वहीं हमें हर क्षेत्र में सफलता के नित नए प्रतिमान स्थापित करने और उनकी प्राप्ति के लिए नए उत्साह से प्रयास करने के लिए प्रेरित करती है। यह जरूरी है कि हम विपरीत परिस्थितियों में भी उन लक्ष्यों के प्रति एकाग्र और निष्ठावान रहें, जो हमने अपने लिए निश्चित किए हैं। हमारे पास प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। देश की मेधा का लोहा विश्व मानता है। इसलिए, आवश्यक है कि भारत आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और मानव विकास के लिए अपनी युवा शक्ति की प्रतिभा और क्षमता का भरपूर उपयोग करे।

आज जब हम विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपलब्धियों पर गौरव कर रहे हैं तो इस ऐतिहासिक अवसर पर थोड़ा ठहरकर भविष्य की संभावित चुनौतियों पर विचार कर उनका समाधान खोजने की दिशा में भी सक्रिय हों। हमने लंबे और कठिन संघर्ष के बाद जिस स्वराज को हासिल किया है उसे अब देश भर में स्थानीय स्तर पर सुराज में बदलना है। गरीबी, अशिक्षा, लैंगिक भेदभाव, भ्रष्टाचार को समाप्त करना है। असमानता को खत्म करना है। यही हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। ऐसे समतामूलक समाज और सुराज के लिए न्यायपूर्ण शासन आवश्यक शर्त है। एकता, समानता और समावेश हमारी प्राचीन भारतीय सभ्यता में अंतर्निहित सांस्कृतिक आदर्श रहे हैं। एक सशक्त जीवंत भारत के निर्माण के लिए हमें सिर्फ अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित आदर्शों का राष्ट्रवाद के भाव से अनुसरण अपनी सामर्थ्य से भलीभांति परिचित हो और जो उसका सदुपयोग कर सके।

वर्षों तक आक्रांताओं की लूट का शिकार बना भारत ब्रिटिश राज से मुक्ति के बाद आर्थिक रूप से कमजोर था। धीरे–धीरे कदम बढ़ाते हुए आज यह न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हुआ है बल्कि विज्ञान–तकनीक और सामरिक क्षेत्रों में भी आगे बढ़ा है।

कभी इंग्लैंड के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने 'इंडियन इंडिपेंडेंस बिल' की बहस में कहा था– 'अगर भारत को आजादी दी जाती है तो सत्ता धूर्तों और लुटेरों के हाथों में चली जाएगी। भारतीय नेता अक्षम हैं। उनके पास मीठी जुबान, मगर छोटा दिल है। वे सत्ता के लिए आपस में लड़ेंगे और भारत राजनीतिक झगड़ों में खो जाएगा।' किंतु इतिहासकार गलत नहीं कहते कि यह भारतीयों का ही बूता था कि उन्होंने लगभग सौ साल लंबी लड़ाई लड़ी, जीती और खुद को इस मुकाम पर पहुंचाया कि अब दुनिया भारत को

* आशुलिपिक ग्रेड–II, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

सबसे तेजी से उभरती आर्थिक ताकत के तौर पर देखती है। यह सिर्फ इसलिए संभव हो सका कि हमने एक समावेशी समाज की स्थापना की।

देश में गणराज्य और लोकतंत्र लागू करने के लिए वर्ष 1950 में संविधान का निर्माण किया गया। यह देश को समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य बनाता है। देश के नागरिकों को संविधान ने सरकार खुद चुनने की आजादी दी। विभाजन की त्रासदी और दंगों की पृष्ठभूमि में मिली आजादी को लेकर यह आशंकाएं तक जताई गई थीं कि भारत कदाचित अपनी आजादी को संजोकर नहीं रख सकेगा। किंतु आजादी के 75 साल के सफर ने दिखाया है कि भारत ने न केवल अपनी आजादी को अक्षुण्ण रखा है, बल्कि वह दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है तथा सबसे तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्था भी है। इस सफर को हमने कदम–दर–कदम तय किया है। एक सच्चा लोकतंत्र वही हो सकता है, जहां ऐसी राजनीतिक व्यवस्था हो, जिसमें स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के जरिए सरकारें बदली जाएं। इस कसौटी पर भारत पूरी तरह सफल हुआ है। यहां केन्द्र एवं राज्यों में सदैव शांतिपूर्वक सत्ता परिवर्तन होता आ रहा है। इन 75 वर्षों में 17 बार जनतांत्रिक तरीके से राष्ट्रीय सत्ता का हस्तांतरण हुआ, वहीं भारत के साथ ही अस्तित्व में आए पाकिस्तान में आज तक कोई भी सरकार अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर सकी है। पड़ोसी देश नेपाल, श्रीलंका, मालदीव में भी लोकतंत्र आता–जाता रहा है। भारत ने लोकतंत्र को सहेजा और उसका मान बढ़ाया। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। यहां सभी समुदाय के लोगों को धार्मिक स्वतंत्रता है। यह देश के लिए बहुत ही गर्व की बात है कि यहां विश्व में सभी धर्मों के लोग सद्भावना के साथ रहते हैं। विविधता में एकता हमारी अनमोल धरोहर है।

भारत ने पिछले दो साल से 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त अनाज सुनिश्चित किया है। आज भारत में हर महीने औसतन 5 हजार पेटेंट फाइल होते हैं। आज भारत हर महीने औसतन 500 से अधिक आधुनिक रेलवे कोच बना रहा है। आज भारत हर महीने औसतन 18 लाख घरों को नल से जल योजना के तहत जोड़ रहा है। स्टार्टअप इंडिया अभियान एक आइडिया के स्तर पर था, इस शब्द से अधिकांश लोग अनजान ही थे। लेकिन पिछले कुछ वर्षों के प्रयास से ही आज भारत में दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम है। इतना ही नहीं, आज भारत में औसतन हर दस दिन में एक यूनिकॉर्न बन रहा है। भारत आज दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल फोन निर्माता है। भारत की बायोटेक इकोनॉमी 8 गुणा बढ़कर 6 लाख करोड़ रुपये के पार जा चुकी है। प्राकृतिक खेती जैसे शब्द दुनिया में चर्चा का ही विषय है, लेकिन भारत में इसे जमीन पर उतारा जा रहा है। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के दुनिया की पहल में भारत का प्रयास केवल नीतियों तक सीमित नहीं है, बल्कि भारत का युवा इलेक्ट्रिक वाहन, जलवायु से जुड़ी तकनीक में निवेश कर रहा है। पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार और जीवनशैली सामान्य लोगों के जीवन का हिस्सा बन रही है। आज भारत का हर गांव खुले में शौच से मुक्त है, हर गांव तक बिजली पहुंच चुकी है, लगभग हर गांव सड़क मार्ग से जुड़ चुका है, 99 प्रतिशत से अधिक घरों में रसोई में पकाने के लिए स्वच्छ ईंधन है, हर परिवार बैंकिंग व्यवस्था से जुड़ा हुआ है, हर गरीब को पांच लाख रुपये तक मुफ्त इलाज की सुविधा उपलब्ध है।

सदियों की गुलामी ने हमें बिल्कुल खोखला कर दिया था। हमारे पास न आर्थिक शक्ति थी, न सैनिक शक्ति थी, न सामाजिक बल और न धार्मिक एकता थी। इन कमजोरियों के बावजूद तब से अब तक के इन 75 वर्षों में भारत ने कमोबेश जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में प्रगति की है और अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं। औद्योगिकीकरण, विज्ञान, तकनीक, कृषि, साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में देश का परचम लहराया है। भारत नए सपनों, नए संकल्पों एवं नए संभावनाओं के साथ आगे बढ़ रहा है। आज भारत औद्योगिक दृष्टि से बहु–विकसित, वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत आगे, टेक्नोलॉजिकल दृष्टि से विशिष्ट और राजनीतिक दृष्टि से स्थिर है। इन 75 वर्षों में भारत ने विश्व समुदाय के बीच एक आत्मनिर्भर, सक्षम और स्वाभिमानी देश के रूप में अपनी जगह बनाई है। यही वजह है कि दुनिया हमारी ओर विस्मयभरी उम्मीद से देख रही है और हमें आशा है कि हम उनकी उम्मीदों पर खरा उतरेंगे।

आजादी के समय अधिकांश भारतीय अशिक्षित तथा बेहद गरीब थे। यह उपलब्धि उल्लेखनीय है कि आजादी के समय जहां 12% आबादी साक्षर थी और जीवन प्रत्याशा मात्र 32 वर्ष थी, वहीं आज 77.7% आबादी साक्षर है और जीवन प्रत्याशा बढ़कर 70 वर्ष हो चुकी है। पश्चिमी देश कभी हमें सपेरों, आदिवासियों और अशिक्षितों का देश मानते थे किंतु आज संसार में सर्वाधिक स्नातक भारत के पास ही है। आजादी के समय हमारी कुल आबादी 32 करोड़ थी जो अब बढ़कर 138 करोड़ हो गई है। जल्दी ही हम संसार का सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश बनने जा रहे हैं। अक्सर माना जाता है कि अधिक आबादी अभिशाप होती है, किंतु भारत ने अपने जन–बल को बेहतरीन कार्य–बल में तब्दील करने का कमाल किया है। आजादी के समय हम पेट भरने के लिए बाहर से अन्न मंगाते थे, लेकिन आज हम न केवल खाद्य पदार्थों के मामले में आत्मनिर्भरता की स्थिति में पहुंच चुके हैं, बल्कि दूसरे देशों को अनाज निर्यात भी करते हैं।

वर्ष 1947 में भारत की विकास दर महज 1% थी। आजादी के बाद कई योजनाबद्ध कार्यक्रम बने जिसके चलते भारत 10% से भी अधिक विकास दर हासिल कर सका। वर्ष 1947 में भारत की जीडीपी मात्र 2.7 लाख करोड़ रुपए थी, जो कि 87 गुना से ज्यादा बढ़कर वर्ष 2021–22 में 236. 65 लाख करोड़ हो गई है। भारत की प्रति व्यक्ति आय वर्ष 1947 में महज 247 रुपए थी, वह 518 गुणा बढ़कर 1.28 लाख रुपए तक पहुंच गई है। विश्व की कुल सकल आय में भारत की हिस्सेदारी वर्ष 1947 में मात्र तीन प्रतिशत होती थी जो अब 7.74 प्रतिशत हो गई है। भारत ब्रिटेन को पछाड़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। चालू

वित्त वर्ष की पहली तिमाही (अप्रैल–जून) में भारत का सकल घरेलू उत्पाद 13.5 प्रतिशत की गति से बढ़ा है। पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में भारत का उभरना दोहरी आश्चर्यजनक उपलब्धि है। यह एक तरह का प्राकृतिक न्याय ही है कि आजादी के 75वें वर्ष में भारतीय अर्थव्यवस्था अपने औपनिवेशिक शासक रहे ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था को पछाड़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है। भारत की यह कामयाबी इस मायने में भी चमकदार है कि उसने यह छलांग ब्रिटिश साम्राज्यवादी लूट से पैदा हुई गरीबी, भूख, अशिक्षा, बीमारी और देश–विभाजन जैसी गंभीर चुनौतियों के बीच एक संवैधानिक–लोकतांत्रिक गणतंत्र के रूप में लगाई है, जबकि अनेकों नव–स्वाधीन देश इस दौरान भयानक गृह–युद्ध, क्रूर सैनिक तानाशाही और आर्थिक–सामाजिक तबाही से गुजरे हैं। ब्रिटेन की औपनिवेशिक गुलामी और लूट ने सोने की चिड़िया कहे जाने वाले भारत को पौने दो सौ सालों में दरिद्र बना दिया था। अर्थशास्त्री उत्सा पटनायक के आकलन के अनुसार ब्रिटिश साम्राज्य ने लगभग पौने दो सौ सालों के औपनिवेशिक राज में भारत की संपदा से लगभग 45 खरब डॉलर की लूट की। लूट की यह रकम दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के बाद भारत की कुल जीडीपी के 12 गुने से ज्यादा है। भारत को ब्रिटेन की तरह विकसित और अमीर देश बनने के लिए आने वाले 25 वर्षों में न केवल 8 से 9 प्रतिशत की सालाना जीडीपी वृद्धि दर के साथ लगातार बढ़ना होगा बल्कि उससे पैदा हुई समृद्धि के न्यायपूर्ण और समावेशी बंटवारे को सुनिश्चित करना होगा। इसके साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य, सामाजिक और भौतिक संरचनागत ढांचे, कृषि आदि क्षेत्रों में भारी सार्वजनिक निवेश करना होगा। साथ ही, उसे संवैधानिक–लोकतांत्रिक ढांचे, मूल्यों, संस्थाओं, प्रक्रियाओं और कानून के शासन को न सिर्फ बनाए रखना होगा बल्कि मजबूत करना होगा।

क्रय–शक्ति समानता के हिसाब से भारत का सकल घरेलू उत्पाद उसे अमेरिका और चीन के बाद विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करता है। अनुमान यही कहते हैं कि अन्य देशों का सकल घरेलू उत्पाद या तो स्थिर रहेगा या कम होगा, किंतु भारत का सकल घरेलू उत्पाद लगातार बढ़ता रहेगा। इसका अर्थ है कि भारत अपनी बढ़त कायम रखेगा और मौजूदा कमियों को दूर करने के काम में तेजी लाएगा। केंद्रीय सूचना प्रसारण और खेल एवं युवा मामलों के मंत्री श्री अनुराग सिंह ठाकुर ने ठीक ही लिखा है कि कोविड–19 महामारी ने लगातार दो वर्षों तक भारत की अर्थव्यवस्था को भी शेष विश्व की भांति गंभीर रूप से प्रभावित किया, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी जी ने प्रतिकूल परिस्थितियों वाली आपदा की इस अवधि को भी अवसर में बदल दिया। उनकी दूरदर्शिता ने भारत को अपने धन एवं संसाधनों को बर्बाद होने से बचाया। अन्य देशों से अलग उन्होंने एक सतर्क और विवेकपूर्ण विकल्प चुना। इसके तहत रोजगार पैदा करने वाली बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं पर खर्च बढ़ाया गया और उद्योग जगत में तेजी लाने के लिए प्रोत्साहन–आधारित योजनाओं को बढ़ावा दिया गया। दो लाख करोड़ रुपए की उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना का असर दिखने लगा है। ये सभी उपाय भारत के प्रौद्योगिकी पूल का लाभ उठाने, स्टार्टअप एवं यूनिकार्न को प्रोत्साहित करने और वैश्विक स्तर पर निवेशकों एवं उद्योगों के साथ सीधे जुड़ने की सुविधा के अलावा पीएम मोदी द्वारा व्यापार की बेहद आसान प्रक्रिया, नीतिगत स्थिरता, संशोधित श्रम कानून और लोकप्रिय एवं विश्व की सबसे बड़ी डिजिटल भुगतान प्रणाली सुनिश्चित किए जाने की पृष्ठभूमि में हुए हैं। वहीं व्यापक टीकाकरण ने भी आर्थिक हितों को सुरक्षित किया।

1947 में भारत एक असहाय राष्ट्र था लेकिन आज जब हम अपनी आजादी के 'अमृत काल' में प्रवेश कर रहे हैं तब हमारा देश काफी मजबूत और समृद्ध हो चुका है। आज भारत स्मार्टफोन डाटा का प्रमुख उपभोक्ता है। इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के मामले में दूसरे स्थान पर है। यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार है। ग्लोबल रिटेल इंडेक्स में दूसरे पायदान पर है। ऊर्जा का तीसरा बड़ा उपभोक्ता देश होना भारत की उभरती अर्थव्यवस्था को रेखांकित करता है। भारत में बड़ी स्टार्टअप क्रांति आकार ले रही है, जो केवल बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं है। जीएसटी कर संग्रह के लिए क्रांतिकारी और सुगम सिद्ध हुआ है। जिंसों का हमारा निर्यात 31 लाख करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर गया है। एक ऐसा देश जो कभी पीएल 480 गेहूं के भरोसे निर्भर था, आज दुनिया को खाद्यान्न निर्यात करता है। प्रधानमंत्री मोदी जी का ध्यान गरीबी को हटाने पर भी उतना ही केंद्रित है क्योंकि उनसे बेहतर यह कोई नहीं जानता कि इस तबके की उन्नति के अभाव में समग्र राष्ट्रीय समृद्धि संभव नहीं। हाल में आईएमएफ का अध्ययन भी बताता है कि देश में किस तरह अत्यधिक गरीबी और उपभोग संबंधी असमानता में तेजी से कमी आई है। यह इस दिशा में प्रधानमंत्री के प्रयासों में सफलता की पुष्टि करता है।

ग्रामीण भारत में स्वालंबन का सबसे बड़ा आंदोलन सिद्ध हुआ सहकारी रूप से दुग्ध उत्पादन। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने दुग्ध क्रांति की शुरुआत की जिसे हम श्वेत क्रांति के नाम से जानते हैं। श्वेत क्रांति ने स्त्रियों और किसानों के सशक्तिकरण और समृद्धि का द्वार खोला और स्वावलंबी बनाया। वर्तमान में भारत दूध के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर है। इसके बाद हरित क्रांति आई जिसे भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने शुरु किया था। कृषि उत्पादन लगातार ऊंचाइयों की तरफ बढ़ता जा रहा है। खाद्य आत्मनिर्भरता राष्ट्रीय संप्रभुता की नींव बन गई है।

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर के मुताबिक, किसानों की तपस्या और किसान कल्याण व कृषि विकास के लिए अनेक अभिनव पहल और प्रयोगों से देश में किसानों की दशा–दिशा में बड़ा बदलाव दिखाई दे रहा है। देश में कृषि क्षेत्र को आगे बढ़ाने में कई कारण उभरकर दिखाई दे रहे हैं। कृषि संबंधी योजनाओं एवं कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन, पिछले आठ वर्षों में कृषि बजट में करीब छह गुणा वृद्धि, फसलों

के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में लगातार वृद्धि, कृषि स्टार्टअप, कृषि क्षेत्र में ड्रोन का प्रयोग, कृषि शोध से जुड़े सौ से अधिक रिसर्च इंस्टीट्यूट, 75 कृषि विश्वविद्यालयों, इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च के 20 हजार से अधिक वैज्ञानिकों के समर्पित शोध कार्य कृषि क्षेत्र में विकास के नये अध्याय बने हैं। देश में दलहन और तिलहन की उन्नत खेती में 'लैब टु लैंड स्कीम' के प्रयोग और वैज्ञानिकों की सहभागिता के साथ नीतिगत समर्थन की नीति से तिलहन मिशन को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है। इस समय देश भर में उन्नत प्रजाति के बीजों की आपूर्ति के लिए केंद्र सरकार दलहनों व तिलहनों की मुफ्त मिनी किट किसानों में बांट रही है। इसके लिए जलवायु आधारित चिन्हित गांवों को दलहन गांव घोषित किया गया है, जहां कृषि वैज्ञानिकों की देखरेख में दलहनी व तिलहनी फसलों की खेती की जा रही है। इन विभिन्न प्रयासों से जहां देश में कृषि एवं ग्रामीण विकास का बढ़ता हुआ ग्राफ दिखाई दे रहा है, वहीं किसानों की कृषि और गैर–कृषिगत आमदनी भी बढ़ती दिखाई दे रही है। जन–धन योजना, आधार और मोबाइल से छोटे किसानों और ग्रामीण गरीबों का सशक्तिकरण हुआ है।

संचार क्रांति में भारत ने अहम भूमिका निभाई है। आजाद भारत ने 1990 के दशक तक पोस्टकार्ड, अंतरदेशीय, लिफाफे और तार के जरिए ही नाते–रिश्तेदारों, नौकरी, दफ्तर, मुकदमा नोटिस को जाना पहचाना। अब तस्वीर पूरी तरह बदल गई है। देश में संचार उपकरणों का व्यापक प्रसार हुआ है। आज भारतीयों के पास 130 करोड़ मोबाइल हैं जिसमें 30 करोड़ से अधिक स्मार्टफोन हैं। भारत विश्व में चीन के बाद दूसरा सबसे ज्यादा मोबाइल फोन इस्तेमाल करने वाला देश बन चुका है। भारत विश्व में दूसरा सबसे बड़ा दूरसंचार नेटवर्क है, दूसरा सबसे ज्यादा इंटरनेट उपयोगकर्ता है तथा पहला एप का सबसे तेजी से बढ़ता बाजार है। दूरसंचार क्रांति ने भारत के सामाजिक–आर्थिक जीवन पर गहरा असर डाला है। इसने बड़े पैमाने पर रोजगार दिया है और लोगों का रहन–सहन जड़ से बदल दिया है। आज अपना देश डिजिटल प्लेटफार्म पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। डिजिटल सेवाएं लोगों के जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी हैं। एक अरब से ज्यादा लोग भारत की डिजिटल सेवा की मुख्यधारा से जुड़ चुके हैं। इस साल 5जी कनेक्टिविटी की शुरूआत के साथ आने वाले वर्षों में डिजिटल सेवाओं का और विस्तार देखने को मिलेगा।

देश में इन वर्षों में हवाई अड्डों, सड़कों एवं रेल मार्गों का काफी विस्तार हुआ है। जब हम आजाद हुए तो देशभर में कुल 4 लाख कि.मी. से कम सड़कें ही बनी थीं, बाकी देश कच्ची पगडंडियों पर ही रेंग रहा था। लेकिन अभी लगभग 50 लाख कि.मी. रास्ते पक्की सड़कों में तब्दील हो चुके हैं। यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क है। आज भारत के पास विश्व में अमेरिका एवं चीन के बाद तीसरा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क मौजूद है। वर्ष 1951 में भारत में बिछी पटरियों की कुल लंबाई 64000 कि.मी. थी जो आज बढ़कर लगभग 1 लाख 20 हजार कि.मी. हो गई है। कई शहरों में मेट्रो ट्रेन की सुविधा लोगों को मिल रही है। अहमदाबाद–मुम्बई के बीच बुलेट ट्रेन की भी आधारशिला रखी जा चुकी है। कारों की संख्या बेतहाशा बढ़ी है और ऑटोमोबाइल उद्योग के क्षेत्र में हम दुनिया में तीसरा स्थान रखते हैं। देश में लोगों का जीवन–स्तर उन्नत हुआ है। घर–घर में मोटरसाइकिल, एयरकंडीशनर, कम्प्यूटर, टेलीविजन और अधिकांश जेबों में मोबाइल फोन पहुंच चुके हैं।

बिजली के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व प्रगति हुई है। पहले शहरी क्षेत्रों को भी कुछ ही घंटे बिजली मिल पाती थी, किंतु अब गांवों में भी 15–20 घंटे बिजली मिल रही है। नाभिकीय ऊर्जा, सौर ऊर्जा, परमाणु शक्ति एवं अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्रों में भारत आज विश्व के देशों में अग्रणी पंक्ति में खड़ा है। भारत आज पूरे विश्व में सौर क्रांति का नेतृत्व कर रहा है।

भारत विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया का एक जाना–पहचाना देश है। इन 75 वर्षों में भारत ने दुनिया को अपनी किसी न किसी वैज्ञानिक योग्यता से चौंकाया है। हरित क्रांति विज्ञान के दम पर ही संभव हुई। परमाणु के क्षेत्र में भी भारत दुनिया के विशेष देशों में शामिल हो गया है। रक्षा के क्षेत्र में भी अगर हम आज निश्चिंत बैठे हैं तो इसमें भी भारतीय विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत लगातार अपनी मिसाइल प्रणाली को दुरुस्त करता आ रहा है। अग्नि मिसाइलों का विकास भारत की शान है। डीएनए और फिंगर प्रिंटिंग के क्षेत्र में भारत का विकास आज आदर्श है। वह क्षण तो अतुलनीय था जब भारत का पहला चंद्रमा मिशन 22 अक्तूबर 2008 को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा से लॉन्च किया गया था। गगनयान कार्यक्रम के तहत सरकार द्वारा दो मानव रहित मिशन और एक मानवयुक्त मिशन को मंजूरी दी जा चुकी है। दवा व वैक्सीन के मामले में दुनिया को भारतीय विज्ञान से सबसे ज्यादा उम्मीदें हैं। हमने आजादी के 75वें वर्ष में जिस तरह टीकाकरण अभियान चलाया है उसे तो शायद ही कोई भूल सकता है।

1975 में भारत ने अपना पहला उपग्रह आर्यभट्ट अंतरिक्ष में भेजा जिसे रूसी रॉकेट के जरिए लांच किया गया था। किंतु वर्ष 2014 के मंगलयान अभियान ने अंतरिक्ष में भारत का परचम लहरा दिया। आज भारत दुनिया के दूसरे देशों के उपग्रह को अंतरिक्ष में भेजकर अरबों रुपए कमा रहा है। भारत ने वर्ष 2017 में स्वदेशी अंतरिक्ष यान में अपने तथा विभिन्न देशों के 104 उपग्रहों (जिनमें अमेरिका और फ्रांस जैसे विकसित देशों के उपग्रह भी शामिल थे) को एक साथ प्रक्षेपित कर दुनिया को अचंभित कर दिया है। ऐसी उपलब्धि अब तक अमेरिका भी हासिल नहीं कर सका है।

1947 में जब भारत आजाद हुआ, उस समय हमारे पास जो भी रक्षा उपकरण था वह द्वितीय विश्व युद्ध का अवशेष था–टैंक, आर्टिलियरी तोपखाना, हवाई जहाज, समुद्री जहाज सारे के सारे आउटडेटेड टेक्नॉलाजी के थे। अभी हमने रक्षा के हर क्षेत्र में बड़ी कामयाबी हासिल की है और इससे देश की ताकत काफी बढ़ी है। अभी भारत के पास विश्व की दूसरी सबसे बड़ी थलसेना, पांचवीं बड़ी वायुसेना तथा सातवीं बड़ी जलसेना है। भारत ने अनेक मिसाइलों का विकास करके देश

के प्रतिरक्षा तंत्र को काफी मजबूत किया है। बेशक भारत के सामरिक महाशक्ति बनने की दिशा में रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआडीओ) ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई। नवाचार को प्रोत्साहित कर इस संगठन ने रक्षा क्षेत्र में नए सूरज को चमकने का अवसर दिया।

देश में कम्प्यूटर क्रांति आई और विज्ञान–प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत ने आशातीत उन्नति की है तथा उसका विश्व में दबदबा बना है। जब–जब विकसित देशों ने हमें तकनीक देने से इंकार किया हमने उसे खुद विकसित किया। परमाणु शक्ति, क्रायोजेनिक इंजन और सुपर कम्प्यूटर इसके उदाहरण हैं। आजादी के समय अमेरिका और रूस जैसे देश परमाणु ऊर्जा का प्रयोग कर रहे थे। ऐसे में भारत ने आजादी का एक दशक पूरा करने से पहले ही इस क्षेत्र में दस्तक दे दी। वर्ष 1954 में ट्रांबे में परमाणु ऊर्जा संस्थान की स्थापना की गई बाद में इसे भाभा परमाणु रिसर्च सेंटर का नाम दिया गया। यहां काम कर रहे संयत्र परमाणु ऊर्जा उत्पादन से लेकर उसका शांतिपूर्ण प्रयोग तक सुनिश्चित करते हैं। जहांगीर भाभा ने पूरी दुनिया में भारत की प्रतिभा का परचम लहराया। विज्ञान के क्षेत्र में नए प्रयोगों के अलावा उन्होंने देश के युवाओं को विज्ञान से जोड़कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।

आजादी के बाद भारत में औद्योगिक विकास ने अपनी रफ्तार पकड़ी। देश में उद्योगों का जाल बिछ गया है। इन उद्योग–धंधों में न केवल उत्पादकता में वृद्धि हुई बल्कि गुणात्मक सुधार भी हुआ। कुछ उद्योग के मामले में भारत विश्व में अग्रणी है। सबसे बड़ी मात्रा में विदेशी पूंजी निवेश भारत में हुआ है। पूरी दुनिया भारत के आर्थिक विकास को एक प्रभावी उपलब्धि मानती है। जीएसटी के लागू होते ही भारतीय अर्थव्यवस्था विकसित देशों की तर्ज पर नियमित एवं व्यवस्थित हो गयी है। भारत को आज एक बड़ी आर्थिक और सामरिक ताकत के तौर पर देखा जा रहा है। 21वीं सदी को भारतीय अर्थव्यवस्था एवं भारतीय औद्योगिक विकास के रूप में देखा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आर्थिक दृष्टि से अमेरिका तथा चीन के बाद भारत सबसे शक्तिशाली देश है जिसका ज्यादातर श्रेय हमारे उद्योग–धंधों, नई तकनीक तथा कुशल श्रमिकों को जाता है। अनेक अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों पर भारतीयों का वर्चस्व बढ़ा है। उन्होंने अपनी सफलता के झंडे वहां गाड़ दिए हैं।

इन 75 वर्षों में भारत की अंतर्राष्ट्रीय साख बहुत बढ़ी है और दुनिया भारत की आवाज आदर के साथ सुनती है। अमेरिका, रूस, जापान, इजरायल, यूरोप के अलावा बड़ी संख्या में इस्लामिक अथवा मुस्लिम बहुल देश भारत के करीब आए हैं। 1962 की लड़ाई में लाचार–सी नजर आने वाली हमारी सेना आज चीन को ललकारने का आत्मविश्वास दे रही है। यद्यपि आज भी पाकिस्तान और चीन की ओर से खतरा यथावत कायम है परंतु देश की एकता और अखंडता के समक्ष हमारे शत्रु देशों द्वारा पेश की जानेवाली चुनौतियों के बावजूद आज भारत प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति कर रहा है।

तमाम कमियों के बावजूद भारत ने पिछले 75 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में काफी तरक्की की है। आज हर गांव–मोहल्ले में स्कूल उपलब्ध है। यदि हम प्राथमिक शिक्षा का विश्लेषण करें तो अपने देश में लगभग शत–प्रतिशत नामांकन दर है। यहां तक कि माध्यमिक कक्षाओं में भी नामांकन दर बेहतर हुई है। दिसंबर 2002 में संविधान में 86वां संशोधन किया गया और अनुच्छेद 21(अ) के तहत शिक्षा को मौलिक अधिकार बना दिया गया। इस मूल अधिकार के क्रियान्वयन के लिए वर्ष 2009 में बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम बनाया गया। एक अन्य उपलब्धि शिक्षा को लेकर लोगों की सोच में आया बदलाव है। अब आम से आम व्यक्ति भी यह सोच रखता है कि उसे अपने बच्चे को पढ़ाना–लिखाना है, कुछ नया और बेहतर सिखाना है, उसकी क्षमता बढ़ानी है और उसके कौशल का विकास करना है इत्यादि। इसके परिणाम अगले कुछ वर्षों में हमें निस्संदेह मिलेंगे। तभी विश्व मंच पर भारत की शैक्षणिक क्षमता का लोहा दुनिया फिर से मानने लगेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन की वकालत की गई है तथा भारत की शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाकर हमें अपने देश को विकसित देशों के समकक्ष खड़ा करने की प्रतिबद्धता जताई गई है। श्री अनुराग बेहर, प्रसिद्ध शिक्षा विशेषज्ञ ने ठीक ही लिखा है कि नई शिक्षा नीति प्रत्येक बच्चे की क्षमता को पहचान करने के साथ ही उसके विकास को प्रोत्साहित करती है, शिक्षा को लचीला बनाने पर जोर देती है, सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में निवेश को बढ़ावा देती है, उत्कृष्ट स्तर के शोध को आगे बढ़ाने और बच्चों को सशक्त करने की बात कहती है। हमारे शिक्षक सही अर्थों में बच्चों में संवैधानिक मूल्य विकसित करने में लगे हैं, इससे 'नए भारत' को लेकर उम्मीद कहीं ज्यादा बढ़ जाती है।

देश में शिक्षा के बड़े–बड़े संस्थान एवं विश्वविद्यालय खुल गए हैं। हमारे देश के शिक्षित–प्रशिक्षित युवा दुनिया भर में अपने ज्ञान एवं हुनर का परचम लहरा रहे हैं। पिछले 75 वर्षों में शिक्षा पर जो काम हुआ उसने तमाम कमियों के बावजूद कुछ बेहतर सूरत जरूर बनाई है। आज भारत में 600 से ज्यादा विश्वविद्यालय तथा 30 हजार से ज्यादा कॉलेज हैं जिनमें मेडिकल, इंजीनियरिंग कॉलेजों के अलावा आईआईएम जैसे संस्थान भी शामिल हैं।

स्वाधीनता के बाद हमें विरासत में कुछ ही मेडिकल कॉलेज, उपचार का प्रोटोकाल, कुछ पीएचसी और कुछ सीएचसी, मॉडर्न मेडिसिन की कार्यप्रणाली प्राप्त हुई थी। धीरे–धीरे हमारी जरूरतों के अनुरूप स्वास्थ्य प्रणाली विकसित की गयी। उस दौर में हम दवाओं के लिए दूसरे देशों पर निर्भर थे, लेकिन अब हमने दवाओं का निर्माण शुरू कर दिया है। आज हम दुनिया के अन्य देशों को भी दवाओं की आपूर्ति कर रहे हैं। वैक्सीन उत्पादन में भारत शीर्ष पर है। कोरोना महामारी के दौर में भारत ने न केवल अपने नागरिकों को वैक्सीन उपलब्ध कराई बल्कि दुनिया के अनेक देशों को भी वैक्सीन की आपूर्ति कराकर लाखों लोगों की जान

बचाई। कोरोना के दौर में स्वास्थ्य वैज्ञानिकों, चिकित्सकों ने स्वावलंबन के साथ संकल्प के बल से जिस तरह चुनौतियों का सामना किया वह पूरी दुनिया के लिए मिसाल है। इन 75 वर्षों में स्वास्थ्य सुविधा के लिए बड़े–बड़े अस्पताल खुले हैं, जहां कई अन्य देशों के मुकाबले सस्ते एवं बेहतर इलाज उपलब्ध हैं। स्वाधीनता के समय हमारे पास मात्र चार मेडिकल कॉलेज थे। आज देश में 600 से अधिक मेडिकल कालेज हैं। इनमें से ज्यादातर पिछले आठ वर्षों में खुले हैं। मोदी सरकार का संकल्प देश के हर जिले में मेडिकल कॉलेज खोलने का है। आज देश में कुल 19 एम्स संचालित हो रहे हैं और पांच पर काम चल रहा है। आज स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में नयी–नयी तकनीकों का इस्तेमाल हो रहा है जिससे देश के दूरदराज इलाकों तक लोगों को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा उपलब्ध हो रही है। इसका सुखद परिणाम बढ़ी हुई औसत आयु है।

स्वच्छ भारत मिशन जैसे कार्यक्रमों से समाज में जागरूकता आई है जिससे बीमारियां कम हो रही हैं और लोग अधिक सतर्क हो रहे हैं। देश में राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम आया जिससे अनेक तरह की बीमारियों की रोकथाम संभव हो सकी। मार्च 2014 में हम पोलियो मुक्त देश घोषित हो चुके हैं।

एक दौर था जब समुचित उपचार व स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव में बड़ी संख्या में गर्भवती महिलाओं की प्रसव के दौरान असमय मौत हो जाती थी। तरह–तरह के संक्रमण और बीमारियों के चलते जन्म के बाद शिशु भी मौत का शिकार हो जाते थे। जागरूकता का अभाव तो था ही पर्याप्त चिकित्सकीय संसाधन भी नहीं थे। अब स्थितियां बदली हैं। शिक्षा का स्तर बढ़ा है, जागरूकता आई है और आधी आबादी व शिशुओं के लिए सरकार ढेरों योजनाएं चला रही हैं। इसके परिणामस्वरूप शिशु एवं मातृ–मृत्यु दर घटी है। भारत में अपना पहला महीना पूरा करने से पहले वर्ष 1960 में प्रति हजार में जहां 165 बच्चे दम तोड़ देते थे अब उनकी संख्या घटकर 27 रह गयी है। इसे वर्ष 2030 तक 12 पर समेटने का लक्ष्य रखा गया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गवर्नेंस मॉडल ने समाज में महिलाओं की भूमिका को बढ़ाया है, उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ा है। जन–धन योजना से बड़ी संख्या में महिलाएं लाभान्वित हुईं। औपचारिक बैंकिंग सेवा प्रणाली से जुड़ाव वित्तीय समावेशन में क्रांतिकारी सिद्ध हुआ। जन–धन योजना में 56 प्रतिशत खाताधारक महिलाएं हैं। इस तरह बैंकिंग सेवाओं से वंचित 23 करोड़ महिलाएं बैंकों से जुड़ सकीं। इसके गुणात्मक प्रभाव भी प्रत्यक्ष दिखने लगे। आंकड़े यह कहानी खुद कहते हैं। स्टैंड अप इंडिया में महिलाओं की हिस्सेदारी 81 प्रतिशत, मुद्रा ऋण में 71 प्रतिशत, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना में 37 प्रतिशत और प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना में 27 प्रतिशत है। यह रुझान उत्साहजनक होने के साथ ही देश के लिए गौरव का भी विषय है। बेशक वित्तीय सशक्तिकरण के साथ महिलाएं अब अपने परिवारों और समुदायों में निर्णयकर्ता की भूमिका निभा रही हैं। आज 21वीं सदी के आत्मनिर्भर भारत की सक्षम और सशक्त नारी शक्ति हर क्षेत्र में अवसर पा रही हैं और नए भारत के निर्माण में अपना महत्तम योगदान दे रही है। एक महिला के सशक्तिकरण का अर्थ है पूरे परिवार और देश का सशक्तिकरण। मोदी सरकार इसी मंशा के साथ महिला केंद्रित नीतियों पर काम कर रही है।

हमने पर्यावरण के मोर्चे पर महत्वपूर्ण प्रगति की है, लेकिन हम काफी मुद्दों पर असफल भी रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण की भावना आज मुख्यधारा की भावना है। आज हर कोई पर्यावरण की रक्षा और जलवायु संकट को हल करने की आवश्यकता पर सहमत है। हाल ही में केंद्रीय ऊर्जा मंत्री श्री आर.के. सिंह ने संसद में बताया कि जलवायु परिवर्तन और उत्सर्जन कम करने के मुद्दे पर देश में एकमत है, जो विकसित देशों में भी नहीं है। इसका श्रेय सभी सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों को जाना चाहिए, जिन्होंने पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत की है। हमने पर्यावरण के हर पहलू से निपटने के लिए एक व्यापक कानूनी और संस्थागत ढांचा विकसित किया है चाहे वह वन हो, वन्य जीव हो, प्रदूषण हो या पानी और जमीन का संरक्षण हो। हम अपने वन क्षेत्र को बढ़ाने और वन्य जीवों की रक्षा करने में काफी हद तक सफल रहे हैं। आज हमारे देश में जंगलों का क्षेत्रफल 50 साल में सबसे अधिक है। इसी तरह बाघों की संख्या भी आजादी के बाद सबसे अधिक है। असल में, आज भारत इकलौता देश है जो बाघों को बचाने में सफल रहा है। लेकिन हमारे शहर, गांव, कृषि क्षेत्र, नदियों और समंदर की स्थिति ऐसी नहीं है। वायु प्रदूषण में तो हमें विश्व का सबसे प्रदूशित देश माना जाता है। नदियों की भी हालत खराब है। इनके तीन कारण हैं– बढ़ती आबादी, लगातार बढ़ती खपत और सिकुड़ते प्राकृतिक संसाधन। पिछले 75 वर्षों में हमारी जनसंख्या में चार गुना वृद्धि हुई है। हमारी प्रति व्यक्ति कृषि योग्य भूमि और मीठे पानी के संसाधन 60 प्रतिशत तक सिकुड़ गए हैं। हमारे उत्पादन और उपभोग प्रणालियों में मूलभूत परिवर्तन किए बिना भूमि, वायु और जल की क्षति जारी रहेगी जिसके स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था के लिए गंभीर परिणाम होंगे। हमें न केवल पारंपरिक मुद्दों (भूमि, जल और वायु) से निपटना है बल्कि जलवायु संकट की चुनौती का भी सामना करना है। हम यदि अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी और सामूहिक जिम्मेदारी निभाएं तो 21वीं सदी की पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। हमारे पास अक्षय ऊर्जा, सर्कुलर अर्थव्यवस्था और प्रकृति–आधारित सामाधानों के आधार पर सबसे उन्नत अर्थव्यवस्था बनाने का अवसर है। इससे रोजगार सृजित होंगे, पर्यावरण की रक्षा होगी और जलवायु संकट को कम करने में मदद मिलेगी।

'मेरा गांव, मेरी धरोहर' वास्तव में 'नेशनल मिशन ऑन कल्चरल मैपिंग' का एक हिस्सा है। इसका उद्देश्य देश भर में सांस्कृतिक संपत्ति और संसाधनों की तलाश करके उसे रिकॉर्ड करना है। इसमें 6.5 लाख गांवों को कवर करके यह पहल भारतीय सांस्कृतिक तकनीकों/परंपराओं को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में मदद करेगी। स्थानीय कलाकारों और उनके

संरक्षित कौशल और विरासत की रक्षा करेगी। इसका मूल लक्ष्य प्रत्येक चयनित गांव के लिए 'आभासी संग्रहालय' बनाना है।

आज डिजिटल गवर्नेंस का एक बेहतरीन इंफ्रास्ट्रक्चर भारत में है। जनधन, मोबाइल और आधार की त्रिशक्ति का देश के गरीब और मध्यम वर्ग को सबसे अधिक लाभ हुआ है। इंडस्ट्री 4.0 के लिए जरूरी कौशल तैयार करने के लिए आज विद्यालय के स्तर पर भी फोकस है। करीब 10 हजार अटल टिंकरिंग लैब में आज 75 लाख से अधिक छात्र–छात्राएं, इनोवेशन पर काम कर रहे हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी टेक्नोलॉजी को अत्यधिक महत्ता दी गई है। अटल इंक्यूबेशन सेंटर्स का एक बहुत बड़ा नेटवर्क देश में तैयार किया जा रहा है। इसी प्रकार, पीएम ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान यानी पीएम–दिशा देश में डिजिटल सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करने का एक अभियान चला रहा है। ई–प्रशासन से लेकर ई–कॉमर्स और आईटी आउटसोर्सिंग से लेकर दूरसंचार तक कामयाबी के अनेक उदाहरण मौजूद हैं।

इसके उलट कुछ ऐसी सच्चाई भी है, जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। भूख, कुपोषण, गरीबी, असमानता, बढ़ती आबादी, बेरोजगारी, किसानों की आत्महत्या, बिगड़ती कानून व्यवस्था, नक्सलवाद, आतंकवाद, जातिवाद, वंशवाद, साम्प्रदायिकता की समस्या से देश अभी भी पूर्णतः उबर नहीं पाया है। भारत में अकूत संपत्ति और दरिद्रता दोनों समान रूप से विद्यमान हैं। यदि विकास से समृद्धि बढ़ी है तो आर्थिक विषमता भी बढ़ती चली गई है। इस गैर–बराबरी के कारण आज देश की बड़ी आबादी का जीवन–स्तर बद से बदतर होता जा रहा है क्योंकि वे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं से लेकर घर, बिजली–पानी, सैनिटेशन आदि सुविधाओं का भार उठा पाने में समर्थ नहीं हैं। दलित एवं आदिवासी समुदाय आज भी हाशिए पर रहने के लिए अभिशप्त है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आय, संपत्ति आदि मामलों में ये तबके बेहद पीछे हैं। देश की आबादी एवं अर्थव्यवस्था में इनका बहुत बड़ा हिस्सा है, उन्हें पीछे रखकर विकास और समृद्धि का सपना साकार नहीं हो सकता है। यह स्थिति हर हाल में बदलनी चाहिए। यह बेहद जरूरी है कि देश के सर्वाधिक वंचित तबकों तक विकास और कल्याणकारी योजनाओं का समुचित लाभ तुरंत पहुंचाने के ठोस प्रयास किए जाएं। खैरात बांटने के बजाय सड़कों, स्कूलों, अस्पतालों, बिजली, पेयजल की सुविधाएं उपलब्ध कराने में निवेश किया जाना बेहतर विकल्प है। इस रास्ते को अपनाने के बाद ही अमेरिका और पश्चिमी यूरोप के विकसित देश गरीबी हटाने में सफल हुए हैं। देश की खुशहाली, प्रगति, औद्योगिक विकास, आर्थिक उन्नति को बढ़ती हुई जनसंख्या रूपी सुरसा का मुख निगल जाता है। बढ़ती आबादी से सामाजिक–आर्थिक दिक्कतें बढ़ी हैं। आज हम अधिक जनसंख्या के कारण स्वच्छ पर्यावरण के लिए तरस रहे हैं। बढ़ती जनसंख्या पर काबू पाने के लिए जनसंख्या नियंत्रण की बेहतर नीति बनाना जरूरी है। जाति, धर्म, लिंग, क्षेत्र एवं भाषा के विभेदों को पाटना अभी बाकी है।

सभी को गुणवत्तापरक किफायती शिक्षा और स्वास्थ्य एक राष्ट्र के तौर पर हमारा लक्ष्य होना चाहिए जिसमें सरकार और निजी क्षेत्र सहित सभी अंशभागियों की सहभागिता जरूरी होगी। इसमें ग्रामीण भारत को पीछे नहीं छोड़ा जा सकता। ग्रामीण अवसंरचना को तत्परता से तेजी प्रदान कर उसे देश के व्यापक विकास से जोड़ा जाना चाहिए। शिक्षा में मातृभाषा उसे समावेशी और समतामूलक बनाएगी। इससे शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति आएगी।

लोभ के वशीभूत होकर मानव ने पर्यावरण को भारी क्षति पहुंचाई है। आज जलवायु परिवर्तन एक वास्तविक वैश्विक खतरा है। इस दिशा में हमें अपनी सामूहिक संकल्पशक्ति के साथ जुटना होगा। नदी, पर्वत, वृक्षों, ग्रह और नक्षत्रों जैसे प्राकृतिक अवयवों में देवत्व की दिव्यता देखना हमारे संस्कार रहे हैं, जिनका वर्णन हमारे ग्रंथों में है। हमें अपने उन्हीं संस्कारों को खोजना है और भावी पीढ़ियों की सुरक्षा तथा प्रकृति के संरक्षण के लिए उनसे कुछ पाठ सीखने हैं। एक उज्ज्वल भविष्य के लिए हमें अपनी संस्कृति और प्रकृति को संरक्षित रखना होगा।

आजादी के स्वर्णिम वर्ष में सहकारिता को शिखर पर ले जाने का लक्ष्य सामने रखकर प्रधानमंत्रीजी ने देश में पहली बार सहकारिता मंत्रालय का गठन किया। सहकार से समृद्धि के मंत्र को ध्यान में रखकर गठित यह मंत्रालय एक सच्चे जनभागीदारी आधारित आंदोलन को सहायता देगा।

देश को आत्मनिर्भर बनाने के लक्ष्य की पूर्ति तभी हो सकती है जब राज्य सरकारें केन्द्र के साथ मिलकर इस लक्ष्य को प्राथमिकता के आधार पर पाने के लिए सक्रिय हों। यह सही है कि पिछले कुछ वर्षों से राज्य सरकारें विभिन्न क्षेत्रों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा कर रही हैं लेकिन इस पर और काम किए जाने की आवश्यकता है। राज्य सरकारें और केंद्र शासित प्रदेशों को एक–दूसरे की योजनाओं को अपनाने और उनसे सीख लेने का काम करना चाहिए जो प्रभावी सिद्ध हुई हैं अथवा जिनसे आर्थिक विकास एवं जनकल्याण को बल मिला है। जब भारत आजादी का स्वर्णिम वर्ष यानी 100वां वर्ष मनाएगा तब आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य पूरा हो, इस पर अटल और अडिग होकर काम करना होगा। जब भारत एक बार फिर आत्मनिर्भर बनेगा तो वह विश्व को नई दिशा भी दिखाएगा। भारत की उपलब्धियां सिर्फ हमारी नहीं हैं बल्कि पूरी दुनिया, पूरी मानवता के लिए उम्मीद जगाने वाली हैं, आत्मनिर्भरता से ओतप्रोत हमारी विकास यात्रा पूरी दुनिया की विकास यात्रा को गति देने वाली हैं।

आजादी के 100 वर्ष पूरे होने तक भारत ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनेगा, इसके रोड मैप पर तेजी से काम चल रहा है। इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या बढ़ाना, गैस आधारित अर्थव्यवस्था, देशभर में सीएनजी और पीएनजी का नेटवर्क, पेट्रोल में 20 प्रतिशत एथेनॉल मिश्रण निर्धारित लक्ष्य से पहले हासिल करना, रेलवे के शत प्रतिशत विद्युतीकरण के साथ 2070 तक नेट जीरो कार्बन उत्सर्जक बनने का लक्ष्य उसी

कड़ी का हिस्सा है। भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा में 450 गीगावाट का लक्ष्य रखा है जिसमें 100 गीगावाट का लक्ष्य समय से पहले हासिल कर लिया है। एक सन, एक ग्रिड के विजन के साथ अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन में भारत अगुआ देश है। इसी तरह ग्रीन हाइड्रोजन नेशनल मिशन की न सिर्फ घोषणा की गई बल्कि उस दिशा में काम शुरु भी कर दिया गया है।

भारत की नियति दुनिया की सर्वश्रेष्ठ ताकत बनने की है। इस महान यज्ञ में 138 करोड़ भारतीय 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के मंत्र के साथ अपना योगदान देकर भारत को सफलता का पर्याय बनने में मदद कर सकते हैं जहां न निर्धनता हो, न निरक्षता और न भय और न ही असुरक्षा। निस्संदेह, अगर हम मिल–जुलकर प्रयास करें तो, कोई भी काम असंभव नहीं है। आखिर कब तक हम विकासशील देश ही कहलाते रहेंगे? हमें विकास को पहला एजेंडा बनाकर विकसित देश बनने की ओर अग्रसर होना चाहिए तथा विकास में सभी जातियों, धर्मों, समुदायों और वर्ग के लोगों की समान भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए। निश्चित रूप से इन 75 वर्षों में रोटी, कपड़ा, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति हुई है लेकिन बुनियादी ढ़ांचे के विकास, गरीबी उन्मूलन, रोजगार जैसी बुनियादी जरूरतों पर अभी बहुत काम करना बाकी है। हमारी प्रगति की गति पर विवाद हो सकता है, पर प्रगति पर नहीं। इन वर्षों में हमने बहुत कुछ पाया है, पर उससे कहीं अधिक पाना अभी शेष है।

बेशक भारतीय सभ्यता दुनिया में अनोखी है। यहां हर धर्म, जाति और क्षेत्र के लोगों की कुछ मामलों में अपनी विशिष्ट पहचान है। यहां हर धर्म के लोग बड़े ही प्रेम के साथ रहते हैं और हर त्यौहार को मिलजुल कर मानते हैं। यहां विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोली जाती है। जब किसी पर मुसीबत आती है तो मिलजुल कर उसका हल निकालते है। इसका एक नया उदाहरण हमें कोरोना जैसी महामारी में देखने को मिला है। ऐसी विश्वव्यापी समस्या में भी हर एक भारतीय ने एक दूसरे की मदद कर, देश को दूसरे देशों की नजरों में और भी ऊँचा कर दिया है। भगवान का अंश होने के नाते हम अपने मनुष्यत्व एवं देवत्व की रक्षा करें और समग्र उन्नति करें। आत्मविश्वासी एवं कर्मयोगी बनें। यही कल्याण का सनातन पथ है– 'एश एव हि लोकानां शिवः पन्थाः सनातनः।' श्रीमद्भागवत में देवताओं ने भी भारत भू की प्रशंसा की है– 'अहो! जिन जीवों ने भारतवर्ष में जन्म लिया है वे परम पुण्यवान हैं। इस परम सौभाग्य के लिए तो हम भी तरसते हैं। स्वर्ग, ब्रम्हादि लोकों की अपेक्षा भारत भूमि में थोड़ी आयु वाले होकर जन्म लेना अच्छा है।'

ज्ञान–विज्ञान और समृद्धि से सजा, शौर्य–आध्यात्म और कलाकारी से छलकता गौरवशाली भारत को जब अंग्रेजी हुकूमत ने बेड़ियां पहनाई, तब देश के लिए मर मिटने वाले दीवानों ने आजादी की अलग जगाई। महात्मा गांधी जी ने अनोखा सत्याग्रह छेड़ा। अनगिनत बलिदानों के बाद विदेशियों ने भारत छोड़ा। फिर लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने लोहे–सा अखंड भारत बनाया। कभी सपेरों का देश कहा जाने वाला भारत पहले प्रयास में ही मंगल ग्रह तक पहुंचा। 'मेक इन इंडिया' के इन तीन शब्दों ने दुनिया में देश का नाम ऊंचा कर दिया। आज हर घर में बिजली है, हर हाथ में मोबाइल फोन है, हर जेब में डिजिटल पहचान, हर खाते में डायरेक्ट बेनिफिट, हर रसोई में स्वच्छ ईंधन और हर आवास में शौचालय की सुविधा हमें सम्मान का जीवन दे रही है। स्वच्छता और योग नए भारत के संस्कार बन चुके हैं। वसुधैव कुटुंबकम की भावना से पूरा विश्व हमारा परिवार एक सोच बन चुकी है। अंग्रेज कहकर गए थे कि हमारे जाने के बाद भारत बिखर जाएगा लेकिन सच्चाई यह है कि भारत विश्व के सबसे विशाल लोकतंत्र के रूप में निखर गया है। आज भारत एक है, अखंड है और सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है। आत्मनिर्भर भारत एक प्रकार से शब्द नहीं, 138 करोड़ भारतीयों का मंत्र बन गया है।

बेशक बीते दशकों में देश के जन–जन ने अपने काम से भारत की सशक्त छवि बनाई है। इस कारण आजादी के अमृतकाल में अर्थात आने वाले 25 साल में अपेक्षाएं और बढ़ गई हैं क्योंकि आज भारत का हर नागरिक स्वयं में सफलता की कहानी भी है और उसका वाहक भी। जब किसी देश के नागरिक सबका प्रयास की भावना के साथ, जनभागीदारी की भावना के साथ राष्ट्रीय संकल्पों को सिद्ध करने में जुट जाते हैं तो उन्हें दुनिया की बड़ी–बड़ी शक्तियों का भी साथ मिलने लग जाता है। आज दुनिया की बड़ी शक्तियां भारत के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती है।

आजादी के 75 वर्षों के बाद जिस शिखर तक हमें पहुंचना चाहिए था, वहां हम नहीं पहुंच पाए हैं। आजादी के स्वर्णिम काल में हमें पूर्णता तक जाना है। शत–प्रतिशत गांवों में सड़के हों, शत–प्रतिशत परिवारों के बैंक अकाउंट हों, शत–प्रतिशत पात्र लाभार्थियों के पास आयुष्मान भारत का कार्ड हो, शत–प्रतिशत पात्र व्यक्तियों के पास गैस, बिजली कनेक्शन हो। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक कार्यक्रमों में कहा था, अमृतकाल का ये समय, सोते हुए सपने देखने का नहीं बल्कि जागृत होकर अपने संकल्प पूरे करने का है। आने वाले 25 साल, परिश्रम की पराकाष्ठा, त्याग, तप–तपस्या के 25 वर्ष हैं। सैकड़ों वर्षों की गुलामी में हमारे समाज ने जो गंवाया है, ये 25 वर्ष का कालखंड, उसे दोबारा प्राप्त करने का है। इसलिए आजादी के इस अमृत महोत्सव में हमारा ध्यान भविष्य पर ही केंद्रित होना चाहिए। उम्मीद है कि सौवें साल तक पहुंचने से पहले हम चुनौतियों से निपटने में पूर्णतः सफल हो चुके होंगे।

पर्यावरण संरक्षण में ग्रीन जॉब्स

डॉ. शशि बाला*

ग्रीन जॉब्स कार्य करने की ऐसी शैली है जिसमें पर्यावरण की सुरक्षा का ध्यान में रखते हुए वस्तुओं का उत्पादन तथा उपयोग किया जाता है। भारतवर्ष में प्राचीन काल से वनों को भी देवता स्वरूप ही माना गया है। हम अपने ऋषियों और महात्माओं की बात करें तो वे जनता को हमेशा वनों के प्रति जागरूक करते रहे। पर्यावरण के बिना जीवन संभव नहीं है। इसलिए इसको सुरक्षित रखने के लिए हम सभी को प्रयासरत रहना होगा। इसी कड़ी में हम बात करें तो ग्रीन जॉब्स एक नया शब्द है जो आज हमारे श्रम बाज़ार का हिस्सा बन चुका है।

18वीं सदी में औद्योगिक क्रांति आई, उस समय श्रम शक्ति में भागीदारी दर दुनिया भर में तेजी से बढ़ी लेकिन यह औद्योगिक क्रांति पूरी तरह से कुछ देशों के स्वार्थ व लालच से ओत–प्रोत थी। औद्योगिक विकास की रफ्तार को यदि हम भारत में देखें तो यह 20वीं शताब्दी के अंत में हुई। इस समय तक पश्चिम देशों की विकास की रफ़्तार या तो कम हो चुकी थी या स्थिर थी। औद्योगिक विकास की रफ्तार भारत और चीन जैसे देशों में अब अपने चरम की तरफ है। औद्योगिक विकास का सीधा संबंध ऊर्जा स्रोतों से होता है। अभी तक जो भी ऊर्जा स्रोत थे, वह सभी तेल और कोयले पर निर्भर करते थे। इस कारण न केवल कार्बन अपितु और भी बहुत–सी गैसों ने हमारी पृथ्वी एवं पर्यावरण को अत्यधिक नुकसान पहुंचाया। जैसे ही औद्योगिक विकास भारत, चीन और ब्राजील जैसे देशों में बढ़ने लगा तभी विकसित पश्चिमी देशों को इन पर्यावरणीय समस्याओं की याद आई। यह भी अजीब संयोग है कि जब भी इन पश्चिमी देशों को कुछ दिखने लगता है तभी यूनाइटेड नेशन की संस्थाएं भी जागरूक हो जाती हैं। प्रकृति का विषय एक अहम मानवीय विषय है इसलिए इसे तर्क–वितर्क में उलझाने से कोई फायदा नहीं है।

भारत ने सभी मंचों से जलवायु परिवर्तन पर कार्य किया और अथक प्रयास किया कि वह जल्द से जल्द कार्बन उत्सर्जन को शून्य कर सके। कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए भारत ने बहुत से क्षेत्रों में प्रयास किया है जिनमें सोलर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, टाईडल ऊर्जा, हाइड्रो ऊर्जा उत्पन्न करना महत्वपूर्ण है। इन सभी ऊर्जा के क्षेत्रों में न केवल ग्रीन जॉब्स में बढ़ोतरी हुई है, अपितु यह आने वाले दशकों में रोजगार के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले हैं। इनमें छतों या अन्य क्षेत्रों जैसे जमीन पर लगे पैनलों को इकट्ठा करना तथा स्थापित करना सौर ऊर्जा फोटोबोल्टिक इंस्टलर के कार्य हैं जिनके लिए आने वाले समय में कुशल कारीगरों की आवश्यकता बढ़ने वाली है।

कच्चे तेल के लिए भारत की सबसे ज्यादा निर्भरता खाड़ी के देशों पर है, इससे न केवल हमारे राजस्व पर विपरीत प्रभाव पड़ता है अपितु हमारे वातावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। हमारे देश में गन्ने का उत्पादन प्रचुर मात्रा में होता है। गन्ने से इथेनॉल का उत्पादन भी होता है, इथेनॉल को व्हीकल में इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके लिए हमारी सरकार तथा वैज्ञानिक कार्यरत हैं। अभी इसका 20 प्रतिशत ही पेट्रोल में मिक्स करके इस्तेमाल हो रहा है। यदि इस प्रकार के इंजन तैयार हो सकें जो 100 प्रतिशत इथेनॉल पर चलें तो यह वातावरण से कार्बन तथा सल्फर जैसी घातक गैसों को समाप्त करने में सहायक होगा। हमारी 60 प्रतिशत जनता गाँवों में अपने खेतों पर कार्यरत है। उनकी आय में इससे बहुत बड़ा इजाफा होगा। इसके लिए कृषि विशेषज्ञों की आवश्यकता होगी जिससे हम अधिक से अधिक कृषि उत्पादन बढ़ा सके। कुछ अहम सैक्टर हैं जहां पर अधिक हरित रोजगार के अवसर दिखाई दे रहे है। उनमें महत्वपूर्ण क्षेत्र कृषि, वानिकी, क्लाइमेट रिस्क ऊर्जा, उत्पादन, निर्माण कार्य, सेवाएँ इत्यादि हैं।

कृषि के क्षेत्र की बात करें तो इसमें ग्रीन जॉब का शत–प्रतिशत बढ़ना तय है। किसानों को अपनी धरती की उर्वरकता से बुवाई तक नई तकनीक की आवश्यकता है। इसके लिए न केवल रिसर्च की आवश्यकता है अपितु ग्रीन कौशल की भी आवश्यकता है। मौसम वैज्ञानिकों की मौसम के बारे में दी गयी जानकारी किसानों के लिए किसी वरदान से कम नहीं होती है। कृषि तकनीशियनों की बात करें तो इनकी अत्यंत आवश्यकता है क्योंकि ये पशुपालन, सिंचाई प्रणाली, मृदा संरक्षण, वनस्पति पालन, कृषि यांत्रिकरण मशीनों और बिजली का उपयोग, मिट्टी के अनुसार कीटनाशक का प्रयोग, उत्पादन की मैपिंग और बीज तथा उर्वरक की जानकारी किसानो को दे सकते हैं।

वानिकी में अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना तथा पेड़ों को सुरक्षित रखना सिखाया जाता है। इस वर्ग की नौकरियों से न केवल हम प्रकृति के करीब रह सकेंगे अपितु उसको सुरक्षित रखने में गर्व भी महसूस कर सकेंगे। धरा को सुरक्षित रखना है तो अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे, और अधिक से अधिक लोगों को इस मुहिम से जुड़ना होगा।

*फेलो, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

राष्ट्रीय सोलर मिशन अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में कार्य कर रही है। इस मिशन का उद्देश्य अक्षय ऊर्जा को बढ़ाना व लाखों रोजगार का सृजन करना भी हैं। ऊर्जा के अन्य अक्षय स्रोतों में पवन ऊर्जा भी महत्वपूर्ण हैं। इन ऊर्जा स्रोतों के उत्पादन के लिए हमें तकनीशियन, इंजीनियर और मैनेजर की काफी आवश्यकता होगी।

निर्माण कार्य में भी आने वाले समय में विशषज्ञों का ध्यान इस ओर जाएगा कि किस प्रकार इमारतों के निर्माण में कम से कम ऊर्जा की खपत करें। इस कार्य में ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफ़िशियंसी कार्य करती है। एक ग्रीन हाउस इमारत के निर्माण में इस प्रकार की डिज़ाइन होती है जिससे अक्षय साधनों का प्रयोग अधिक से अधिक हो सके। ऐसे ग्रीन इमारतों का निर्माण इस क्षेत्र में एनर्जी इंजीनियरिंग और ग्रीन आर्किटेक्टरल स्किल तथा ऊर्जा के उपयोग के बारे में जानकारी के बिना संभव नहीं है।

उत्पादन करने वाली इकाइयां प्रदूषण फैलाने का सबसे बड़ा कारण हैं। इनमें इस्तेमाल होने वाले पदार्थ से लेकर इनके द्वारा बनाई गयी वस्तुएं ज्यादातर ईको फ्रेंडली नहीं होती हैं। ऐसे में ग्रीन तकनीक से सहारा लेकर ईको– फ्रेंडली उत्पादों का उत्पादन बढ़ाना है। इस तरह की टेक्नोलॉजी बनाने के लिए बायोलॉजी, रसायन शास्त्र तथा इंजीनियरिंग तकनीकों का इस्तेमाल किया जा सकता है जिससे ईको फ्रेंडली उत्पादों का उत्पादन हो सके। पर्यावरण संरक्षण के लिए कई क्षेत्रों में एनर्जी इफिशिएंट तकनीक और प्रणालियों का प्रयोग किया जा रहा है। ऐसे में इनकी मॉनिटरिंग और ऑडिट के लिए एनर्जी ऑडिटरों की मांग बढ़ रही है। एनर्जी ऑडिटरों को ऐसी तकनीकों तथा प्रणालियों की मॉनिटरिंग और ऑडिट करके रिपोर्ट बनानी होती है। इस रिपोर्ट के आधार पर ही इन तकनीकों में मौजूद खामियों को दूर किया जाता है।

भारत को अपनी राष्ट्रीय उत्पादकता को बनाए रखने के साथ–साथ 2070 तक कार्बन तटस्थता (नेट जीरो/जीरो इमीशन) के लक्ष्य को प्राप्त करना है। इसके लिए भारत को बहुत अधिक निवेश की आवश्यकता है जिससे उसकी सभी मैनुफैक्चरिंग यूनिटें ग्रीन तकनीक के अनुरूप कार्य कर सकें। यह बदलाव का समय है। इसी बदलाव के समय में ग्रीन जॉब्स को बढ़ाना सुनिश्चित करना होगा। पर्यावरण की शिक्षा को सरकार ने विद्यालय पाठ्यक्रम में शामिल किया है। ग्रीन जॉब्स अभी प्रारंभिक दौर में हैं, इसलिए इस क्षेत्र में ट्रेनिंग की विशेष आवश्यकता पड़ेगी ताकि आने वाले समय में ज्यादा विद्यार्थियों का रुझान इस ओर बढ़ सके।

अपने वातावरण को सुरक्षित रखने के लिए हम सभी को पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए। हमें निजी स्तर पर कोशिश करनी चाहिए कि हम इस तरह के कार्य करें जिससे कि पर्यावरण को बचाया जा सके। हमें अपने घर, कार्यस्थल एवं अन्य स्थानों पर पानी और बिजली का बेवजह उपयोग करने से बचना चाहिए।

रिसर्च रोजर्स के कथनानुसार "अगर हमें पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार लाना है तो केवल एक ही तरीका है, सबको शामिल करना"। पर्यावरण को स्वच्छ व सुंदर बनाने के लिए हम सभी को अनवरत एवं अथक अथक प्रयास करने होंगे और हमारे ये प्रयास तभी सार्थक होंगे जब हम सभी मिलकर पर्यावरण के प्रति जागरूक तथा उत्तरदायी होंगे। हम सभी को अपनी कार्यशैली में इस प्रकार से परिवर्तन करना है, जिससे कि पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सके। जय हिन्द!

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

व्हीलचेयर पर उदास सी जिंदगी

मंजू सिह*

असहाय सी, लाचार सी, आसान नहीं थी जिंदगी,
व्हीलचेयर पर शिथिल, उदास सी बैठी थी जिंदगी।

समय रेत सा निकल रहा था, ना टूटा था आत्मविश्वास,
हर दिन, हर दिशा प्रयास करती, भागती थीं उम्मीदें,
रोजमर्रा के कामों में थी, दूसरों पर थी आश्रित,
कष्ट था, अपमान था, अंधेरे से भरी थी उम्मीदें,
ना था आसान फिर भी, संघर्षों से तराश रही थी
व्हीलचेयर पर शिथिल, उदास सी बैठी थी जिंदगी।

जीवन के बदलते पड़ावों में, घिर रहा था वक्त नया,
फिर भी ना जाने, कौन सी थी उम्मीदें लगीं,
लगता ना–उम्मीदी भरे, अंधेरे में से कोई किरण पड़े,
हाथ पकड़ खींचे मेरा, मैं पंख लगा उड़ जाऊं,
इसी हौसले के साथ, औरों को भी राह दिखाऊं,
अपने इन पांवों पर, काश लौट आती जिंदगी,
व्हीलचेयर पर शिथिल, उदास सी बैठी थी जिंदगी।

*कंप्यूटर ऑपरेटर, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

भारत और रूस की चिरस्थायी मित्रता

बीरेंद्र सिंह रावत*

ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे, तोड़ेंगे दम मगर तेरा साथ ना छोडेंगे..... भारतीय सिनेमा की सफलतम फिल्मों में से एक 'शोले' में जय एवं वीरू पर फिल्माए गए इस गाने के बोल भारत–रूस दोस्ती पर बिल्कुल फिट बैठते हैं। आज जब देश की आजादी के 75वें वर्ष को देशभर में 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तौर पर मनाया जा रहा है, भारत–रूस दोस्ती को भी 75 साल हो गए हैं। भारत और रूस की 'दोस्ती' की आधिकारिक नींव आज से 75 साल पहले 13 अप्रैल 1947 को पड़ी थी जब भारत और सोवियत संघ ने क्रमशः दिल्ली और मॉस्को में दूतावास खोलने का ऐलान किया था। इन 75 सालों में कई ऐसे मौके आए जब भारत ने रूस के साथ दोस्ती निभाई और कई ऐसे भी मौके आए जब रूस ने भारत के साथ कंधे से कंधे मिलाकर दोस्ती का फर्ज निभाया। दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के 75वें वर्ष के अवसर पर 'रशिया डाइजेस्ट' पत्रिका से बातचीत में भारत में रूस के राजदूत डेनिस अलीपोव ने कहा है कि *उनका देश भारत के साथ समान व सम्मानजनक संबंधों को बहुत महत्व देता है और दोनों रणनीतिक साझीदारों के बीच बहुआयामी सहयोग दुनिया के सबसे विस्तृत सहयोगों में से एक है।* उन्होंने यह भी कहा कि मुख्य मुद्दों पर दोनों देशों का रुख समान है या काफी हद तक मेल खाता है। दोनों देशों के बीच आपसी सम्मान की इस भावना के चलते ही यह दोस्ती आपसी रिश्तों में परिवर्तित होती जान पड़ती है। किसी दार्शनिक ने क्या खूब लिखा है कि 'वास्तविक मित्रता के लिए कोई शॉर्टकट नहीं हैं। रिश्ते समय के साथ बनते हैं।' निस्संदेह, हर संकट के समय एक दूसरे का साथ देने वाले भारत और रूस की दोस्ती समय बीतने के साथ चिरस्थायी बनती जा रही है।

आज रूस–यूक्रेन के बीच युद्ध चल रहा है, ऐसे में जहां लगभग पूरी दुनिया ने रूस से मुंह मोड़ लिया है, भारत ने दोस्ती निभाते हुए रूस के साथ अपने संबंध बनाये रखे हैं। इसी क्रम में भारत ने 24 फरवरी 2022 को यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के साथ शुरू हुए रूस–यूक्रेन युद्ध में अभूतपूर्व तटस्थता बना रखी है। यूक्रेन के खिलाफ रूसी आक्रामकता को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में जब रूस के खिलाफ निंदा प्रस्ताव लाया गया था, तो भारत ने खुद को वोटिंग से दूर कर लिया था और जब संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) में भी रूस के खिलाफ यूक्रेन से बिना शर्त सेना वापस बुलाने को लेकर प्रस्ताव पेश किया गया, तब भी भारत वोटिंग से दूर ही रहा। इस प्रकार भारत ने मतदान में भाग नहीं लेकर गुटनिरपेक्षता की अपनी परंपरागत नीति कायम रखी परंतु अनेक पश्चिमी देशों द्वारा भारत की तटस्थता को रूस का साथ माना जा रहा है। भारत कभी भी हिंसा या युद्ध का पक्षधर नहीं रहा है, ऐसे में भारत ने युद्ध का समर्थन नहीं किया है, लेकिन युद्ध में हताहत दोनों देशों के लोगों की मदद के लिए भारत ने हाथ बढ़ाया है। इस प्रकार भारत ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि उसने हर पक्ष के साथ रहने की नीति को अपनाया है। भारत ने साफ किया है कि वह सभी पक्षों के वैध सुरक्षा हितों को ध्यान में रखते हुए संघर्ष का शांतिपूर्ण समाधान चाहता है। यूक्रेन का हित उसकी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता है, जबकि रूस चाहता है कि यूक्रेन और सोवियत संघ के विघटन के बाद के अन्य गणराज्यों को नाटो में शामिल होने की अनुमति नहीं दी जाए। यह यूक्रेन की स्वतंत्रता को कमजोर कर सकता है, लेकिन शायद यह रूस के मुख्य सुरक्षा हित की गारंटी दे सकता है। भारत ने यह कठिन फैसला इतिहास से सीख लेते हुए और समकालीन वैश्विक व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए लिया है। रूसी हमले के बाद पश्चिम देशों के नेता कह रहे हैं कि यूक्रेन का 'उत्तर अटालांटिक संधि संगठन' (North Atlantic Treaty Orgnization or NATO) यानी नैटो में शामिल होना उनके एजेंडे में नहीं है। अगर ऐसा है तो साल 2008 में जार्जिया और यूक्रेन को नैटो में शामिल करने की घोषणा किसलिए की गई थी? नैटो की 'ओपन डोर पॉलिसी' की बात क्यों की जा रही थी। वर्ष 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद 14 देशों को नाटो में शामिल किया गया है। इन 14 देशों में तीन देश लाटविया, लिथुआनिया और एस्टोनिया तो पूर्व सोवियत संघ के गणराज्य थे तथा 07 अन्य देश शीत युद्ध के दौरान सोवियत संघ के नेतृत्व वाले वारसा संधि संगठन के अहम सदस्य (अल्बानिया, बुल्गारिया, हंगरी, पोलैंड, रोमानिया)/अहम सदस्य चेकोस्लोवाकिया के भाग (चेक गणराज्य एवं स्लोवाकिया) थे। समय की विडम्बना देखिए कि गुट निरपेक्ष आंदोलन, जिसका जिक्र आगे किया गया है, के संस्थापक सदस्यों में से एक प्रमुख सदस्य युगोस्लाविया के विघटन के बाद उसके चार गणराज्य क्रोशिया, मोंटेनेग्रो, नार्थ मैसेडोनिया और स्लोवेनिया भी नैटो में शामिल हो चुके हैं।

रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध ने पूरी दुनिया को एक बार पुनः वैचारिक रूप से दो हिस्सों में बांट दिया है। विश्व के द्विधर्वीय, बहुधुर्वीय, एकधुर्वीय और पुनः कुछ–कुछ द्विधर्वीय बनने का कालक्रम इस प्रकार है। सितंबर 1939 से अगस्त

* *वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा*

1945 तक चले द्वितीय विश्व युद्ध में एक ओर इंग्लैंड, जापान, संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ, फ्रांस और कुछ हद तक चीन आदि देश थे तो दूसरी ओर जर्मनी, इटली और जापान आदि देश थे। इनमें संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ, इंग्लैंड आदि का साथ देने वाले देश मित्र देश कहलाए तो जर्मनी, इटली व जापान की ओर से लड़ने वाले देशों को धुरी राष्ट्र कहा गया। 1945 में मित्र राष्ट्रों के हाथों धुरी राष्ट्रों की पराजय के साथ छह साल तक चला द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो गया। युद्ध के अंतिम चरण में अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा और नागासाकी शहरों पर नाभिकीय बम गिराये। इस युद्ध में 10 करोड़ से भी ज्यादा सैनिकों ने हिस्सा लिया, 50 मिलियन लोग (दुनिया की आबादी का लगभग 3 प्रतिशत) मारे गए थे और इसने दीर्घकालिक प्रभाव छोड़े। लेकिन इस सबसे भी हमारे सभ्य समाज ने कुछ नहीं सीखा। संयुक्त राज्य अमेरिका अपनी आर्थिक संपन्नता और सैन्य शक्ति के कारण निस्संदेह इस युद्ध में विजय का श्रेय लेने वाला बना। यह भी महसूस किया जाने लगा कि युद्ध के बाद भी विश्व में शांति कायम रखने के लिए अमेरिका की सैन्य शक्ति और नेतृत्व की आवश्यकता होगी। इसमें आश्चर्य नहीं है कि ब्रिटेन, फ्रांस और दूसरे यूरोपीय देश आर्थिक भरपाई एवं सैन्य सुरक्षा के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका पर निर्भर हो गए। युद्ध में विजय के लिए महत्वपूर्ण योगदान देने के कारण सोवियत संघ को भी कम नहीं आंका जा सकता था। अतः इस देश ने भी यूरोपीय मामलों में समान दावेदारी पेश की। इसके परिणामस्वरूप और दोनों देशों की विचारधाराओं में अंतर होने के कारण अमेरिका और सोवियत संघ के बीच यूरोप की शांति एवं स्थायित्व के लिए जोरदार मतभेद पैदा हो गए। अमेरिका ने सरकार के प्रारूप के लिए प्रजातंत्र और मुक्त व्यापार को बढ़ावा देने पर जोर दिया। दूसरी ओर, सोवियत संघ ने साम्यवादी एक दलीय शासन और राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था में विश्वास किया एवं उस पर बल दिया। इस प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व का द्विधर्वीय चरण आरंभ हो गया। अमेरिका और सोवियत संघ दो विरोधी ध्रुवों के इर्द–गिर्द यूरोपीय राजनीति घूमने लगी। जहां पश्चिमी यूरोप के देशों ने अमेरिका का साथ दिया और स्वयं को मुक्त विश्व की संज्ञा दी, वहीं दूसरी ओर पूर्वी यूरोप के देश सोवियत संघ के नेतृत्व वाले समाजवादी शिविर का हिस्सा बन गए।

अमेरिका और सोवियत संघ के बीच संबंध कभी भी अच्छे नहीं रहे। प्रत्यक्ष युद्ध में आए बिना दोनों ध्रुव राजनैतिक और सैन्य प्रतिस्पर्धा में लगे रहे। इस स्थिति को शीत युद्ध के नाम से जाना गया। उत्तरी अमेरिका और यूरोपीय देशों ने 1949 में एक सैन्य संगठन नैटो की स्थापना की। नैटो का उद्देश्य राजनीतिक और सैन्य माध्यमों से अपने सदस्यों को स्वतंत्रता और सुरक्षा की गारंटी देना है। नैटो के लिए उसका आर्टिकल–5 सबसे महत्वपूर्ण है और यह इस सैन्य संगठन की मूल आत्मा है। इसके अनुसार इस संगठन के किसी भी देश के विरुद्ध आक्रमण करने वाले देश का मुकाबला ये सभी देश मिलकर करेंगे। नैटो जब बना तो संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, बेल्जियम, कनाडा, डेनमार्क, फ्रांस, आइसलैंड, इटली, लक्जमबर्ग, नीदरलैंड्स, नॉर्वे और पुर्तगाल इसके 12 संस्थापक सदस्य थे। वर्तमान में इसके सदस्यों की संख्या 30 है। नॉर्थ मैसेडोनिया साल 2020 में इसमें शामिल होने वाला सबसे नया सदस्य है। नैटो के जवाब में सोवियत संघ के नेतृत्व में पूर्वी यूरोप के देशों के गठबंधन ने यूरोप में सुरक्षा और शांति के लिए मई 1955 में वारसा संधि (वारसा पैक्ट) की। वारसा संधि संगठन में सोवियत संघ, पोलैंड, पूर्वी जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, रोमानिया, बुल्गारिया और अल्बानिया सम्मिलित हुए। हालांकि अल्बानिया 1968 में इस संगठन से अलग हो गया। इस संगठन का मुख्य काम था – नैटो में शामिल देशों का यूरोप में मुकाबला करना। शीत युद्ध के करीब चार दशकों तक नाटो और वारसा पैक्ट, जो परमाणु हथियारों और पारंपरिक सेनाओं के साथ एक–दूसरे का सामना करते रहे, यूरोप में रणनीतिक संतुलन और एक अस्थायी शांति बनाए रखने में कामयाब रहे। वैचारिक प्रभुत्व के लिए इन दोनों ने ही दुनिया के बाकी हिस्सों में छद्म युद्ध लड़े, लेकिन शक्ति संतुलन के कारण यूरोप तुलनात्मक तौर पर शांत था। शीत युद्ध के दौरान उपनिवेशवाद से नए–नए स्वतंत्र हुए या विकासशील देशों ने संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ से अलग रहकर अपने हितों और महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के लिए स्वतंत्र और तटस्थ रहने का निर्णय लेते हुए 1961 में गुट निरपेक्ष आंदोलन का गठन किया। इसके प्रमुख संस्थापक नेताओं में यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति जोसिप बरोज टीटो, मिस्र के राष्ट्रपति गमाल अब्देल नासिर, भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, घाना के राष्ट्रपति क्वामे नक्रमा और इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो थे। युगोस्लाविया के राष्ट्रपति जोसिप बरोज टीटो इसके प्रथम अध्यक्ष बने। गुट निरपेक्ष आंदोलन का उद्देश्य विश्व शांति, नाभिकीय निःशस्त्रीकरण और निर्धन देशों की उन्नति पर बल देना था। धीरे–धीरे इसमें दुनिया के करीब 120 देश शामिल हो गए और इस प्रकार विश्व द्विधुर्वीय से बहुधुर्वीय हो गया। भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का संस्थापक और इसके सबसे महत्त्वपूर्ण सदस्यों में से है तथा 1970 के दशक तक भारत ने इस आंदोलन की बैठकों में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया, किंतु उसके बाद गुटनिरपेक्ष आंदोलन में भारत की स्थिति बदलने लगी। भारत का झुकाव सोवियत संघ की ओर बढ़ने लगा और गुटनिरपेक्ष आंदोलन के प्रति भारत के झुकाव में कमी आने लगी। इस कमी का मुख्य कारण यह था कि संकट के दौर में इस आंदोलन के सदस्य देश भारत को अपना समर्थन देने में विफल रहे थे। उदाहरण के लिये वर्ष 1962 के भारत–चीन युद्ध के दौरान घाना और इंडोनेशिया जैसे देशों ने चीन समर्थक नीति का अनुसरण किया था तो 1965 और 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्धों के दौरान इंडोनेशिया और मिस्र ने भारत विरोधी नीति अपनाते हुए पाकिस्तान का समर्थन किया था। यही नहीं, संयुक्त राज्य अमेरिका ने भी हमारे

हितों को ताक पर रखते हुए हमेशा पाकिस्तान का समर्थन किया जबकि संकट की घड़ी में सोवियत संघ ने हमेशा भारत का साथ दिया।

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि यूक्रेन पर हमले के लिए रूस के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में लाए गए निंदा प्रस्ताव और संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) में भी रूस के खिलाफ यूक्रेन से बिना शर्त सेना वापस बुलाने के प्रस्ताव पर भारत मतदान से दूर रहा। इसकी पश्चिमी देशों में आलोचना भी हो रही है, लेकिन अतीत को खंगालने पर स्पष्ट हो जाता है कि भारत का यह कदम बहुत सोचा–समझा और सराहनीय है। आखिरकार पूर्व के सोवियत संघ और मौजूदा रूस ने यूएनएससी में हमेशा भारतीय हितों का ख्याल रखा और जरूरत के वक्त वीटो का इस्तेमाल करने से भी कभी पीछे नहीं रहा। रूस का भारत के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहने का सिलसिला 1957 से चला आ रहा है। तब से लेकर अब तक एक दो नहीं बल्कि कुल छह मौके ऐसे आए जब रूस ने भारत के खिलाफ लाए गए प्रस्तावों को अपने वीटो पावर से रोक दिया। पहला – भारत ने 1947 में आजादी हासिल की तो कश्मीर रियासत ने भारत–पाकिस्तान से इतर स्वतंत्र रहने का फैसला किया। हालांकि, कुछ ही दिनों में पाकिस्तान ने कबायलियों को भेजकर हमला बोल दिया तो कश्मीरी नेताओं ने भारत से मदद मांगी। भारत ने अधिग्रहण दस्तावेज पर दस्तखत करने की शर्त पर कश्मीर की मदद की लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू मामले को संयुक्त राष्ट्र संघ लेकर चले गए। भारत को श्री नेहरू जी की इस गलती की सजा भुगतनी पड़ी जब 20 फरवरी 1957 को ऑस्ट्रेलिया, क्यूबा, यूनाईटेड किंगडम और अमेरिका एक प्रस्ताव लाये जिसमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) के अध्यक्ष से आग्रह किया गया था कि वो भारत और पाकिस्तान से बात करके इस मुद्दे को सुलझाएं। इसके लिए दोनों देशों को विवादित क्षेत्र से अपनी–अपनी सेनाओं को वापस बुलाने को राजी करने का सुझाव दिया गया था। एक प्रस्ताव यह भी था कि संयुक्त राष्ट्र को कश्मीर में अस्थायी तौर पर अपनी फोर्स तैनात करनी चाहिए। तब तत्कालीन सोवियत संघ ने प्रस्ताव के खिलाफ अपने वीटो पावर का इस्तेमाल किया जबकि स्वीडन ने वोटिंग से दूरी बना ली थी। उस समय यूएनएससी के अध्यक्ष भी स्वीडन के ही थे। ऑस्ट्रेलिया, चीन, कोलंबिया, क्यूबा, फ्रांस, इराक, फिलिपींस, यूनाईटेड किंगडम और अमेरिका ने प्रस्ताव के समर्थन में वोट किया था। दूसरा – 18 दिसंबर 1961 को फ्रांस, तुर्की, यूनाईटेड किंगडम और अमेरिका सुरक्षा परिषद में भारत के खिलाफ एक संयुक्त प्रस्ताव लाये जिसमें गोवा और दमन एवं दीव में भारत द्वारा सैन्य बलों के इस्तेमाल पर आपत्ति जताई गई थी। प्रस्ताव में भारत सरकार से फौज हटाकर 17 दिसंबर 1961 से पहले की स्थिति बहाल करने की मांग की गई थी। सोवियत संघ, सिलोन (श्रीलंका), लाइबेरिया और संयुक्त अरब अमीरात ने प्रस्ताव के विरोध में भारत का साथ दिया था। वहीं, चिली, चीन, इक्वाडोर, फ्रांस, तुर्की, यूनाईटेड किंगडम और अमेरिका ने भारत का विरोध करते हुए प्रस्ताव का समर्थन किया था। बहस पर चर्चा के दौरान संयुक्त राष्ट्र में सोवियत संघ के राजदूत श्री वेलेरियन जोरिन ने कहा, 'पुर्तगाल का बचाव करने वाले संयुक्त राष्ट्र का हित नहीं बल्कि उपनिवेशवाद का पक्ष ले रहे हैं जो 20वीं सदी का सबसे शर्मनाक फलसफा है। हालांकि, वो देश दर्जनों बार विपरीत कदम उठा चुके हैं।' तीसरा – 22 जून 1962 को अमेरिका के समर्थन से आयरलैंड सुरक्षा परिषद में एक प्रस्ताव लाया था जिसमें भारत और पाकिस्तान की सरकारों से कश्मीर विवाद को सुलझाने की मांग की गई थी। इसमें कहा गया कि दोनों सरकारें ऐसा माहौल बनाएं ताकि बातचीत के जरिए समझौते तक पहुंचा जा सके। सोवियत संघ ने फिर से प्रस्ताव के खिलाफ वीटो पावर लगा दिया। रोमानिया ने भी प्रस्ताव के विरोध में मतदान करके भारत का साथ दिया जबकि घाना और यूएई ने वोटिंग से दूरी बना ली। वहीं, चिली, चीन, फ्रांस, आयरलैंड, यूनाईटेड किंगडम, अमेरिका और वेनेजुएला ने प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया। चौथा – 04 दिसंबर 1971 को अमेरिका के नेतृत्व में कुछ देशों द्वारा संयुक्त राष्ट्र में एक प्रस्ताव लाकर भारत–पाकिस्तान सीमा पर युद्धविराम लागू करने की मांग की गई जिसके खिलाफ सोवियत संघ ने वीटो पावर का इस्तेमाल किया। अर्जेंटीना, बेल्जियम, बुरुंडी, चीन, इटली, जापान, निकारागुआ, सियरा लियोन, सोमालिया, सीरिया और अमेरिका ने प्रस्ताव के समर्थन में वोट किया। यही नहीं, जब 1971 में पाकिस्तान के साथ जंग से ठीक पहले तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी और सोवियत संघ के राष्ट्रपति श्री ब्रेझनेव ने फ्रेंडशिप ट्रिटी पर दस्तखत किए तो अमेरिका इससे बुरी तरह हिल गया था। अमेरिका के राष्ट्रपति श्री रिचर्ड निक्सन को लगा था कि गुट निरपेक्ष आंदोलन का एक प्रमुख सदस्य होने के कारण भारत इस तरह का समझौता नहीं करेगा। लेकिन फ्रेंडशिप ट्रिटी भारत–रूस रिश्तों में मील का पत्थर साबित हुई। इसके तहत स्पष्ट किया गया कि दोनों देश ऐसे मिलिट्री अलायंस से परहेज करेंगे जो दोनों में से किसी एक के हित के खिलाफ हो और अगर कोई तीसरा देश आक्रमण करता है तो आपस में संपर्क करेंगे। इसका टेस्ट दिसंबर में ही हो गया जब भारत–पाकिस्तान में जंग शुरू हो गई। पाकिस्तान–प्रेमी अमेरिकी राष्ट्रपति श्री निक्सन ने अपने सुरक्षा सलाहकार श्री हेनरी किसिंजर के जरिए भारत के खिलाफ मोर्चेबंदी की कोशिश की। यही नहीं विध्वंसक सातवां बेड़ा बंगाल की खाड़ी की तरफ रवाना कर दिया। जब सोवियत संघ के राष्ट्रपति श्री ब्रेझनेव को इसकी जानकारी नई दिल्ली से मिली तो वह तिलमिला उठे। उन्होंने व्लॉडिवोस्टोक से परमाणु हथियारों से लैस न्यूक्लियर सबमरीन रवाना करने का ऑर्डर जारी कर दिया और इस तरह अमेरिकी चाल नेस्तनाबूद हो गई। पाँचवाँ – 5 दिसंबर 1971 को अर्जेंटीना, बेल्जियम, बुरुंडी, इटली, जापान, निकारागुआ, सियरा लियोन और सोमालिया भारत–पाकिस्तान बॉर्डर पर युद्धविराम लागू करने का प्रस्ताव लाये ताकि शरणार्थियों की वापसी हो सके। सोवियत

संघ ने पांचवीं बार वीटो पावर के इस्तेमाल से भारत का साथ दिया। जहां अमेरिका ने एक बार फिर भारत का विरोध करते हुए प्रस्तावक देशों का साथ दिया तो वहीं पोलैंड ने प्रस्ताव के विरोध में वोट किया। बड़ी बात यह हुई कि इस बार यूनाईटेड किंगडम और फ्रांस वोटिंग से दूर रहे। छठा – 14 दिसंबर 1971 को अमेरिका प्रायोजित प्रस्ताव में भारत और पाकिस्तान की सरकारों से युद्धविराम और सेनाओं को अपने–अपने इलाकों में वापस बुलाने के लिए सभी जरूरी कदम उठाने की मांग की गई। सोवयित संघ ने प्रस्ताव को फिर से वीटो कर दिया। पोलैंड ने भी प्रस्ताव के विरोध में वोट डाला जबकि फ्रांस और यूनाईटेड किंगडम ने एक बार फिर वोटिंग में भाग नहीं लिया। अर्जेंटीना, बेल्जियम, बुरुंडी, चीन, इटली, जापान, निकारागुआ, सियरा लियोन, सोमालिया, सीरिया और अमेरिका ने प्रस्ताव के पक्ष में वोट किया था। अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में इन अविस्मरणीय समर्थनों के साथ ही सोवियत संघ ने भारत के आर्थिक, सामरिक और कारोबारी हितों के लिए द्विपक्षीय संबंधों को हमेशा मजबूत किया है। 1955 में जब भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू मॉस्को गए तो सोवियत संघ के राष्ट्रपति श्री निकिता खुश्चेव के साथ उनकी जबर्दस्त दोस्ती की शुरुआत हुई। रूस ने अपनी टेक्नोलॉजी तभी से भारत को देनी शुरू की। भिलाई स्टील प्लांट से हुई शुरुआत ने भारत को आर्थिक तौर पर उठ खड़ा होने में जबरदस्त सहयोग दिया। 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद रूसी मदद मिलनी और तेज हो गई। 1965 में श्रीमती इंदिरा गांधी ने मॉस्को में राजदूत श्री टी. एन. कॉल के जरिए जब यह जानना चाहा कि पाकिस्तान के साथ जंग की स्थिति में सोवियत संघ क्या सोचता है तो इस पर रूस ने साफ कहा था कि सोवियत संघ हमेशा भारत के बुनियादी हितों को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ेगा।

27 नवंबर 1986 को सोवियत संघ के राष्ट्रपति श्री मिखाइल गोर्बाचेव और भारत के प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने जब दिल्ली घोषणापत्र जारी किया तो अमेरिका और यूरोप सन्न रह गए थे। इसे पूरी दुनिया 'डेल्ही डिक्ल्यरेशन' के तौर पर जानती है। श्री राजीव गाँधी का हाथ थामे श्री मिखाइल गोर्बाचेव ने कहा था कि अगर भारत की अखंडता और एकता पर कोई भी खतरा पैदा हुआ तो सोवियत संघ चुप नहीं बैठेगा। अगली लाइनें थीं – हम अपनी विदेश नीति में एक कदम भी ऐसा नहीं बढ़ाएंगे जिससे भारत के वास्तविक हितों पर चोट पहुंचती हो। सोवियत संघ आपके देश के खिलाफ सभी साजिशों और कुत्सित सोच की भर्त्सना करता है।

अक्तूबर 2000 में 'भारत–रूस सामरिक साझेदारी घोषणा' पर हस्ताक्षर करने के बाद से, भारत–रूस संबंधों ने राजनीतिक, सुरक्षा, रक्षा, व्यापार और अर्थव्यवस्था, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, तथा संस्कृति सहित द्विपक्षीय संबंधों के लगभग सभी क्षेत्रों में सहयोग के बढ़े हुए स्तरों के साथ एक गुणात्मक रूप से नया स्वरूप देखा गया है। विशेषकर रक्षा के क्षेत्र में रूस भारत को ऐसी संवेदनशील तकनीक दे रहा है जो अमेरिका या कोई भी पश्चिमी देश भारत को नहीं दे रहा है। रूस ने हमें क्रायोजनिक इंजन दिए जिससे सीखकर भारत आज अपना खुद का क्रायोजनिक इंजन बना रहा है। इसी इंजन की मदद से भारत अंतरिक्ष में रॉकेट भेज रहा है। इसके अलावा रूस के कई हथियार जैसे एस–400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम अमेरिकी हथियारों से ज्यादा कारगर और सस्ते हैं। यही वजह है कि भारत ने अमेरिका के पेट्रियाट की जगह पर रूस से एस–400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम को चुना है। भारत और रूस के संबंधों में एक अहम पहलू यह भी है कि भारत, ईरान, रूस, मध्य एशियाई देशों के बीच माल ढुलाई के लिए जहाज़, रेल और सड़क मार्ग का 7200 किलोमीटर लंबा एक नेटवर्क है जिसे उत्तर–दक्षिण परिवहन गलियारा कहा जाता है। भारत के लिए यह ट्रेड ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर बहुत अहम है। यह ऐसा कॉरिडोर है जिसका हिस्सा पाकिस्तान और चीन नहीं हैं। भारत मध्य एशिया में अपना दखल बढ़ाना चाहता है। इस साल 26 जनवरी को भारत ने मध्य एशियाई देशों जिनमें पूर्व सोवियत संघ के पांच गणराज्य भी शामिल हैं, के राष्ट्राध्यक्षों को निमंत्रण भी दिया था। इन देशों में बिजनस और कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए भारत इच्छुक है और इन देशों पर रूस का अपना अलग प्रभाव है। अफगानिस्तान की वर्तमान स्थिति को देखते हुए वहां पर अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए भारत और रूस मजबूती से एक–दूसरे का साथ निभाएंगे। अगस्त 2019 में, रूस संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का पहला स्थायी (पी–5) सदस्य देश था जिसने कश्मीर पर भारत के कदम (अनुच्छेद 370 को खत्म करने और राज्य के विभाजन) को विशुद्ध रूप से एक आंतरिक मामला बताया था। साथ ही रूस ने कहा कि 1972 के शिमला समझौते और 1999 के लाहौर घोषणापत्र के तहत ही विवादों का हल तलाशा जाना चाहिए।

1991 में सोवियत संघ के विघटन के समय ही पूरे विश्व में वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण का दौर शुरु हुआ था। भारत में भी उदारीकरण की प्रक्रिया ने तेजी से गति पकड़ी। भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था और बड़े बाजार ने दुनिया को आकर्षित किया। इसी तरह के अन्य अनेक भू–राजनैतिक एवं सामरिक कारणों की वजह से भारत और अमेरिका के रिश्ते भी प्रगाढ़ हो रहे हैं। परंतु इन्हें अभी समय की कसौटी पर खरा उतरना है, जबकि पिछले 75 सालों में न जाने कितनी बार भारत के मुश्किल वक्त में रूस पूरी दृढ़ता के साथ भारत के साथ खड़ा रहा है और आज जब रूस सबसे मुश्किल वक्त से गुजर रहा है तो भारत भी पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ रूस के साथ खड़ा है। और, इसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि दोस्ती पर प्रसिद्ध अमेरिकी स्तंभकार वाल्टर विंचेल का यह अनमोल कथन – *'एक सच्चा दोस्त वह होता है जो तब भी हमारे साथ चलता है जब पूरी दुनिया हमसे मुंह मोड़ लेती है'* भारत–रूस की दोस्ती पर सटीक बैठता है।

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत संस्थान द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

आजादी के 75 साल पूरे होने का जश्न मनाने को समर्पित 75 सप्ताह के आजादी का अमृत महोत्सव का शुभारंभ माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा 12 मार्च 2021 को साबरमती आश्रम से एक पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर किया गया। दरअसल, 12 मार्च 1930 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह की शुरुआत की थी। 2021 में नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने पर केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय ने 75 किलोमीटर की इस पदयात्रा का आयोजन किया था। तत्पश्चात, स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ज्ञात–अज्ञात सभी स्वतंत्रता सेनानियों के अमर बलिदान को नमन करने, पिछले 75 वर्षों के दौरान की उपलब्धियों का जश्न मनाने, नई पीढ़ी को हमारे गौरवशाली इतिहास से रूबरू कराने और भविष्य के लिए संकल्प प्रस्तुत करने के उद्देश्य से केंद्र एवं राज्य सरकारों के मंत्रालयों, विभागों एवं कार्यालयों द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के तहत अनेकानेक कार्यक्रम निर्धारित किए गए और उनका आयोजन किया गया। आजादी के अमृत महोत्सव को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाने के उद्देश्य से वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान द्वारा भी इसके तहत विभिन्न कार्यक्रम निर्धारित करने एवं उनके सुचारु रूप से संचालन के लिए 25 मई 2021 को डॉ. हेलन आर. सेकर, सीनियर फेलो की अध्यक्षता में एक आयोजन समिति का गठन किया गया। इस समिति के अन्य सदस्यों में डॉ. आर. आर. पटेल, एसोसिएट फेलो; श्री एस. के. वर्मा, सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी और श्री बीरेन्द्र सिंह रावत, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी शामिल थे। आयोजन समिति ने 31 मई 2021 से कार्यक्रमों की योजना बनानी शुरू की और विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने का निश्चय किया गया। 15 अगस्त 2021 से इन कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया। संस्थान द्वारा आयोजित इन कार्यक्रमों के विवरण निम्न प्रकार हैं:

बच्चों के लिए चित्रकारी प्रतियोगिता: बच्चों की रचनात्मकता और देश की विभिन्न उपलब्धियों एवं वर्तमान परिस्थितियों के बारे में उनके ज्ञान का आकलन करने के उद्देशय से चित्रकारी प्रतियोगिता का आयोजन दिनाँक 15 अगस्त 2021 को किया गया। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बच्चों को निम्नांकित विषयों में किसी एक विषय पर चित्रकारी में अपने कौशल का प्रदर्शन करना था: i) माई स्वीट होम, ii) माई प्ले ग्राउंड, iii) मेक इन इंडिया, iv) कोरोना अवेअरन्यस, v) नेशन फर्स्ट, ऑलवेज़ फर्स्ट, vi) गोल्डन सक्सेस ऑफ नीरज चोपड़ा, vii) बिग सल्यूट टु कोरोना वॉरियर्स, आदि। बच्चों के शैक्षिक स्तर को देखते हुए प्रतियोगिता की दृष्टि से उन्हें तीन श्रेणियों नामतः कक्षा 6 तक, कक्षा 7 से 12 एवं कक्षा 12 से ऊपर में रखा गया था। बच्चों की सुविधा के अनुसार प्रतियोगिता के विषय अंग्रेजी में दिए गए थे। इसमें संस्थान के स्टाफ सदस्यों के कुल 12 बच्चों ने भाग लिया।

स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान पर त्वरित भाषण: हमारे देश के महान स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष, समर्पण देशप्रेम एवं अदम्य साहस को विनम्रता एवं कृतज्ञतापूर्वक याद करने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन दिनाँक 24 सितम्बर 2021 को किया गया। इसमें प्रतिभागियों को देश के निम्नांकित अमर सेनानियों में से किसी एक सेनानी के बारे में पाँच मिनट में अपना वक्तव्य देना था: i) रानी लक्ष्मी बाई, ii) मंगल पांडे, iii) खुदीराम बोस, iv) सरदार भगत सिंह, v) सुखदेव, vi) राजगुरू, vii) चंद्रशेखर आजाद, viii) अशफाक उल्ला खाँ, ix) बाल गंगाधर तिलक, x) लाला लाजपत राय, xi) बिपिन चंद्र पाल, xii) महात्मा गाँधी, xiii) जवाहरलाल नेहरू, xiv) सुभाष चंद्र बोस, xv) खान अब्दुल

गफ्फार खाँ, xvi) सरोजनी नायडू, xvii) सरदार बल्लभभाई पटेल, xviii) मदन मोहन मालवीय, xix) गोपाल कृष्ण गोखले, xx) रामप्रसाद बिस्मिल, xxi) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, xxii) बहादुरशाह जफर, और xxiii) लक्ष्मी सहगल। इसमें संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित कुल 55 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

विशेष कार्यशाला का आयोजनः आजादी का अमृत महोत्सव के एक भाग के रूप में वेलपुर मंडल, जिला निजामाबाद में 'बाल श्रम के उन्मूलन के लिए सफल हस्तक्षेपों के 20 वर्ष मनाने' और श्रम संहिताओं पर जागरूकता का सृजन करने पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन 08 अक्टूबर 2021 को प्रगति हॉल, कलेक्टर कार्यालय, निजामाबाद में किया गया। डॉ. एच. श्रीनिवास, महानिदेशक, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान ने बाल श्रम के मुद्दे का समाधान करने और संबंधित कानून के प्रभावी प्रवर्तन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कार्यशाला का संदर्भ निर्धारित किया। श्री अशोक कुमार, अपर सचिव और मिशन निदेशक, राष्ट्रीय जल मिशन, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा कायाकल्प मंत्रालय (एमओडब्ल्युआर, आरडी एंड जीआर) ने जिला निजामाबाद, तेलंगाना के जिला कलेक्टर के अपने कार्यकाल के दौरान वेलपुर मंडल में बाल श्रम के उन्मूलन के लिए उनके और उनकी टीम के द्वारा शुरु की गई विभिन्न पहलों और कैसे यह जिला बाल श्रम मुक्त जिला बना, के बारे में विस्तार से बात की। श्री अरविंद धर्मापुरी, माननीय सांसद (लोकसभा), निजामाबाद निर्वाचन क्षेत्र ने प्रतिभागियों को संबोधित किया और जिला को बाल श्रम मुक्त बनाने में तत्कालीन कलेक्टर द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। श्री बाजीरेड्डी गोवर्धन, पूर्व विधायक और अध्यक्ष, टीएसआरटीसी ने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया। श्री के. श्रीनिवास, निदेशक, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी; सुश्री रानी कुमुदिनी, विशेष मुख्य सचिव, श्रम विभाग, तेलंगाना सरकार; श्री नारायण रेड्डी, जिला कलेक्टर, निजामाबाद; श्री सुधाकर राव, तत्कालीन सीएमओ; डॉ. एच. श्रीनिवास, महानिदेशक, वीवीजीएनएलआई; डॉ. महावीर जैन, सीनियर फेलो (सेवानिवृत्त), वीवीजीएनएलआई और डॉ. हेलेन आर. सेकर, सीनियर फेलो, वीवीजीएनएलआई ने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया।

कार्यशाला से पहले, तेलंगाना भवन, नई दिल्ली में एक शुरुआती कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान सुश्री एम. सत्यवती, सदस्य यूपीएससी और पूर्व सचिव, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय; श्री आनंद बोस, वन मैन कमीशन, सीएसीएलबी, एमओएलई, और पूर्व विशेष मुख्य सचिव, केरल सरकार; श्री के. एम. साहनी, पूर्व सचिव, एमओएलई; और श्री जी. अशोक कुमार, अपर सचिव, एमओडब्ल्युआर, आरडी एंड जीआर और मिशन निदेशक; डॉ. गौरव उप्पल, रेजिडेंट कमिश्नर, तेलंगाना; डॉ. एच. श्रीनिवास, महानिदेशक, वीवीजीएनएलआई और डॉ. हेलन आर. सेकर, सीनियर फेलो, वीवीजीएनएलआई ने भाषण दिया।

कविता पाठः आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले देश के महान वीर–वीरांगनाओं को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के उद्देश्य से कविता पाठ का आयोजन दिनाँक 17 नवम्बर 2021 को किया गया। संस्थान की ओर से डॉ. हेलन आर. सेकर सीनियर फेलो द्वारा मंचासीन अतिथियों सर्वश्री उपेन्द्र मिश्रा, भूतपूर्व मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड, नौएडा; डॉ. राहुल, भूतपूर्व प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय खाद्य निगम; और डॉ. सविता जैमिनी, असिस्टेंट प्रोफेसर, भारती महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के साथ–साथ सभागार में उपस्थित सभी संकाय सदस्यों, अधिकारियों और कर्मचारियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। माननीय अतिथियों के साथ–साथ श्री राजेश कुमार कर्ण, श्री प्रकाश मिश्रा, श्रीमती रुचिका, डॉ. हेलन आर. सेकर और श्री बीरेन्द्र सिंह रावत द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन, देशभक्ति, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की विकास यात्रा तथा सामाजिक सरोकार के विभिन्न विषयों पर अपनी–अपनी काव्यात्मक प्रस्तुति दी गई। इस बहुत ही सुंदर, ज्ञानवर्धक, देशभक्तिपूर्ण एवं मनोरंजक कार्यक्रम का समापन मंच संचालक श्री बीरेन्द्र सिंह रावत, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी द्वारा मंचासीन अतिथियों और सभागार में उपस्थिति सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए किया गया। इसमें संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित कुल 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

आजादी का अमृत महोत्सव

डॉ. राहुल*

आओ, अमृत महोत्सव मनाएं।
सभी ओर उत्साह दिख रहा, एक नया विहान,
अंधियारा मिट गया, नहीं अब है बाकी तूफान,
गूंज रही हैं सभी दिशाएं।
आओ, अमृत महोत्सव मनाएं।।

गत वर्षों में हमने झेले कितने–कितने कष्ट,
मगर आज सब सुख-साधन, दुक्ख हुआ विनष्ट,
खुशियों का इतिहास रचाएं।
आओ, अमृत महोत्सव मनाएं।।

होवे सबसे पवित्र मानवता का रिश्ता नाता,
जो जन–जन का दुक्ख हरे इंसान कहाता,
स्वार्थ दाह कर नव संसार बसाएं।
आओ, अमृत महोत्सव मनाएं।।

ज्ञान–विज्ञान में हम सदा रहे हैं सबसे आगे,
हमसे ही मजबूत हुए हैं संस्कृति के धागे,
सांस्कृतिक चेतना स्वर गुंजाएं।
आओ, अमृत महोत्सव मनाएं।।

नयी–नयी तकनीक हमीं ने दी दुनिया को,
भाषा -शिक्षा-संगीत-कला भी दी है सबको,
बन के 'विश्व गुरु' पुनः बताएं।
आओ, अमृत महोत्सव मनाएं।।

गांव - गांव में, नगर - नगर में, महानगर में,
नव विकास की, चिर विश्वास की ध्वजा डगर मे,
नवोत्थान की ज्योति जलाएं।
आओ, अमृत महोत्सव मनाएं।।

राजनीति की नयी नीति अब होवे विकसित,
भेद-भाव, अहंकार, अज्ञान को करें तिरोहित,
वंदे मातरम् गीत को गाएं।
आओ, अमृत महोत्सव मनाएं।।

अमृत उत्सव

उपेन्द्र मिश्र**

हम अमृत उत्सव मना रहे हैं,
यानि नये भारत को बना रहे हैं।

अपनी रक्षाओं को मजबूत किया है
सेना की लड़ाई की ताकत को मजबूत किया है
यह देखकर दुश्मन भी घबरा रहे हैं
हम अमृत उत्सव मना रहे हैं
यानि नये भारत को बना रहे हैं।

बीस–पच्चीस वर्षों के बीच हर आकांक्षाएं पूरी होंगी
सड़कों, रेलों के बढ़ने से हर शहर/गांव की कम दूरी होगी
स्वदेशी सामान रहेगा, हिंदी और देशी भाषा एं होंगी
किसी भी भाषा /भाशी के सामने अब न कोई मजबूरी होगी
यह 14 नवम्बर के कार्यक्रम में गृह मंत्री समझा रहे हैं
हम अमृत उत्सव मना रहे हैं
यानि नये भारत को बना रहे हैं।

जब कोरोना महामारी आई
और पूरी दुनिया थर्राई
हमने इसकी वैक्सीन को बनाया
विश्व में लगाने का रिकॉर्ड बनाया
इसे और देशों को भी दिलवा रहे हैं
हम अमृत उत्सव मना रहे हैं
यानि नये भारत को बना रहे हैं।

विश्व स्तर पर नई पहचान बनी है
हर देश हमसे हाथ मिला रहा है
हमारी ताकत को पहचान रहा है
अब हम विश्व को नई राह दिखा रहे हैं
शहीदों के सपनों को पूरा करते जा रहे हैं
इसलिए हम अमृत उत्सव मना रहे हैं
यानि नये भारत को बना रहे हैं।

इसमें सबका सहयोग चाहिए
भारत को अब नया दौर चाहिए
बड़े काम पूरे हुए हैं, कुछ पूरे होने वाले हैं
देश में छुपे गद्दार इसी से तो घबरा रहे हैं
जन कल्याण में हम परचम लहरा रहे हैं
हम अमृत उत्सव मना रहे हैं
यानि नये भारत को बना रहे हैं।

*भूतपूर्व प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय खाद्य निगम, नौएडा
**भूतपूर्व मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड, नौएडा

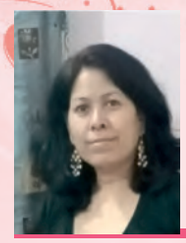

अमृत महोत्सव

डॉ. सविता जैमिनी*

आजादी के 75 वर्षों का हिसाब लें कि
क्या खोया? क्या पाया? तो
रंगों के आधार पर देश बंटा
फिर भी रंग हमने कहां पूरा पाया
मातृभू का बड़ा हिस्सा गंवाया।
अपनों ने ही 'अपनियों' की आबरू लूटी
अपनों ने ही अपनों का खून बहाया।
इतने पर भी रुक जाते तो कोई बात थी
न जाने कैसी नीयत, कैसे चाल थी

मंसूबे उनके बड़े नापाक थे, नासूर दे गए जो साथ थे
भाई नहीं 'चारा' बनाया, ऐसे हमने भाईचारा निभाया।

सवालों की घुमड़न है, मन सोचता है –
जहाँ पाकिस्तान की जीत पर भारत में दीवाली मनाई जाती हो,
भारत तेरे टुकड़े होंगे इंशा–अल्लाह के नारे लगाए जाते हों।
जहाँ तिरंगे का खुलेआम अपमान किया जाता हो,
वंदेमातरम् गाने को सांप्रदायिक कहा जाता हो।
जहाँ कानूनों के विरोध में महीनों तक बॉर्डर घेरे जाते हों,
जहाँ साजिशन शाहीन बाग बनाए जाते हों।
जहाँ आतंकियों और पत्थर बरसाने वालों को,
भटका, मासूम नौजवान बताया जाता हो।
भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, आजाद भुलाए जाते हों,
जहाँ चरसी, नशेड़ियों को अपना हीरो बनाया जाता हो।
जहाँ अंग्रेजी का मान और हिंदी का अपमान हो,
पश्चिमी संस्कृति को दिया जाता पहला स्थान हो।
जहाँ सोशल मीडिया के नकली संसार में जीते हों,
सच्चे नहीं, फेसबुकिया फ्रैंड होते हों।
बूढ़े माता–पिता वृद्धाश्रम में छोड़े जाते हों,
मंदिर खाली, बार भरे–भरे पाए जाते हों।
वहाँ हम आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हों!
पर कुछ सुकून भरे काम भी हैं –
स्वच्छ भारत से स्वच्छता तो आई है,
मेक इन इंडिया ने भारत की शान बढ़ाई है।
स्टार्ट अप इंडिया ने युवाओं को दिशा दिखाई है,
आत्मनिर्भर भारत ने चीन की करी ठुकाई है।
वैक्सीनेशन में 200 करोड़ का आंकड़ा पार करके,
दुनिया के दांतों तले अंगुली दबवाई है।
प्रधानमंत्री जी के कुशल नेतृत्व ने,
कोरोनाकाल में भी सब मजबूती से संभाला है।
पूरे विश्व ने हमारे प्रधानमंत्री जी का लोहा माना है,
फिर से यह सपना देखने की हिम्मत आई है –

भारत बने फिर से सोने की चिड़िया, भरे उड़ान, देखे जहान,
विश्व गुरु के रूप में फिर से पहचाना जाए, मेरा हिदुस्तान, प्यारा हिंदुस्तान।

*असिस्टेंट प्रोफेसर, भारती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ट्रेड यूनियन नेताओं की भूमिका: आजादी का अमृत महोत्सव के एक भाग के रूप में स्वतंत्रता 'संग्राम के दौरान ट्रेड यूनियन नेताओं की भूमिका' पर एक कार्यशाला का आयोजन 16 दिसंबर 2021 को किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य ब्रिटिश शासन के दौरान ट्रेड यूनियन आंदोलन, ट्रेड यूनियन आंदोलन में राष्ट्रीय नेताओं की भागीदारी और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में ट्रेड यूनियन नेताओं की ऐतिहासिक भूमिका पर चर्चा करना था। कार्यशाला में शिक्षाविदों, सरकार (संबंधित मंत्रालयों), राज्य महिला आयोगों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और अन्य संगठनों के विद्वानों सहित ट्रेड यूनियन आंदोलनों और श्रमिक मुद्दों पर काम करने वाले विशेषज्ञों और ट्रेड यूनियन नेताओं ने भाग लिया। कार्यशाला में कुल 79 प्रतिभागियों (54 ऑनलाइन मोड के माध्यम से + 25 ऑफलाइन मोड के माध्यम से) ने भाग लिया। कार्यशाला का समन्वय डॉ. हेलेन आर. सेकर, सीनियर फेलो और डॉ. आर. आर. पटेल, एसोसिएट फेलो द्वारा किया गया।

स्वतंत्रता सेनानियों पर निबंध लेखन: जैसा कि हम सब जानते हैं कि आजादी हासिल करने के एकमात्र उद्देश्य के साथ ज्ञात–अज्ञात हजारों अमर सेनानी स्वतंत्रता आंदोलन में कूदे थे। हर जाति–धर्म के धनी–निर्धन, शिक्षित–अशिक्षित युवक–युवतियों, बच्चों, बुजुर्गों ने अपनी सुविधाओं एवं उम्र की परवाह किए बिना खुद को देश के नाम समर्पित करते हुए विभिन्न प्रकार से औपनिवेशिक साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह का झंडा बुलंद किया था। प्रतिभागियों एवं आम जनता के मध्य युवा क्रांतिकारियों, जो स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु अपने प्राणों की आहुति देने के लिए सदैव तत्पर रहते थे, के बारे में जानकारी का प्रसार करने के प्रयोजन से स्वतंत्रता सेनानियों पर निबंध लेखन का आयोजन दिनाँक 21 जनवरी 2022 को किया गया और इस निबंध का विषय 'स्वंतत्रता आंदोलन में युवा क्रांतिकारियों का योगदान' रखा गया था। इसमें संस्थान के कुल 06 प्रतिभागियों ने भाग लिया। मूल्यांकन की दृष्टि से पहले दो स्थान प्राप्त करने वाले निबंध क्रमानुसार इस अध्याय के अंत में दिए गए हैं।

नारा लेखन/कृतज्ञता ज्ञापनः आजादी के महत्व, आजादी के 75 वर्षों के दौरान हमारे देश द्वारा हासिल की गई उपलब्धियों और भविष्य की संभावनाओं के बारे में अपने विचार प्रकट करने हेतु तथा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान आजादी की खातिर अपने प्राणों की बाजी लगा देने वाले अमर बलिदानियों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने हेतु यह गतिविधि रखी गई थी। विभिन्न विषयों पर संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुविचार निम्नानुसार हैं:

आजादी के पचहत्तर साल, लगातार हो रही श्रमिकों के हितों की देखभाल।
आजादी के पचहत्तर साल; कायम हो रही न्याय, तरक्की और खुशहाली की नई मिसाल।
आजादी के पचहत्तर साल, देश कर रहा नित नूतन तकनीक का इस्तक़बाल।

डॉ. संजय उपाध्याय, सीनियर फेलो

मेरा देश मेरी गरिमा और अखंडता है।

डॉ. शशि बाला, फेलो

Freedom shows true light.
With freedom comes respect, responsibility and rejuvenation.
Everything disappears but the virtues remain forever.

Dr. Ellina Samantroy, Fellow

मणिपुरी भाषा में:

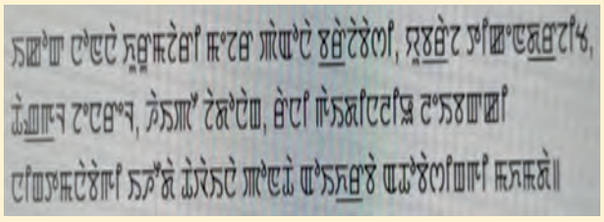

अंग्रेजी में अनुवादः

With profound homage, we bow our heads to our freedom fighters Major Paona Brajabashi, Yubraj Tikendrajit, Thangal General, Haipou Jadonang, Rani Gaidinliu for sacrificing their lives for the freedom of our motherland.

Dr. Otojit Kshetrimayum, Fellow

ओड़िया भाषा में:

ସ୍ୱାଧୀନତା ପ୍ରାପ୍ତି ର ଗାଥା
ଶୁଣିଲେ ଗର୍ବ ରେ ଉଠେ ଆମ ମଥା
ପଚୋସ୍ତୋରୀ ବର୍ଷର ଯାତ୍ରା
କରିଛୁ ବହୁତ, କରିବାକୁ ହେବ ଆହୁରି ବହୁତ
ମନେ ରଖିବା ଏ କଥା

हिंदी में अनुवादः

स्वतंत्रता प्राप्ति की गाथा
सुनने में गर्व से उठता है हमारा माथा।
पचहत्तर साल की यात्रा,
किया है बहुत, करना होगा और बहुत
मन में रखनी है ये कथा।।

प्रियदर्शन अमिताभ खुंटिआ, एसोसिएट फेलो

ओड़िया भाषा में:

ଭାବ ର ଅଭାବ
ନ ହଉ ଆମ ସ୍ୱଭାବ,
ପୂର୍ଣ୍ଣ ତେବେ ହବ
ଆଜାଦି ର ସ୍ୱପ୍ନ ସମ୍ଭବ ।

हिंदी में अनुवादः

भावों का अभाव, न हो हमारा स्वभाव।
पूर्ण होंगे तब, आजादी के ख्वाब।।

डॉ. रम्य रंजन पटेल, एसोसिएट फेलो

आजादी के अमृत पर्व पर स्वच्छता की कसम हम खाते हैं।
राष्ट्रपिता को आज सम्मान दिलाते हैं।।

सभ्यता और संस्कृति को युवा पीढ़ी तक पहुंचाएंगे।
आजादी का अमृत महोत्सव मनाएंगे।।

आजादी का अमृत महोत्सव हम सबको मिलकर मनाना है।
जन–जन की भागीदारी से आत्मनिर्भर भारत बनाना है।।

हर्ष सिंह रावत, प्रशासनिक अधिकारी

न्याय, समता, एकता, स्वतंत्रता पर...
आओ हम मिलकर एक नव–पैगाम दें।

नव–भारत के निर्माण के लिए करना होगा आत्म–मंथन
जन–जन में अमृत को करना होगा प्रवाह अब।

श्रीनिवास कुमार वर्मा, स.पु. एवं सू. अधिकारी

प्रगति पथ की खातिर हमारा हो यह संकल्प।
स्वदेशी अपनाएं हम, न ढूंढें इसका कोई विकल्प।।

अमृतकाल के लिए हमारा हो एक ही ध्येय।
प्यारा अपना यह भारत पुनः विश्वगुरु बने।।

बीरेन्द्र सिंह रावत, व. अ. अधिकारी

देशभक्तों से ही देश की शान है, देशभक्तों से ही देश का मान है।
नित आगे बढ़ता जा रहा है जो, वह देश अपना प्यारा हिंदुस्तान है।।

मोनिका गुप्ता, वरिष्ठ वैयक्तिक सहायक

एकता और अनुशासन से भारत माता का जयकार करें।
विश्व गुरु बने भारत फिर, मिलकर कुछ ऐसा सहकार करें।

आजादी के लिए जन–जन ने किए संघर्ष लगातार थे।
स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए रहे जेल में, काले पानी पार थे।

सुधा वोहरा, स्टेनो ग्रेड – I

जहाँ होता हर धर्म का सम्मान, वह देश हमारा भारत है महान।

राजेश कुमार कर्ण, स्टेनो ग्रेड – II

जन–जन का है उद्देश्य, आत्मनिर्भर बने अपना देश।

सब का आदर सम्मान है, अपना देश महान हैं।

प्रकाश मिश्रा, अकाउंट एसोसिएट

देश के लिए समर्पित है अपना तन–मन, सर्वोपरि है देश, इससे बड़ा न कोई धन।

सुधीर कुमार, अकाउंट एसोसिएट

स्वदेशी उत्पाद अपनाएँ, भारत को आत्मनिर्भर बनाएँ।

अनुज रावत, अकाउंट एसोसिएट

बच्चों द्वारा वीडियो प्रस्तुतिः स्वतंत्रता सेनानियों और स्वतंत्रता संग्राम के विषय पर वीवीजीएनएलआई कर्मचारियों के बच्चों को वीडियो बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया तथा इस प्रकार उनके द्वारा अपनी–अपनी मधुर एवं बुलंद आवाज में बनाए गए लघु अवधि के वीडियो का संकलन किया गया। बच्चों के क्रमानुसार नाम एवं उनके वीडियो के विषय इस प्रकार हैं: मा. आयुष कुमार कर्ण (सुपुत्र श्री राजेश कुमार कर्ण) – राष्ट्रीय नेताओं और भारत की स्वतंत्रता के लिए उनके प्रयासों पर भाषण; मा. देवांश डिमरी (सुपुत्र श्री पंकज डिमरी) – स्वतंत्र भारत पर देशभक्ति कविता; मा. मयंक जेना (सुपुत्र डॉ. एलीना सामंतराय जेना) – शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए भारत की आजादी का जश्न मनाना; कु. सृष्टि श्रीवास्तव (सुपुत्री श्री ए. के. श्रीवास्तव) – स्वतंत्रता आंदोलन में रानी लक्ष्मीबाई की भूमिका; कु. प्रतिभा चौहान (सुपुत्री श्री रामकिशन चौहान) – स्वतंत्रता आंदोलन में श्रीमती सरोजिनी नायडू की भूमिका; कु. अंजलि डिमरी (सुपुत्री श्री पंकज डिमरी) – स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान पर भाषण; मा. स्वयं सिद्ध पटेल (सुपुत्र डॉ. आर. आर. पटेल) – स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान पर भाषण; तथा मा. शिवम यादव (सुपुत्र श्री रामकृपाल) – महान स्वतंत्रता सेनानी बिपिन चंद्र पाल पर भाषण।

प्रतिष्ठित सप्ताहः आजादी के अमृत महोत्सव – संस्थान में आजादी के अमृत महोत्सव का 'प्रतिष्ठित सप्ताह' 07–13 मार्च 2022 के दौरान मनाया गया। इस दौरान विभिन्न सामाजिक सरोकारों से संबंधित विषयों पर प्रतिभागियों को संवदेनशील बनाने एवं उनके नेतृत्व कौशलों को बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित किए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों नामतः प्रभावी श्रम कानून प्रवर्तन, खनन श्रमिकों के नेतृत्व कौशल बढ़ाना, बीएमएस के ट्रेड यूनियन नेताओं के लिए नेतृत्व विकास कार्यक्रम, नई श्रम संहिताओं पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम; महिला श्रमिकों के संदर्भ में नई श्रम संहिताओं को समझने पर ऑनलाइन संवेदीकरण प्रशिक्षण कार्यशाला और 'ब्रिक्स एवं वैश्विक दक्षिण में गिग और प्लेटफॉर्म के कार्यचालन के संदर्भ में रोजगार के नए रूपों' पर एक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार के अलावा निम्नलिखित तीन विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए।

i) पुस्तक का विमोचनः 'भारत के विकास में श्रम की भूमिका' पर एक पुस्तक प्रकाशित की गयी और इसका विमोचन श्री भूपेंद्र यादव, माननीय केंद्रीय श्रम एवं रोजगार और पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री जी द्वारा 09 मार्च 2022 को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में किया गया था। इस पुस्तक में भारत की विकास यात्रा में श्रम के योगदान पर प्रख्यात शिक्षाविदों और चिकित्सकों द्वारा लिखे गए 12 लेख शामिल हैं।

ii) एक ऑनलाइन राष्ट्रीय कार्यशालाः संस्थान द्वारा 'श्रमिक विकासः पंचायती राज संस्थानों की भूमिका' पर एक ऑनलाइन राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन 09 मार्च 2022 को किया गया। पंचायती राज शासन की एक प्रणाली है जिसमें ग्राम पंचायतें प्रशासन की बुनियादी इकाइयाँ हैं और प्रत्येक गाँव अपनी विकास गतिविधियों के लिए जिम्मेदार होता है। भारत ने वर्ष 1992 में शासन को विकेंद्रीकृत करके और स्थानीय निकायों को सशक्त बनाकर जमीनी स्तर के लोकतंत्र को मजबूत करने की प्रतिबद्धता के साथ अपने संविधान में संशोधन किया। 73वें और 74वें संविधान संशोधनों के पारित होने से स्थानीय शासन की इस नई त्रि–स्तरीय प्रणाली के निर्माण ने ग्रामीण और शहरी स्थानीय निकायों को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया, जिससे पूरे देश में उनकी संरचना और कामकाज में एकरूपता सुनिश्चित हुई। पंचायती राज संस्थाएं ग्राम स्तर पर नियोजन एवं क्रियान्वयन में अपनी भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण विकास में शामिल होती हैं।

इस कार्यशाला के उद्देश्य इस प्रकार थेः पंचायती राज संस्थाओं (पीआरआई) के योगदान पर चर्चा करना; कोविड–19 महामारी के मद्देनजर आर्थिक विकास को मजबूत करने में पीआरआई की भूमिका पर विचार–विमर्श करना; श्रमिकों के विकास और केंद्र एवं राज्य सरकारों की योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए

एक प्रभावी तंत्र के रूप में पंचायती राज संस्थाओं की संभावनाओं को समझना। कार्यशाला में 73वें और 74वें संशोधन अधिनियम 1993 की ग्यारहवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 29 विषयों सहित केंद्र और राज्य सरकारों की योजनाओं के कार्यान्वयन में पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका और श्रमिकों के विकास के लिए प्रभावी तंत्र के रूप में पंचायती राज संस्थाओं की संभावनाओं पर भी चर्चा हुई। इस कार्यक्रम में विशेषज्ञों, पीआरआई और जनजातीय परिषदों के निर्वाचित प्रतिनिधियों, पीआरआई और श्रम मुद्दों पर काम करने वाले व्यवसायी, शिक्षाविदों, सरकार (संबंधित मंत्रालयों), सरकारी विभागों/संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, सिविल सोसायटी संगठनों के प्रतिनिधियों सहित कुल 395 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

iii) राष्ट्रीय स्तर का ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी कार्यक्रमः 'स्वतंत्रता आंदोलन और श्रमिक आंदोलन' पर राष्ट्रीय स्तर के ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन 11 मार्च 2022 को किया गया। इसमें 1857 से 1947 तक की लंबी अवधि के दौरान चले भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान स्वतंत्रता आंदोलन और श्रमिक आंदोलन से संबंधित चार विकल्पों युक्त 100 बहुविकल्पीय प्रश्न थे। इस कार्यक्रम में 22 राज्यों के 56 जिलों नामतः आंध्र प्रदेश के गुंटूर, चित्तूर, विजयनगरम और विशाखापत्तनम जिलों; बिहार के अरवल, पटना और भागलपुर जिलों; दिल्ली; गोवा के उत्तरी जिला; गुजरात के वडोदरा, जामनगर, कच्छ और गांधीनगर जिलों; हरियाणा के यमुनानगर और पंचकुला जिलों; जम्मू और

कश्मीर के जिला अनंतनाग; झारखंड के डाल्टनगंज और रांची जिलों; कर्नाटक के जिला बैंगलोर; केरल के अल्लप्पुझा और पलक्कड़ जिलों; मध्य प्रदेश के टीकमगढ़, बड़वानी, सतना और इंदौर जिलों; महाराष्ट्र के उल्हासनगर, नागपुर, रायगढ़, सतारा, नासिक, ठाणे, जालना, जलगाँव और मुंबई जिलों; मेघालय के जिला पूर्वी खासी हिल; ओडिशा के बरगढ़, कालाहांडी, पुरी और संबलपुर जिलों; पंजाब के फिरोजपुर, लुधियाना और मोहाली जिलों; राजस्थान के अजमेर, जयपुर और बाड़मेर जिलों; तमिलनाडु के जिला शिवगंगई; तेलंगाना के नारायणपेट और नागरकुरनूल जिलों; उत्तर प्रदेश के वाराणसी, गोरखपुर, बुलंदशहर, नोएडा और गोंडा जिलों; उत्तराखंड के जिला देहरादून; पश्चिम बंगाल के कोलकाता, उत्तर 24 परगना और मालदा जिलों से कुल 78 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

भारतीय स्वतंत्रता में युवा क्रांतिकारियों की भूमिका (I)

राजेश कुमार कर्ण*

भारत देश अंग्रेजों का गुलाम था, लगभग 90 साल तक लड़ाई लड़ने के बाद 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों के चंगुल से देश आजाद हुआ था। भारत का स्वाधीनता संघर्ष आधुनिक विश्व के महानतम संघर्षों में से एक है। इस संघर्ष में हर वर्ग और समुदाय के लोगों ने हिस्सा लिया और अपने–अपने तरीके से योगदान दिया। इस संग्राम में करोड़ों देशवासी अपनी आजादी के लिए लड़े। लाठियां खाईं। तकलीफें झेलीं, लेकिन देश को कभी झुकने नहीं दिया। जिस उम्र में लोग घर बसाने के सपने देखते हैं, उस उम्र में युवाओं ने सीने पर गोलियां खाईं। कइयों ने खुशी–खुशी देश के नाम अपने पूरे जीवन को कुर्बान कर दिया।

स्वतंत्रता आंदोलन में युवा क्रांतिकारियों का योगदान बहुत महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय है। भारत के नवयुवकों को विदेशी शासन मंजूर नहीं था। युवकों में जोश, एनर्जी तो होती ही है, उनमें कुछ कर गुजरने की चाहत भी होती है। वे महर्षि विवेकानंद, महर्षि अरविंद घोष, महर्षि दयानंद सरस्वती के क्रांतिकारी एवं समाज सुधारवादी विचारों से काफी प्रभावित थे और देश को किसी भी कीमत पर आजाद कराने के साथ–साथ लोगों के जीवन में भी सुधार लाना चाहते थे। इसी उद्देश्य से भारतीय युवाओं ने ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों का विरोध करना शुरू कर दिया परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार–सेना से उन्हें लड़ाई लड़नी पड़ी और अंततः लाखों युवा क्रांतिकारियों को अपनी जान भी गंवानी पड़ी। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में लगभग 7.5 लाख लोगों को अपने जान की कुर्बानी देनी पड़ी थी जिसमें अधिकांश युवा ही थे जिनकी उम्र 15 से 40 वर्ष के बीच थी। इन क्रांतिकारियों के रक्त से राष्ट्रभक्ति के जो बीज अंकुरित हुए, उनका हमारे देश की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण योगदान है। क्रांतिकारियों ने अपने गुप्त संगठन बनाये, हथियार एकत्र किये, सरकारी खजानों को लूटा तथा बदनाम अंग्रेज अफसरों और देशद्रोहियों की हत्याएं कीं। इनकी गतिविधियां सबसे अधिक तेज महाराष्ट्र, बंगाल और पंजाब में थीं। देश के अन्य भागों एवं विदेशो में भी क्रांतिकारी संगठन बनाये गये थे। उनके संघर्षों का ही परिणाम है कि भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हो सका।

युवा क्रांतिकारियों में मंगल पांडे, शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, असफाक उल्ला खान, सुखदेव और राजगुरु, राम प्रसाद बिस्मिल, मदनलाल ढींगरा, वीर सावरकर, खुदीराम बोस, सुभाष चंद्र बोस, अल्लूरी सीताराम राजू आदि का नाम काफी प्रसिद्ध है तथा प्रमुखतया से लिया जाता है। भारत को आजाद कराने में इन क्रांतिकारियों का योगदान सबसे ज्यादा है, ये क्रन्तिकारी ही थे जिनके कार्यों ने अंग्रेजों के मन में भय उत्पन्न किया। स्वतंत्रता दिलाने में भारत के कई स्वतंत्रता सेनानियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। भारत को स्वतंत्रता दिलाने में कई ऐसे गुमनाम सेनानी भी शामिल थे, जिनका आज तक किसी भी किताब में जिक्र नहीं किया गया है, किंतु भारत की स्वतंत्रता में उनका योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने माँ भारती को आजाद कराने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। इस 15 अगस्त को भारत अपनी आजादी के 75 साल पूरे करेगा। ये आजादी का अमृत महोत्सव है। आजादी के अमृत महोत्सव पर सभी क्रांतिकारियों को हमारा नमन है। आज हम उन्हीं के त्याग, बलिदान के बदौलत सभी बंधनों से मुक्त हैं और अपना यथासंभव विकास कर पा रहे हैं। उनके योगदान, त्याग–बलिदान, उपकार को हम कभी नहीं भूलेंगे। युवा क्रांतिकारियों ने ना केवल अंग्रेजों से लोहा लिया बल्कि अपने पीछे एक ऐसा आदर्श भी छोड़ गए जो आज भी देशवासियों के लिए अनुकरणीय है। समाज और संस्कृति के जागरण में भी उनके महत्तर योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

वर्ष 1857 से स्वतंत्रता आंदोलन की शुरुआत मानी जाती है। वर्ष 1857 में मंगल पांडे के नेतृत्व में बैरकपुर छावनी में सैनिकों ने विद्रोह कर दिया था। मंगल पांडे सन 1849 में 22 साल की उम्र में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में शामिल हुए थे। वे बैरकपुर की सैनिक छावनी में "34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री" की पैदल सेना में एक सिपाही थे. यहीं पर गाय और सुअर की चर्बी वाले राइफल के नए कारतूसों का इस्तेमाल शुरू हुआ। इसके चलते हिंदू और मुस्लिम सैनिकों में आक्रोश बढ़ गया। नौ फरवरी 1857 को मंगल पांडे ने गाय और सुअर की चर्बी से बनने वाले नए कारतूस के इस्तेमाल से इनकार कर दिया। इसे अंग्रेजी हुकूमत ने अनुशासनहीनता माना। 29 मार्च सन 1857 को अंग्रेज अफसर मेजर ह्यूसन मंगल पांडेय से उनकी राइफल छीनने लगे। इस दौरान मंगल पांडे ने ह्यूसन को मार डाला। इसके अलावा अंग्रेज अधिकारी लेफ्टिनेन्ट बॉब को भी मार डाला। इसी के साथ मंगल पांडे ने अंग्रेजों के खिलाफ जंग छेड़ दी। अंग्रेजों को मारने के कारण उनको एक महीने के अंदर ही 8 अप्रैल, 1857 को फांसी पर लटका दिया गया। मंगल पांडे की मौत के कुछ समय पश्चात प्रथम स्वतंत्रता संग्राम शुरू हो गया था जिसे 1857 का विद्रोह कहा जाता है।

झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई स्वतंत्रता सेनानी थी। उन्होंने अपनी अंतिम सांस तक अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। वह अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहती थीं। वर्ष 1850 में लक्ष्मीबाई का विवाह झांसी के राजा गंगाधर राव से हुआ। वर्ष 1851 में उनको पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई किंतु चार माह बाद ही उस बालक का निधन हो गया। राजा गंगाधर राव को इतना गहरा धक्का पहुंचा कि वह फिर स्वस्थ न हो सके और 21 नवंबर 1853 को चल बसे। राजा गंगाधर राव ने अपने जीवनकाल में ही अपने परिवार के बालक दामोदर राव को दत्तक पुत्र मानकर अंग्रेजी सरकार को सूचना दे दी थी, लेकिन 27 फरवरी 1854 को लार्ड डलहौजी ने हड़प नीति के अंतर्गत दत्तक पुत्र को अस्वीकार कर दिया और झांसी को अंग्रेजी राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी। 7 मार्च 1854 को झांसी पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। यहीं से भारत की प्रथम स्वतंत्रता क्रांति

* *आशुलिपिक ग्रेड–II, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा*

का बीज प्रस्फुटित हुआ। अंग्रेजों की राज्य हड़पने की लिप्सा नीति से उत्तरी भारत के नवाब और राजे–महाराजे असंतुष्ट हो गए और सभी में विद्रोह की आग भभक उठी। रानी लक्ष्मीबाई ने इसको स्वर्णावसर माना और क्रांति की ज्वालाओं को अधिक सुलगाया तथा अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने की योजना बनाई। नवाब वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल, अंतिम मुगल सम्राट की बेगम जीनत महल, स्वयं मुगल सम्राट बहादुर शाह, नवाब अली बहादुर, नाना साहब के मंत्री अजीमुल्ला खान, वानपुर के राजा मर्दनसिंह और तांत्या टोपे आदि ने महारानी लक्ष्मीबाई के इस कार्य में सहयोग दिया। पूरे देश में सुसंगठित और सुदृढ़ रूप से क्रांति को कार्यान्वित करने की तारीख 31 मई 1857 निश्चित की गई, लेकिन इससे पूर्व ही क्रांति की ज्वाला प्रज्ज्वलित हो गई और 7 मई 1857 को मेरठ में तथा 4 जून 1857 को कानपुर में भीषण विद्रोह हुआ। कानपुर 28 जून 1857 को स्वतंत्र हो गया। अंग्रेजों ने अपनी सेना को सुसंगठित कर विद्रोह को दबाने की कोशिश की। अंग्रेजों ने सागर, गढकोटा, शाहगढ़, मदनपुर, वानपुर और तालबेहट पर अधिकार कर लिया। फिर वे झांसी की ओर बढ़े और अपना मोर्चा कैमासन पहाड़ी के मैदान में पूर्व और दक्षिण के मध्य लगा लिया। लक्ष्मीबाई पहले से ही सतर्क थी। 23 मार्च 1858 को झांसी का ऐतिहासिक युद्ध शुरू हुआ। कुशल तोपची गुलाम गौस खां ने लक्ष्मीबाई के आदेशानुसार तोपों के लक्ष्य साधकर ऐसे गोले फेंके कि पहली बार में ही अंग्रेजी सेना के छक्के छूट गए। लक्ष्मीबाई ने वीरतापूर्वक झांसी की सुरक्षा की और अपनी छोटी–सी सशस्त्र सेना से अंग्रेजों का बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया। वे अपनी पीठ के पीछे दामोदर राव को कसकर घोड़े पर सवार हो, अंग्रेजों से युद्ध करती रहीं। रानी की वीरता और साहस का लोहा अंग्रेज मान गए लेकिन उन्होंने रानी का पीछा किया। रानी का घोड़ा बुरी तरह घायल हो गया और अंत में वीरगति को प्राप्त हुआ, लेकिन रानी ने साहस नहीं छोड़ा और शौर्य का प्रदर्शन किया। रानी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया और वहां के किले पर अधिकार कर लिया। 18 जून 1858 को ग्वालियर का अंतिम युद्ध हुआ और रानी ने अपनी सेना का कुशल नेतृत्व किया। वे घायल हो गईं और अंततः उन्होंने वीरगति प्राप्त की। रानी लक्ष्मीबाई ने स्वातंत्र्य युद्ध में अपने जीवन की आहूति देकर जनता को राष्ट्रीय चेतना प्रदान की और स्वतंत्रता के लिए बलिदान का संदेश दिया।

आजाद... शब्द ध्यान आते ही हमारे मन में मूंछों को ताव देते एक नौजवान की वह तस्वीर सामने आ जाती है जिसे पूरी दुनिया चंद्रशेखर आजाद के नाम से जानती है। वह एक महान भारतीय क्रान्तिकारी थे. उनकी उग्र देशभक्ति और साहस ने उनकी पीढ़ी के लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। 1920–21 के वर्षों में वह गांधीजी के असहयोग आंदोलन से जुड़े, भारतीय क्रन्तिकारी, काकोरी ट्रेन डकैती (1926), वाइसराय की ट्रैन को उड़ाने का प्रयास (1926), लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए सॉन्डर्स पर गोलीबारी की (1928), भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के साथ मिलकर हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सभा का गठन भी किया था। जब वह जेल गए थे वहां पर उन्होंने अपना नाम 'आजाद', पिता का नाम 'स्वतंत्रता' और 'जेल' को उनका निवास बताया था। ऐसी शक्तिशाली सरकार जिसका कभी सूर्य अस्त नहीं होता था, वह भी उन्हें जीवित रहते जंजीरों में जकड़ नहीं पाई। 27 फरवरी 1931 को प्रयागराज के अल्फ्रेड पार्क में शहीद होने के पहले तक पुलिस आजाद को छू भी नहीं पाई। उन्होंने अंग्रेजों के हाथों मरने की बजाय खुद से मौत को गले लगाना ठीक समझा। आजाद ने खुद को गोली मार ली और शहीद हो गए। जब वह शहीद हुए तब उनकी उम्र 25 साल थी। चंद्रशेखर आजाद अपनी आखिरी सांस तक आजाद ही रहे।

जलियांवाला बाग हत्याकांड ने बालक चंद्रशेखर के मन को झकझोर कर रख दिया था। जिस बेटे को मां संस्कृत का विद्वान बनाना चाहती थीं, वह देश को आजाद कराने की राह पर चल पड़ा। असहयोग आंदोलन चौरी–चौरा कांड के बाद बीच में वापस हुआ तो आजाद को लगा कि सिर्फ शांतिपूर्ण तरीके से आजादी नहीं मिलने वाली। भारतीय स्वतन्त्रता के लिए सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से ब्रिटिश राज को समाप्त करने के उद्देश्य से उन्होंने हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन नामक एक क्रांतिकारी संगठन का गठन कानपुर में किया। बाद में यही हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन बना जिसमें भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल, योगेश चन्द्र चटर्जी, योगेन्द्र शुक्ला, शचींद्रनाथ सान्याल, अशफाकउल्लाह खान, रोशन सिंह, राजेंद्र लाहिड़ी, भगत सिंह, भगवती चरण वोहरा और सुखदेव आदि जैसे महान क्रांतिकारी शामिल हुए। अगले दशक तक इन क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश हुकूमत के मन में खौफ पैदा कर दिया। देश में अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति की लौ तेजी से जलने लगी और अंततः अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा।

भगत सिंह भारत के सबसे कम उम्र के स्वतंत्रता सेनानी थे। वे सिर्फ 23 वर्ष के थे जब उन्होंने अपने देश के लिए फांसी को गले लगाया था। वह मार्क्सवादी विचारधारा से काफी प्रभावित थे। जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगत सिंह की जिंदगी पर काफी असर डाला। इसके बाद उन्होंने लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर नौजवान भारत सभा की शुरुआत की और आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। 1922 में चौरी चौरा कांड में जब महात्मा गांधी ने ग्रामीणों का साथ नहीं दिया तो भगत सिंह निराश हो गए। तब वह चंद्रशेखर आजाद के गदर दल में शामिल हो गए। इसके बाद वर्ष 1927 में काकोरी कांड में राम प्रसाद बिस्मिल समेत चार क्रांतिकारियों को फांसी और 16 को आजीवन कारावास की सजा मिलने पर भगत सिंह भड़क गए। इसके बाद उन्होंने चंद्रशेखर आजाद की हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन को हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के रूप में बदला। इसका उद्देश्य आजादी के लिए नए युवाओं को तैयार करना था। वर्ष 1928 में लाला लाजपत राय की मौत ने उनको अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए उत्तेजित किया था। उन्होंने हिंसक प्रतिरोध का रास्ता चुना। इसका बदला भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 1928 में लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज अधिकारी जेपी सांडर्स की हत्या करके लिया। इसके बाद भगत सिंह ने क्रांतिकारी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर नई दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेंट्रल एसेंबली के सभागार में बम फेंकते हुए क्रांतिकारी नारे लगाए थे। इसके साथ आजादी के लिए पर्चे भी लहराए थे। इसे अंजाम देने के बाद भगत सिंह भागे नहीं, बल्कि उन्होंने गिरफ्तारी दी। उन पर 'लाहौर षड़यंत्र' का मुकदमा चला और अंग्रेजी हुकूमत ने 23 मार्च, 1931 की रात उन्हें फांसी पर लटका दिया। उस वक्त उनकी उम्र केवल 23 साल थी। अंग्रेज सरकार ने भगत सिंह को फांसी देकर समझ लिया था कि उन्होंने

उनका खात्मा कर दिया, परंतु यह उनकी भूल थी। भगत सिंह अपना बलिदान देकर अंग्रेजी साम्राज्य की समाप्ति का अध्याय शुरू कर चुके थे। भगत सिंह जैसे लोग कभी मरते नहीं, वे अत्याचार के खिलाफ हर आवाज के रूप में जिन्दा रहेंगे और युवाओं का मार्गदर्शन करते रहेंगे। उनका नारा 'इन्कलाब जिन्दाबाद' सदा युवाओं के दिल में जोश भरता रहेगा।

हंसते–हंसते फांसी पर चढ़ने वाले युवा क्रांतिकारियों में एक नाम राजगुरु का भी है। राजगुरु संस्कृत की पढ़ाई करने के लिए वाराणसी गए थे जहां वे चंद्रशेखर आजाद के हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़ गए। अंग्रेज अफसर सॉन्डर्स की हत्या में राजगुरु भी शामिल थे। एसेंबली में बम ब्लास्ट करने में भी राजगुरु ने हिस्सा लिया। 23 मार्च 1931 को 23 साल की उम्र में राजगुरु को भी भगत सिंह और सुखदेव के साथ फांसी दे दी गई। वे तीनों यह गुनगुनाते हुए फांसी पर झूल गए–

'दिल से निकलेगी न मर कर भी वतन की उलफत,
मेरी मिट्टी से भी खुश्बू–ए–वतन आएगी'

सुखदेव भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान् क्रान्तिकारी थे। स्वतंत्र भारत के निर्माण के लिए भारत–माता के कितने शूरवीरों ने हंसते–हंसते अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था, उन्हीं महान् शूरवीरों में 'अमर शहीद सुखदेव' का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है। वे लाला लाजपत राय से काफी प्रभावित थे। उन्हीं के जरिए वे चंद्रशेखर आजाद की टीम में शामिल हुए। लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए जब चंद्रशेखर ने प्लान बनाया तो सुखदेव भी उसमें शामिल हुए। जेल में रहते हुए भी सुखदेव ने राजनीतिक बंदियों के साथ किए जा रहे व्यवहार के खिलाफ आंदोलन चलाया था। 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, राजगुरु के साथ सुखदेव को भी फांसी दी गई। फांसी के वक्त सुखदेव की उम्र भी महज 23 साल थी।

बटुकेश्वर दत्त भारत के प्रसिद्ध क्रांतिकारियों में से एक थे। उन्होंने आगरा में स्वतंत्रता आंदोलन को संगठित करने में उल्लेखनीय कार्य किया था। सन 1924 में कानपुर में बटुकेश्वर दत्त की भगत सिंह से भेंट हुई थी। इसके बाद उन्होंने 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' के लिए कानपुर में कार्य करना प्रारंभ किया और इसी क्रम में बम बनाना भी सीखा। विदेशी सरकार जनता पर जो अत्याचार कर रही थी, उसका बदला लेने और उसे चुनौती देने के लिए क्रान्तिकारियों ने अनेक काम किए। काकोरी ट्रेन की लूट और लाहौर के पुलिस अधिकारी सांडर्स की हत्या इसी क्रम में हुई। तभी सरकार ने केन्द्रीय असेम्बली में श्रमिकों की हड़ताल को प्रतिबंधित करने के उद्देश्य से एक बिल पेश किया। क्रान्तिकारियों ने निश्चय किया कि वे इसके विरोध में ऐसा कदम उठायेंगे, जिससे सबका ध्यान इस ओर जायेगा। 8 अप्रैल, 1929 को भगत सिंह के साथ बटुकेश्वर दत्त ने दर्शक दीर्घा से केन्द्रीय असेम्बली के अन्दर बम फेंक कर धमाका किया। बम इस प्रकार बनाया गया था कि, किसी की भी जान न जाए। बम के साथ ही 'लाल पर्चे' की प्रतियाँ भी फेंकी गईं, जिनमें बम फेंकने का क्रान्तिकारियों का उद्देश्य स्पष्ट किया गया था। बम विस्फोट बिना किसी को नुकसान पहुंचाए सिर्फ पर्चों के माध्यम से अपनी बात को प्रचारित करने के लिए किया गया था। उस दिन भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार की ओर से 'पब्लिक सेफ्टी बिल' और 'ट्रेड डिस्प्यूट बिल' लाया गया था, जो इन लोगों के विरोध के कारण एक वोट से पारित नहीं हो पाया। असेम्बली में बम फेंकने के बाद बटुकेश्वर दत्त तथा भगत सिंह ने भागकर बच निकलने का कोई प्रयत्न नहीं किया, क्योंकि वे अदालत में बयान देकर अपने विचारों से सबको परिचित कराना चाहते थे। साथ ही इस भ्रम को भी समाप्त करना चाहते थे कि काम करके क्रान्तिकारी तो बच निकलते हैं, अन्य लोगों को पुलिस सताती है।

भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त दोनों गिरफ्तार हुए, उन पर मुकदमा चलाया गया। 6 जुलाई, 1929 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने अदालत में जो संयुक्त बयान दिया, उसका लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इस मुकदमें में दोनों को आजीवन कारावास की सजा हुई। सजा सुनाने के बाद इन लोगों को लाहौर फोर्ट जेल में डाल दिया गया। यहाँ पर भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त पर 'लाहौर षड़यंत्र केस' का मुकदमा चलाया गया। उल्लेखनीय है कि साइमन कमीशन के विरोध–प्रदर्शन के दौरान लाहौर में लाला लाजपत राय को अंग्रेजों के इशारे पर अंग्रेजी राज के सिपाहियों द्वारा इतना पीटा गया कि उनकी मृत्यु हो गई। इस मृत्यु का बदला अंग्रेजी राज के जिम्मेदार पुलिस अधिकारी को मारकर चुकाने का निर्णय क्रांतिकारियों द्वारा लिया गया था। इस कार्रवाई के परिणामस्वरूप 'लाहौर षड़यंत्र केस' चला, जिसमें भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी की सजा दी गई थी, पर बटुकेश्वर दत्त के विरुद्ध पुलिस कोई प्रमाण नहीं जुटा पाई। उन्हें आजीवन कारावास की सजा भोगने के लिए अण्डमान भेज दिया गया। जेल में ही उन्होंने 1933 और 1937 में ऐतिहासिक भूख हड़ताल की। सेल्यूलर जेल से 1937 में वे बांकीपुर केन्द्रीय कारागार, पटना में लाए गए और 1938 में रिहा कर दिए गए। काला पानी से गंभीर बीमारी लेकर लौटे बटुकेश्वर दत्त फिर गिरफ्तार कर लिए गए और चार वर्षों के बाद 1945 में रिहा किए गए।

अमर शहीद मदन लाल ढींगरा महान् देशभक्त, धर्मनिष्ठ क्रांतिकारी थे। भारतीय स्वतंत्रता की चिंगारी को अग्नि में बदलने का श्रेय महान शहीद मदन लाल ढींगरा को ही जाता है । वह पढ़ाई के लिए लंदन गए थे और वहीं वह विनायक दामोदर सावरकर और श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे कट्टर देशभक्तों के संपर्क में आए। सावरकर ने उन्हें हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया। वह 'अभिनव भारत मंडल' के सदस्य होने के साथ ही 'इंडिया हाउस' नाम के संगठन से भी जुड़ गए जो भारतीय विद्यार्थियों के लिए राजनीतिक गतिविधियों का आधार था। इस दौरान सावरकर और ढींगरा के अतिरिक्त ब्रिटेन में पढ़ने वाले अन्य बहुत से भारतीय छात्र भारत में खुदीराम बोस, कनानी दत्त, सतिंदर पाल और कांशीराम जैसे देशभक्तों को फाँसी दिए जाने की घटनाओं से तिलमिला उठे और उन्होंने बदला लेने की ठानी। 1 जुलाई 1909 को 'इंडियन नेशनल एसोसिएशन' के लंदन में आयोजित वार्षिक दिवस समारोह में बहुत से भारतीय और अंग्रेज शामिल हुए। शहीद मदन लाल ढींगरा जी इस समारोह में अंग्रेजों को सबक सिखाने के उद्देश्य से गए थे। अंग्रेजों के लिए भारतीयों से जासूसी कराने वाले ब्रिटिश अधिकारी सर कर्जन वाइली ने जैसे ही हाल में प्रवेश किया तो ढींगरा जी ने रिवाल्वर से उस पर चार गोलियां दाग दीं। कर्जन को बचाने की कोशिश करने वाला पारसी डॉक्टर कोवासी ललकाका भी ढींगरा जी की गोलियों से मारा गया। इसी मामले में उनको मृत्युदण्ड दिया गया और 17 अगस्त 1909 को फाँसी दे दी गयी। उन्होंने भारत माँ की आजादी के लिए जीवन–पर्यन्त अनेक प्रकार के बहुत कष्ट सहन किए, परन्तु अपने

मार्ग से विचलित नहीं हुए और स्वाधीनता प्राप्ति के लिए फाँसी पर झूल गए।

सम्पूर्ण विश्व में श्रद्धा–विश्वास और सम्मान के साथ नेताजी की उपाधि पाने वाले सुभाष चन्द्र बोस की देशभक्ति का आदर्श आज भी हमें प्रेरित और उत्साहित करता है और आने वाली पीढ़ी को भी इसी तरह भाव विभोर करता रहेगा। समृद्ध परिवार, असाधारण मेधा , बेहतर शैक्षिक माहौल– कहने के लिए तो एक शानदार कॅरियर बनाने की वो सारी चीजें उनके पास मौजूद थीं, जिनकी दरकार छात्रों को होती है। लेकिन सुभाष ने वो चुना जिसकी जरूरत भारत को सर्वाधिक थी– आजादी की। 1918 में उन्होंने स्कॉटिश चर्च कॉलेज (कलकत्ता यूनिवर्सिटी) ने स्नातक किया। उसके बाद आईसीएस की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। वह चाहते तो एक सुविधाजनक, ऐशोआराम का जीवन उनके कदमों पर होता। लेकिन इसे ठुकराकर उन्होंने देश की स्वतंत्रता का संघर्षमय मार्ग चुना। उन दिनों कांग्रेस में नरम और गरम दो प्रकार के नेता हुआ करते थे। नेताजी गरम दली माने जाते थे। 1939 में वह कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। किंतु गांधीजी से मतभेद होने के कारण उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया। उन्होंने महसूस किया कि शांतिपूर्वक तथा आग्रह करके आजादी हासिल नहीं हो सकती। उन्होंने स्वराज्य प्राप्ति के लिए 'फारवर्ड ब्लॉक' नाम का अलग दल बनाया और राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए कार्य करते रहे। उनके उत्साह, सूझ–बूझ और बेमिसाल योजना के कार्यान्वयन से अंग्रेजी सरकार कांपने लगी। अंग्रेजी सरकार के खिलाफत के कारण उन्हें घर में ही नजरबंद कर दिया गया जहां से वह वेश बदलकर फरार हो गये और काबुल होते हुए जर्मनी पहुंच गये। वहां उन्होंने सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त किया और एक अच्छा जनरल साबित हुए। जर्मनी से वे जापान आए और द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ जापान की सहायता से वर्ष 1942 में भारतीय राष्ट्रीय सेना "आजाद हिन्द फौज" का निर्माण किया। ब्रिटिश सरकार के प्रशिक्षित सैनिकों के छक्के छुड़ा देने वाली झांसी रेजीमेंट की वीरांगनाओं के अदम्य साहस, शौर्य और वीरता को कभी भुलाया नहीं जा सकता। नेताजी ने दुनिया में जहां पहली महिला फौज का गठन किया, वहीं कूटनीतिक प्रयासों के जरिये आजाद हिंद सरकार बनाई। भारतीयों के साथ बर्मा, सिंगापुर और रंगून के एनआरआईयों ने नेता जी को तराजू में बिठाकर 26 बोरे सोने, चांदी, हीरे, जवाहरात और पैसों से तौल दिया था। ऐसा उन्होंने आजाद हिंद फौज के फंड के लिए किया था। आजाद हिंद फौज के गठन के साथ ही नेता जी ने आजादी का बिगुल पूरे भारत में फूंक दिया था। उन्होंने सबको संबोधित करते हुए 'करो सब न्योछावर, बनो सब फकीर' का नारा दिया। इस नारे के बाद रंगून में आजाद हिंद फौज के बैंक में 20 करोड़ रुपए एक दिन में जमा हो गए थे। इसके साथ ही सबने देश की आजादी के लिए कुछ भी करने की शपथ भी ली थी।

उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। 05 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हॉल के सामने "सुप्रीम कमांडर" बन कर सेना को संबोधित करते हुए "दिल्ली चलो" का नारा लगाने वाले सुभाष चन्द्र बोस ही थे। उन्होंने सैनिकों को उत्साहित करने वाले भाषण में कहा "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।" उत्साह से भरकर उनकी सेना ने मणिपुर और इम्फाल के मोर्चा तक ब्रिटिश साम्राज्य के छक्के छुड़ाए। बर्मा एवं मलाया तक अंग्रेजों को पराजित कर भगाया। किंतु द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की हार के बाद नेताजी को नया रास्ता ढूंढना बहुत आवश्यक था। उन्होंने रूस से सहायता मांगने का निश्चय लिया और 18 अगस्त 1945 को हवाई जहाज से मंचूरिया की ओर जा रहे थे। इस सफर के दौरान वे लापता हो गए। 23 अगस्त 1945 को एक वायुयान दुर्घटना में उनकी मृत्यु के समाचार पर किसी को विश्वास नहीं हुआ। भारत की स्वतंत्रता के इतिहास में नेताजी का नाम सदा के लिए अमर रहेगा। उन्होंने पूरी दुनिया की खाक छानी, फंड जुटाया, आईएनए का गठन किया और ब्रिटिश शासन की जडें हिला दीं। उनके प्रति लोगों के अनन्य दुर्लभ प्रेम की भावना का ही परिणाम था कि बीसवीं सदी के अंत तक हम भारतवासी यह मानते रहे कि नेताजी की मृत्यु नहीं हुई है और आवश्यकता पड़ने पर वह पुनः देश की बागडोर संभालने को कभी भी आ सकते हैं। नेताजी के पास देश की समस्याओं का समाधान करने का स्पष्ट विजन था। नेताजी आज हमारे बीच सशरीर उपस्थित नहीं हैं, पर देशभक्ति का उनका अमर संदेश आज भी हमें देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा देता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासियों ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। आदिवासी स्वातंत्र्य प्रिय होते हैं, उन्हें किसी बंधन में अथवा पराधीनता में नहीं जकड़ा जा सकता है, इसीलिये उन्होंने सबसे पहले जंगलों से ही विदेशी आक्रांताओं एवं दमनकारियों के विरुद्ध मोर्चा खोला और उनका यह संघर्ष देश के स्वतंत्र होने तक निरंतर चलता रहा। ऐसे प्रकृति प्रेमी आदिवासी क्रांतिकारियों की लंबी श्रृंखला हैं। कई परिदृश्य में छाए रहे और कई अनाम रहे जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन स्वतंत्रता के संघर्ष में गुजारा। अल्लूरी सीताराम राजु भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी थे। वर्ष 1882 के मद्रास वन अधिनियम के तहत अंग्रेजों ने आदिवासियों के उनके वन आवासों में मुक्त आवाजाही तथा उनके पारंपरिक खेती प्रणाली पोडु को प्रतिबंधित कर दिया। बहुत कम उम्र में राजु ने गंजम, विशाखापत्तनम और गोदावरी में पहाड़ी लोगों के असंतोष को अंग्रेज़ो के खिलाफ अत्यधिक प्रभावी गुरिल्ला प्रतिरोध में बदल दिया। अंग्रेज़ो के प्रति बढ़ते असंतोष ने 1922 के रम्पा विद्रोह/मन्यम विद्रोह को जन्म दिया, जिसमें अल्लूरी सीताराम राजु ने एक नेतृत्वकर्त्ता के रूप में प्रमुख भूमिका निभाई। जब अंग्रेज उन्हें पकड़ नहीं पाए तो आदिवासियों को विभिन्न यातनाएं देना शुरू कर दिया। क्रांतिकारी राजु ने यह सोचकर आत्मसमर्पण कर दिया कि यदि मैं आत्म समर्पण कर दूँ तो अंग्रेज़ इन्हें तंग करना बंद कर देंगे। किंतु कायर अंग्रेजों ने उस महान क्रांतिकारी को नदी किनारे ही एक वृक्ष से बांधकर गोलियों से भून दिया गया। एक क्रांतिकारी की इससे श्रेष्ठ शहादत और क्या हो सकती थी। इस बलिदान के साक्ष्य थे गोदावरी नदी और नल्लईमल्लई की पहाड़ियां, जहां आज भी अल्लूरी सीताराम राजु जिंदा हैं– आदिवासियों की आत्मा में देवता स्वरूप, लोकगीतों में लोकनायक के रूप में।

देश की स्वाधीनता के लिए पुरुषों के साथ स्त्रियों ने भी बराबर सहभागिता की है। सुभद्रा कुमारी चौहान, हरदेवी, कमला बाई किबे, शिवरानी देवी, जानकी देवी, सुशीला दीदी, कमला चौधरी, विद्यावती कोकिल, गोपाल देवी, उर्मिला देवी, सत्यवती मलिक तथा पुरुषोंर्थवती देवी, तोरण देवी, बुंदेल बाला, जनक दुलारी, कुमारी राजेश्वरी पटेल, सूर्य देवी दीक्षित, ललिता देवी, अनूप सुंदरी, कमला कुमारी, राम कुमारी, उषा देवी मित्रा, राजेश्वरी देवी नलिनी, तारा पांडे, रामेश्वरी मिश्र चकोरी, शांति अग्रवाल, आशारानी व्होरा इत्यादि का नाम

उल्लेखनीय है। उन्होंने सृजनात्मक योगदान के साथ–साथ स्वतंत्रता का स्वप्न देखा था और यथाशक्ति योगदान भी दिया था।

भारत की आजादी के प्रथम सोपान कहे जाने वाले 1857 में हुए स्वतंत्रता संग्राम से पहले भी अंग्रेजों के खिलाफ देश में कई आंदोलन हुए थे। इन आंदोलनों में फकीर आंदोलन (1776–77), सन्यासी आंदोलन, पाठ्यगारों का आंदोलन (1801–1805), वेल्लोर आंदोलन (1806), नायक आंदोलन (1806), त्रावणकोर आंदोलन (1808), चेरो आंदोलन (1802), बरेली–अलीगढ़ के आंदोलन (1816–1817), ओडिशा में पायकों का आंदोलन (1821), कित्तूर का आंदोलन (1824), असम में अहोम आंदोलन (1824), पाल और कुर्ग आंदोलन (1832–37), बहाबी आंदोलन (1830–31), गोंड आंदोलन (1833–57), कोल आंदोलन (1824–1850) प्रमुख थे। इन आंदोलनों में भी युवाओं ने महती भूमिका निभाई थी।

भारत का इतिहास बर्बर आक्रांताओं से भरा है, जिन्होंने देश को लूटा और पीछे छोड़ गए विध्वंस का एक लंबा सिलसिला। हमारे इतिहास ने ऐसे षड्यंत्रकारी उपनिवेशवादी देखे, जिन्होंने 'बांटो और राज करो' की नीति के जरिये हमें सदियों तक गुलाम बनाकर रखा। परस्पर विद्वेष और वैमनस्य के उदाहरणों के बावजूद हमारे इतिहास में पृथ्वीराज चौहान, छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, रानी लक्ष्मीबाई, अल्लूरी सीताराम राजू, वीरपांड्या कट्टाबोम्मन, लचित बोरफुकन और रानी अब्बक्का जैसे तमाम अनुकरणीय उदाहरण भी हैं। आक्रमणकारी आक्रांता और उपनिवेशवादी सत्ता ने प्राचीन भारतीय संस्कृति की जड़ों को उखाड़ने की भरसक कोशिश तो की, लेकिन वे हमारी सांस्कृतिक एकता और सभ्यतागत निरंतरता के सूत्र को तोड़ न सके।

युवा किसी भी देश के विकास में महत्वपूर्ण होते हैं, उन्हें अच्छे बनने की प्रेरणा इतिहास से मिलती है। भारत को युवाओं का देश कहा जा सकता है और देश की तरक्की में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। आज ही नहीं, आजादी के पहले से ही युवा देश के विकास और आजादी में काफी आगे रहे हैं। देश के पूरे स्वतंत्रता आंदोलन में युवाओं का जोश व मजबूत इरादा हर जगह नजर आया है। चाहे वह महात्मा गांधी के नेतृत्व में अंहिसात्मक आंदोलन या फिर ताकत के बल पर अंग्रेजों को निकाल बाहर करने का इरादा लिए युवा क्रांतिकारी, सभी के लिए इस दौरान देश की आजादी के सिवाय बाकी सभी चीजें गौण हो गई थीं। स्कूल, कॉलेज राष्ट्रीय गतिविधियों के प्रमुख केंद्र बन गए थे। इस दौरान शिक्षा का मतलब ही राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली बन गया था जिसके अंतर्गत अंग्रेजी स्कूलों, मिशनरी शिक्षा संस्थानों का बहिष्कार किया गया। महर्षि विवेकानंद, महर्षि अरविंद घोष, महर्षि दयानंद सरस्वती, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, सरदार वल्लभ भाई पटेल आदि के विचारों का युवाओं पर काफी प्रभाव पड़ा था। बेशक भारतीय संस्कृति और समाज के जागरण में इनके महत्तर योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता। स्वामी विवेकानंद का संकल्प राष्ट्र सेवा था। उन्होंने निराशा में गोते लगा रहे युवा वर्ग को उस समय *'उठो जागो लक्ष्य तक पहुंचे बिना रुको मत'* का मंत्र दिया तो वहीं भारत की गरिमा दोबारा स्थापित की। महर्षि अरविंद घोष ने युवा अवस्था में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक क्रांतिकारी के रूप में भाग लिया किंतु बाद में वे योगी बन गए। वे मानते थे कि राष्ट्रीयता महज राजनीतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि ईश्वर प्रदत्त धर्म है। राष्ट्र भूमि का टुकड़ा नहीं, माँ है जिसे बेड़ियों से मुक्त कराना धर्म है। आजादी का अमृत वर्ष उनकी 150वीं जयंती का साक्षी बना है जिन्होंने परतंत्र भारत में पहली बार 'पूर्ण स्वराज' का आह्वान किया और 'आध्यात्मिक राष्ट्रवाद' के प्रणेता बने।

आजादी के अमृत महोत्सव में क्रांतिकारियों के योगदान को रेखांकित करने की पहल प्रशंसनीय है। हमें उन्हें नहीं भुलाना चाहिए जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

बाल श्रमिक का दर्द

सतीश कुमार*

बाल श्रमिक बोला मालिक से, मालिक
दे दो पैसा।
अपनी माँ को जाकर देखूँ, उसका हाल
है कैसा ।।

मेरी माँ बीमार पड़ी है मैं उसको दवा दिलाऊँ
इस पैसे से अपनी माँ का अच्छा इलाज कराऊँ।
काम करूंगा मेहनत से मैं, आप कहोगे जैसा
अपनी माँ को जाकर देखूँ, उसका हाल है कैसा ।1।

बाल श्रमिक को मालिक ने देखा, और बोला बच्चे से
पैसा वैसा अभी नहीं है, काम करो तुम अच्छे से।
हाथ जोड़कर बच्चा बोला, मालिक करो ना ऐसा
अपनी माँ को जाकर देखूँ, उसका हाल है कैसा ।2।

माँ मेरी बीमार, मरेगी जो उसको दवा न दिलाई
दया करो मालिक मुझ पर, तुम दे दो मेरी कमाई।
ज्यादा ना मांगू, मांगू बस मेहनत अपनी का पैसा
अपनी माँ को जाकर देखूँ, उसका हाल है कैसा ।3।

गिड़गिड़ाया वह बहुत, मालिक को तनिक दया न आई
जब तक काम न होगा पूरा, तुझे दूँगा ना एक पाई।
आँखों से अश्रु बहता, और गिरता मोती के जैसा
अपनी माँ को जाकर देखूँ, उसका हाल है कैसा ।4।

बाल श्रमिक मन में कहता, प्रभु ऐसा बचपन न देना
बचपन से जो करें मजदूरी, ऐसा जीवन न देना।
बचपन बीता बाल श्रम में, मेरा भाग्य है कैसा
अपनी माँ को जाकर देखूँ, उसका हाल है कैसा ।5।

करके पूरा काम शाम को फिर मजदूरी मांगी
जाके दवा पिलाई माँ को, मैया उसकी जागी।
सिर पर हाथ रखा मैया ने, दृश्य होगा वो कैसा
द्वापर युग में देवकी–कृष्ण के पावन मिलन जैसा।6।

* *एमटीएस, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा*

स्वाधीनता आंदोलन में युवा क्रांतिकारियों का योगदान (II)

सुधा वोहरा*

'आओ झुक कर सलाम करें उनको, जिनके हिस्से में ये मुकाम आता है, खुशनसीब होता है वो खून जो देश के काम आता है'। ये पंक्तियाँ अक्सर उन स्वतंत्रता सेनानियों के लिए गुनगुनायी जाती रही हैं जिन्होंने खुद को देश के लिए कुर्बान कर दिया। जंग–ए–आजादी की लड़ाई में कूदने वाले आजादी के मतवालों ने देश को अंग्रेजों की गुलामी की जंजीरों से मुक्त करवाने के लिए अपना तन, मन, धन, सब कुछ देश के नाम कर दिया था। देश को आजाद कराने के लिए लाखों क्रांतिकारियों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, न जाने कितने वीर सपूतों ने युवा अवस्था में ही हंसते–हंसते मौत को गले लगा लिया था। इनमें असंख्य युवा क्रांतिकारी ऐसे भी थे जिनके सिर से उनके माता–पिता का साया उनके बाल्यकाल में ही उठ गया था, कोई पूरी तरह से अनाथ हो गए थे फिर भी अपनी परेशानियों एवं संघर्षों को दरकिनार करते हुए उन्होंने भारत माता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करवाने के लिए बहुत छोटी–सी उम्र में खुद को देश के लिए समर्पित कर दिया। इस प्रकार के अनेक क्रांतिकारियों के त्याग की कोई सीमा नहीं थी। देश की आन–बान और शान के लिए हंसते–हंसते अपने प्राणों की बाजी लगाने वाले इन अमर शहीदों की कुर्बानियों के कारण ही हम आज आजादी की सांस ले रहे हैं। आजादी के अमृत महोत्सव पर ऐसे महान स्वंतत्रता सेनानियों को शत–शत नमन।

खुदीराम बोस

खुद को देश के नाम समर्पित करने वाले ऐसे युवा क्रांतिकारियों में सबसे पहला एवं प्रमुख नाम आता है अमर सेनानी खुदीराम बोस का। गुलामी की बेड़ियों से जकड़ी भारत माता को आज़ाद कराने के लिए मात्र 18 साल की अल्पायु में फाँसी के फंदे को चूमने वाले खुदीराम का जन्म 03 दिसम्बर 1889 को पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले के बहुवैनी नामक गाँव में एक कायस्थ परिवार में बाबू त्रैलोक्यनाथ बोस के यहाँ हुआ था। उनकी माता का नाम लक्ष्मीप्रिया देवी था। खुदीराम के सिर से माता–पिता का साया बहुत जल्दी ही उठ गया था इसलिए उनका लालन–पालन उनकी बड़ी बहन ने किया। बालक खुदीराम के मन में देश को आजाद कराने की ऐसी लगन लगी कि नौवीं कक्षा के बाद ही पढ़ाई छोड़ दी और स्वदेशी आंदोलन में कूद पड़े। छात्र जीवन से ही ऐसी लगन मन में लिये इस नौजवान ने हिंदुस्तान पर अत्याचारी सत्ता चलाने वाले ब्रिटिश साम्राज्य को ध्वस्त करने के संकल्प में अलौकिक धैर्य का परिचय देते हुए पहला बम फेंका और मात्र 19वें वर्ष में हाथ में भगवद गीता लेकर हँसते–हँसते फाँसी के फंदे पर चढ़कर इतिहास रच दिया। स्कूल छोड़ने के बाद खुदीराम रिवोल्यूशनरी पार्टी के सदस्य बने और वन्दे

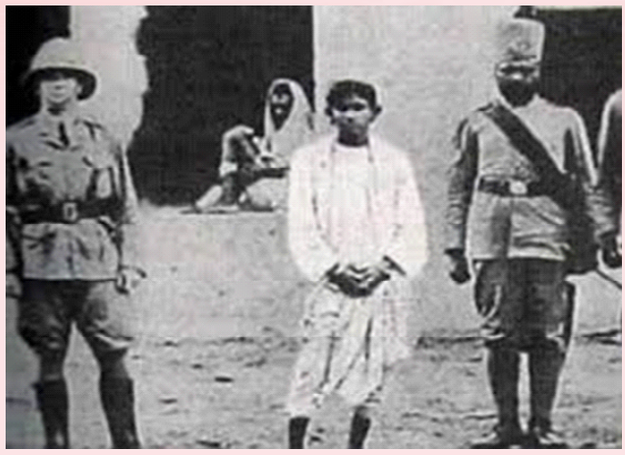

मातरम् पैंफलेट वितरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 1905 में बंगाल के विभाजन (बंग–भंग) के विरोध में चलाये गये आंदोलन में उन्होंने भी बढ़–चढ़कर भाग लिया। फरवरी 1906 में मिदनापुर में एक औद्योगिक तथा कृषि प्रदर्शनी लगी हुई थी। प्रदर्शनी देखने के लिये आसपास के प्रांतों से सैंकडों लोग आने लगे। बंगाल के एक क्रान्तिकारी सत्येन्द्रनाथ द्वारा लिखे 'सोनार बांगला' नामक ज्वलंत पत्रक (पैम्फलेट) की प्रतियाँ खुदीराम ने इस प्रदर्शनी में बाँटी। एक पुलिस वाला उन्हें पकडने के लिये भागा। खुदीराम ने इस सिपाही के मुँह पर घूँसा मारा और शेष पत्रक बगल में दबाकर भाग गये। इस प्रकरण में राजद्रोह के आरोप में सरकार ने उन पर अभियोग चलाया परंतु गवाही न मिलने से खुदीराम निर्दोष छूट गये। इतिहासवेत्ता मालती मलिक के अनुसार 28 फरवरी 1906 को खुदीराम बोस गिरफ्तार कर लिये गये लेकिन वह कैद से भाग निकले। लगभग दो महीने बाद अप्रैल में वह फिर से पकड़े गये। 16 मई 1906 को उन्हें रिहा कर दिया गया। 06 दिसंबर 1907 को खुदीराम ने नारायणगढ़ रेलवे स्टेशन पर बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर की विशेष ट्रेन पर हमला किया परंतु वह बच गया। सन 1908 में उन्होंने दो अंग्रेज अधिकारियों वाट्सन और पैम्फायल्ट फुलर पर बम से हमला किया लेकिन वे भी बच निकले।

मिदनापुर में 'युगान्तर' नाम की क्रांतिकारियों की गुप्त संस्था के माध्यम से खुदीराम क्रांतिकार्यों में पहले ही जुट चुके थे। 1905 में लॉर्ड कर्जन ने जब बंगाल का विभाजन किया तो उसके विरोध में सड़कों पर उतरे अनेकों भारतीयों को उस समय के कलकत्ता के मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड ने क्रूर दंड दिया। अन्य मामलों में भी उसने क्रांतिकारियों को बहुत कष्ट दिये थे। इसके परिणामस्वरूप किंग्सफोर्ड को पदोन्नति देकर मुजफ्फरपुर में सत्र न्यायाधीश के पद पर भेजा गया। 'युगान्तर' समिति की एक गुप्त बैठक में किंग्सफोर्ड को ही मारने का निश्चय हुआ। इस कार्य हेतु खुदीराम

*आशुलिपिक ग्रेड–I, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

तथा प्रफुल्लकुमार चाकी का चयन किया गया। खुदीराम को एक बम और पिस्तौल दी गयी। प्रफुल्लकुमार को भी एक पिस्तौल दी गयी। मुजफ्फरपुर में आने पर इन दोनों ने सबसे पहले किंग्सफोर्ड के बँगले की निगरानी की। उन्होंने उसकी बग्घी तथा उसके घोडे का रंग देख लिया। खुदीराम तो किंग्सफोर्ड को उसके कार्यालय में जाकर ठीक से देख भी आए थे।

30 अप्रैल 1908 को ये दोनों नियोजित काम के लिये बाहर निकले और किंग्सफोर्ड के बंगले के बाहर घोड़ागाड़ी से उसके आने की राह देखने लगे। बंगले की निगरानी हेतु वहाँ मौजूद पुलिस के गुप्तचरों ने उन्हें हटाना भी चाहा परंतु वे दोनों उन्हें योग्य उत्तर देकर वहीं रुके रहे। रात में साढ़े आठ बजे के आसपास क्लब से किंग्सफोर्ड की बग्घी के समान दिखने वाली गाड़ी आते हुए देखकर खुदीराम गाडी के पीछे भागने लगे। रास्ते में बहुत ही अंधेरा था। गाडी किंग्सफोर्ड के बंगले के सामने आते ही खुदीराम ने अंधेरे में ही आने वाली बग्घी पर निशाना लगाकर जोर से बम फेंका। हिंदुस्तान में इस पहले बम विस्फोट की आवाज उस रात तीन मील दूर तक सुनाई दी और कुछ दिनों बाद तो उसकी आवाज इंग्लैंड तथा यूरोप में भी सुनी गयी जब वहाँ इस घटना की खबर ने तहलका मचा दिया। यूँ तो खुदीराम ने किंग्सफोर्ड की गाड़ी समझकर बम फेंका था परंतु उस दिन किंग्सफोर्ड के क्लब से थोड़ी देर से बाहर आने के कारण वह बच गया। दैवयोग से गाडियाँ एक जैसी होने के कारण वकील प्रिंगल कैनेडी की निर्दोष पत्नी और पुत्री को अपने प्राण गँवाने पड़े। क्रांतिकारियों को दो निर्दोष महिलाओं की मौत का अफसोस था। पर अंग्रेजों को देश के बाहर निकालने के लिए वे हिंसा को जरूरी मानते थे। इस कांड पर 26 मई 1908 को प्रसिद्ध राष्ट्रवादी अखबार 'केसरी' की टिप्पणी थी, 'भारत में बम का आना अंग्रेजों के लिए 1857 के विद्रोह के बाद की सबसे बड़ी चौंकाने वाली घटना थी।'

साहस और जोश से भरे खुदीराम और प्रफुल्ल भागते समय हड़बड़ी में अपने जूते और चादर घटनास्थल पर छोड़ गए। बंगले के गार्ड की निगाह में जो दो युवक आए थे उनकी रात में ही तलाश शुरू हो गई। अंधेरे में भागने के लिए दोनों ने विपरीत रास्ते पकड़े। प्रफुल्ल चाकी अगले दिन नए कपड़ों–जूतों में समस्तीपुर रेलवे स्टेशन से मोकामा के लिए ट्रेन पर सवार हुए। उनके डिब्बे में ड्यूटी पर सिंहभूमि जाने के लिए दरोगा नंदलाल घोष भी सवार था। बीती रात की वारदात उसकी जानकारी में थी। दरोगा को प्रफुल्ल संदिग्ध नजर आए। बंगाली रंग–ढंग और बोलचाल के जरिये दरोगा ने चाकी को दोस्ती का झांसा दिया। मोकामा में पुलिस प्रफुल्ल को गिरफ्तार करने के लिए खड़ी थी। पुलिस की गिरफ्त में आने के बाद भी प्रफुल्ल ने हिम्मत नही हारी। एक पुलिसकर्मी को धक्का देकर वह भाग निकले। पर पीछे भागती पुलिस उन्हें घेर चुकी थी। उन्हें अहसास हो चुका था कि वह बहुत दूर नहीं जा पाएंगे। लेकिन उन्होंने जीते जी विदेशी सत्ता की पुलिस के हाथों न पड़ने की कसम खाई थी। प्रफुल्ल ने खुद को गोली मारकर कसम निभाई। देशद्रोही दरोगा नंदलाल घोष को क्रांतिकारियों ने नहीं बख्शा और कुछ महीने बाद 9 नवम्बर को गोली मारकर खत्म कर दिया। खुदीराम बोस भी उसी दिन (01 मई को) मुजफ्फरपुर स्टेशन से 20 मील दूर वैनी स्टेशन के नजदीक हैंडपंप पर पानी पीते समय पकड़े गए। वह भाग तो नहीं सके लेकिन पुलिस की गाड़ी में चढ़ते समय उन्होंने तेज आवाज में वंदेमातरम का उद्घोष करके वहां मौजूद भीड़ में जोश भर दिया। इस गिरफ्तारी का अंत निश्चित ही था। 11 अगस्त 1908 को उन्हें मुजफ्फरपुर जेल में फाँसी दे दी गयी। उस समय उनकी उम्र मात्र 18 वर्ष 08 माह 08 दिन थी।

विद्यार्थियों तथा अन्य लोगों ने शोक मनाया और कई दिन तक स्कूल कॉलेज सभी बंद रहे। शहादत के बाद खुदीराम इतने लोकप्रिय हो गये कि बंगाल के जुलाहे एक खास किस्म की धोती बुनने लगे जिसकी किनारी पर 'खुदीराम' लिखा होता था और बंगाल के नौजवान बड़े गर्व से वह धोती पहन कर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। क्रांतिवीर खुदीराम बोस का स्मारक बनाने की योजना कानपुर के युवकों ने बनाई और उनके पीछे असंख्य युवक इस स्वतंत्रता–यज्ञ में आत्मार्पण करने के लिये आगे आये। इतिहासवेत्ता शिरोल ने लिखा है कि 'बंगाल के राष्ट्रवादियों के लिए वह वीर शहीद और अनुकरणीय हो गये'। उनकी शहादत से समूचे देश में देशभक्ति की लहर उमड़ पड़ी थी। उनके साहसिक योगदान को अमर करने के लिए गीत रचे गए और उनका बलिदान लोकगीतों के रूप में मुखरित हुआ। उनके सम्मान में भावपूर्ण गीतों की रचना हुई जिन्हें बंगाल के लोक गायक आज भी गाते हैं। कुछ इतिहासकारों की यह धारणा है कि वे अपने देश के लिये फाँसी पर चढ़ने वाले सबसे कम उम्र के ज्वलंत तथा युवा क्रान्तिकारी देशभक्त थे। लेकिन खुदीराम से पूर्व 17 जनवरी 1872 को 68 कूकाओं के सार्वजनिक नरसंहार के समय 13 वर्ष का एक बालक भी शहीद हुआ था। उपलब्ध तथ्यानुसार उस बालक को, जिसका नंबर 50वाँ था, जैसे ही तोप के सामने लाया गया, उसने लुधियाना के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर कावन की दाढ़ी कसकर पकड़ ली और तब तक नहीं छोड़ी जब तक उसके दोनों हाथ तलवार से काट नहीं दिये गए और बाद में उसे उसी तलवार से मौत के घाट उतार दिया गया था।

मुज़फ्फरपुर जेल में जिस मजिस्ट्रेट ने उन्हें फाँसी पर लटकाने का आदेश सुनाया था, उसने बाद में बताया था कि खुदीराम बोस एक शेर के बच्चे की तरह निर्भीक होकर फाँसी के तख्ते की ओर बढ़े थे। अपनी निर्भीकता और मृत्यु तक को सोत्साह वरण करने के लिए वह घर–घर में श्रद्धापूर्वक याद किए जाते हैं। राष्ट्र के प्रति अमर शहीद खुदीराम बोस का अमर प्रेम नई पीढ़ी और देशवासियों को हमेशा ही प्रेरणा देता रहेगा। भारत सरकार ने उनके सम्मान में 1990 में एक डाक टिकट जारी किया। उनके सम्मान में 1965 में कोलकाता में कलकत्ता विश्वविद्यालय से संबद्ध 'खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज' की स्थापना की गई है, कोलकाता में गरिया के पास एक मेट्रो रेलवे स्टेशन का नाम 'शहीद खुदीराम स्टेशन' रखा गया है, नगर पालिका पार्क के पास बीटी रोड पर एक अस्पताल 'शहीद खुदीराम बोस अस्पताल' की स्थापना की गई है।

अल्लूरि सीताराम राजु

18 वर्ष की अल्पायु में ही संन्यासी बनने वाले और उसके बाद आदिवासी जनता को अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध

लामबंद करने वाले अल्लूरि सीताराम राजु का जन्म 04 जुलाई 1897 को भारत के वर्तमान आंध्र प्रदेश राज्य में विशाखापत्तनम के पांडुरंग गाँव में एक तेलुगु भाषी क्षत्रिय परिवार में हुआ था। उनके पिता वेंकट रामा राजु एक पेशेवर फोटोग्राफर थे, और उनकी माँ सूर्य नारायणम्मा एक गृहिणी थीं। वेंकट रामा राजु आत्म सम्मान एवं देशप्रेम से ओत–प्रोत व्यक्ति थे। उन्होंने नन्हे रामा राजु को भी क्रांतिकारी संस्कार दिए थे और अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने उन्हें यह भी बताया था कि – "अंग्रेजों ने हमें गुलाम बनाया है और वे हमारे देश को लूट रहे हैं।" अल्लूरी सीताराम राजु ने अपने पिता के द्वारा कही गई इस बात को दिल से लगा लिया। जब वह आठ साल के थे तभी उनके पिता जी का स्वर्गवास हो गया था। अल्लूरि रामा राजु ने अपनी स्कूली शिक्षा अपने पैतृक गाँव में ही पूरी करने के बाद मैट्रिक की परीक्षा काकीनाडा से पास की। तत्पश्चात वह उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए विशाखापत्तनम चले गए। इसी दौरान वह एक अमीर आदमी के दोस्त बन गए और उनके मन में अपने दोस्त की बहन, सीता के लिए प्यार उमड़ने लगा। परंतु दुर्भाग्यवश कुछ ही समय बाद सीता का असामयिक निधन हो गया जिससे उनका दिल टूट गया। उनकी स्मृति को शाश्वत बनाने के लिए, रामा राजु ने फिर अपने नाम के आगे उनका नाम लगा दिया, और लोकप्रिय रूप से सीताराम राजु के नाम से जाने जाने लगे। उन्होंने अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी लेकिन 18 साल की उम्र में सभी सांसारिक सुखों को त्यागकर संन्यासी बनने से पहले निजी तौर पर तेलुगु, संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं के साहित्य तथा ज्योतिष, जड़ी–बूटी, हस्तरेखा और घुड़सवारी में महारत हासिल की। वह पहाड़ियों और जंगलों में घूमते रहते थे और वहां के आदिवासियों के संघर्षों से परिचित होते थे। यही वह समय था, जब उन्होंने आदिवासी और पहाड़ी लोगों की पीड़ा को करीब से जाना। धीरे–धीरे वह स्थानीय आदिवासी समुदाय के साथ घुलमिल गए। उन्होंने आदिवासियों को अंग्रेजों के शोषण के विरुद्ध संगठित करना शुरू किया, जिसका आरंभ आदिवासियों का उपचार व भविष्य की जानकारी देने से होता था। उन्होंने अपनी तपस्या, ज्योतिष तथा चिकित्सा के ज्ञान एवं जंगली जानवरों को वश में करने की अपनी क्षमता के कारण पहाड़ी व आदिवासी लोगों के बीच एक रहस्यमय आभा प्राप्त की। आदिवासी समुदाय ने उन्हें एक ऐसा संत माना जो उन्हें ब्रिटिश अधिकारियों के हाथों उनके अपमानजनक अस्तित्व से मुक्ति दिला सकता था।

शुरुआत में, सीताराम राजु ने गांधीजी के असहयोग आंदोलन के प्रभाव में आकर आदिवासी लोगों को खादी पहनने और शराब छोड़ने के लिये सहमत किया। साथ ही, उन्हें स्थानीय पंचायत अदालतों में न्याय माँगने और औपनिवेशिक अदालतों का बहिष्कार करने के लिए प्रेरित किया। लेकिन, ऐसा करने से उनकी पीड़ा कम नहीं हुई और असहयोग आंदोलन भी जल्द ही समाप्त हो गया। तब उन्होंने ज़ोर देकर कहा था कि भारत केवल बल के प्रयोग से ही आज़ाद हो सकता है, अहिंसा से नहीं और अंततः उन्होंने जनता को सशस्त्र संघर्ष का रास्ता अख्तियार करने के लिए तैयार किया। अगस्त 1922 में उन्होंने अंग्रेज़ों के विरुद्ध 'रम्पा विद्रोह' का आरंभ किया। रम्पा प्रशासनिक क्षेत्र जनजाति बहुल इलाका था। ये जनजातियाँ खेती में 'पोडु' प्रणाली का उपयोग करती थीं जिसमें हर साल वन के क्षेत्र के एक छोटे हिस्से को खेती के लिए खाली किया जाता था, क्योंकि यह उनके भोजन का एकमात्र स्रोत था। जनजातियों के लिए जंगल उनके जीने के लिए बहुत आवश्यक थे, परंतु अंग्रेज़ उन्हें वहाँ से बेदखल करना चाहते थे ताकि वे अपनी जरूरतों को पूरा करने हेतु लकड़ी के लिए इन वन क्षेत्रों को लूट सकें। इसी प्रयोजन से 'मद्रास वन अधिनियम, 1882' लागू किया गया था जिससे जनजातीय समुदायों को जंगलों में अपनी मर्ज़ी से इधर–उधर जाने को प्रतिबंधित कर दिया गया था और साथ ही साथ उन्हें अपनी पारंपरिक पोडु खेती करने से भी रोक दिया गया था। इस अत्याचारपूर्ण आदेश ने आदिवासी 'रम्पा विद्रोह' की शुरुआत की, जिसे 'मन्यम विद्रोह' के नाम से भी जाना जाता है। इन जनजातियों ने पहाड़ी क्षेत्र में सड़कों और रेलवे लाइनों के निर्माण में बंधुआ मजदूरों के रूप में काम करने से मना कर दिया। सीताराम राजु ने उनके लिए न्याय की माँग की थी। उन्होंने अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ने के लिए गुरिल्ला युद्ध का सहारा लिया। आदिवासी लोगों की अपनी सेना के साथ, उन्होंने कई पुलिस थानों पर आक्रमण किया और छापा मारा, कई ब्रिटिश अधिकारियों को मार डाला, और अपनी लड़ाई जारी रखने के लिए गोला–बारूद और हथियार भी चुराए। उन्हें स्थानीय लोगों का भरपूर समर्थन मिला और इसी कारण वे लंबे समय तक अंग्रेज़ों से बचे रहने में कामयाब रहे। अंग्रेज़ों के विरुद्ध उनके इस दो साल के सशस्त्र संघर्ष (1922–24) ने ब्रिटिश अधिकारियों को इस हद तक परेशान कर दिया कि जो कोई भी उन्हें ज़िंदा या मुर्दा पकड़कर ला पाता, उसके लिए अंगेजों द्वारा 10,000 रुपयों के इनाम की घोषणा कर दी गई थी। स्थानीय ग्रामीणों द्वारा उनके वीरतापूर्ण कारनामों के लिये उन्हें 'मन्यम वीरुडु' (जंगल का नायक) उपनाम दिया गया था।

लाख कोशिश करने के बाद भी अंग्रेज उनकी खबर नहीं लगा पाते थे। यह सब देखकर अंग्रेज दाँतों तले उँगली दबा लेते थे। जब अंग्रेजों को यह लग गया कि वे आदिवासियों को हरा नहीं सकेंगे तब उन्हें भूखे रखकर मारने की योजना बनाई गई। अंग्रेजों ने गाँव में राशन लाने के सभी रास्ते बंद कर दिए। अंग्रेज सिपाही गाँव में घुसकर लोगों को मारने–पीटने लगे और फसलों को भी बर्बाद करने लगे। आदिवासियों की हिम्मत जबाब देने लगी थी। राजु के कुछ साथियों को पुलिस ने पकड़ लिया था। लोगों को परेशान देखकर उनकी पीड़ा को कम करने के लिए, और एक न्यायप्रिय व्यक्ति होने के नाते सीताराम राजु ने इस उम्मीद के साथ आत्मसमर्पण कर दिया कि बदले में उन्हें निष्पक्ष सुनवाई का मौका दिया जाएगा। मेजर गुडॉल मन ही मन बहुत खुश था कि उसका शिकार खुद

जाल में फँस गया। राजु ने कानून के अनुसार उन्हें कचहरी में पेश करने की माँग की। लेकिन 07 मई 1924 को एक पेड़ से बांधकर और गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई। दो वर्षों तक ब्रिटिश सत्ता की नींद हराम करने वाला यह योद्धा वीर गति को प्राप्त हो गया। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध उनकी गौरवशाली लड़ाई का अंत हो गया।

महात्मा गांधी ने अल्लूरि सीताराम राजु को श्रद्धांजलि देते हुए कहा था, 'हालांकि मैं उनके सशस्त्र विद्रोह को स्वीकार नहीं करता, लेकिन मैं उनकी बहादुरी और बलिदान को नमन करता हूं।' नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने कहा था कि अल्लूरि अपने दृढ़ संकल्प में उग्र थे, और लोगों के लिए उनका अद्वितीय साहस एवं बलिदान उन्हें इतिहास में एक स्थान सुनिश्चित करेगा। भारत सरकार ने उनके सम्मान में 1986 में एक डाक टिकट जारी किया तथा आंध्र प्रदेश सरकार ने विभिन्न स्थानों पर उनके स्मारक बनवाये हैं। आंध्र प्रदेश सरकार प्रत्येक वर्ष उनकी जन्म तिथि, 4 जुलाई को राज्य उत्सव के रूप में मनाती है। देश भर में मनाए जा रहे आजादी का अमृत महोत्सव के एक हिस्से के रूप में स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को नमन करते हुए प्रधानमंत्री जी ने अल्लूरि सीताराम राजु की 125वीं जयंती के उपलक्ष्य में 04 जुलाई 2022 को आंध्र प्रदेश के भीमावरम में उनकी एक कांस्य प्रतिमा का अनावरण किया है। इसी वर्ष आंध्र प्रदेश सरकार ने पूर्ववर्ती विशाखापत्तनम जिले से अल्लूरी के नाम पर एक नया जिला बनाया है।

उधम सिंह

जलियांवाला बाग कांड के समय पंजाब के लेफ्टिनेंट गर्वनर रहे माइकल ओ'डायर को लंदन में जाकर गोली मारने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी उधम सिंह का जन्म 26 दिसम्बर 1899 को पंजाब प्रांत के संगरूर जिले के सुनाम गाँव में एक जाटव (सिख) परिवार में हुआ था। सन 1901 में उधमसिंह की माता और 1907 में उनके पिता का निधन हो गया। इस घटना के चलते उन्हें अपने बड़े भाई के साथ अमृतसर के एक अनाथालय में शरण लेनी पड़ी। उधमसिंह के बचपन का नाम शेर सिंह जाटव और उनके भाई का नाम मुक्तासिंह जाटव था, जिन्हें अनाथालय में क्रमशः उधमसिंह और साधुसिंह के रूप में नए नाम मिले। इतिहासकार मालती मलिक के अनुसार उधमसिंह जाटव देश में सर्वधर्म समभाव के प्रतीक थे और इसीलिए उन्होंने अपना नाम बदलकर 'राम मोहम्मद सिंह आजाद' रख लिया था जो भारत के तीन प्रमुख धर्मों (हिंदू, मुस्लिम और सिख) का प्रतीक है। अनाथालय में उधमसिंह जाटव की जिंदगी चल ही रही थी कि 1917 में उनके बड़े भाई का भी देहांत हो गया। वह पूरी तरह अनाथ हो गए। 1919 में उन्होंने अनाथालय छोड़ दिया और विचलित हुए बिना वह देश की आजादी के लिए स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गए। शहीद भगत सिंह द्वारा किए गए अपने देश के प्रति क्रांतिकारी कार्य और उनके समूहों से उधम सिंह बहुत ही प्रभावित हुए थे। उन्हें देश भक्ति गीत बहुत ही पसंद थे, वह उनको हमेशा सुना करते थे। वह उस समय के महान क्रांतिकारी कवि राम प्रसाद बिस्मिल के द्वारा लिखे गए गीतों को सुनने के बहुत शौकीन थे। उधमसिंह 13 अप्रैल 1919 को घटित जलियाँवाला बाग नरसंहार के प्रत्यक्षदर्शी थे। राजनीतिक कारणों से जलियाँवाला बाग में मारे गए लोगों की सही संख्या कभी सामने नहीं आ पाई। इस घटना से वीर उधमसिंह तिलमिला गए और उन्होंने जलियाँवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर इस घटना के लिए जिम्मेदार रहे ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड ओ'डायर और पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ'डायर को सबक सिखाने को अपने जीवन का मकसद बना लिया। जुलाई 1927 में ब्रिगेडियर जनरल डायर की ब्रेन हेमरेज से मौत हो गई। अब उधम सिंह के निशाने पर माइकल ओ'डायर था। डायर को मारने के लिए उधम सिंह 6 साल तक लंदन में रहे। अपने इस ध्येय को अंजाम देने के लिए उधम सिंह ने विभिन्न नामों से अफ्रीका, नैरोबी, ब्राजील और अमेरिका की यात्रा की। सन 1934 में उधम सिंह लंदन पहुँचे और वहां 9, एल्डर स्ट्रीट कमर्शियल रोड़ पर रहने लगे। वहां उन्होंने यात्रा के उद्देश्य से एक कार खरीदी और साथ में अपनी ध्येय को पूरा करने के लिए छह गोलियों वाली एक रिवाल्वर भी खरीद ली। भारत के यह वीर क्रांतिकारी, माइकल ओ'डायर को ठिकाने लगाने के लिए उचित वक्त का इंतजार करने लगे।

उधम सिंह को अपने सैकड़ों भाई–बहनों की मौत का बदला लेने का मौका 1940 में मिला। जलियांवाला बाग हत्याकांड के 21 साल बाद 13 मार्च 1940 को रॉयल सेंट्रल एशियन सोसायटी, लंदन के कॉक्सटन हॉल में एक बैठक थी जहाँ माइकल ओ'डायर भी वक्ताओं में से एक था। उधम सिंह उस दिन समय से ही बैठक स्थल पर पहुँच गए। अपनी रिवाल्वर उन्होंने एक मोटी किताब में छिपा ली। इसके लिए उन्होंने किताब के पृष्ठों को रिवाल्वर के आकार में उस तरह से काट लिया था, जिससे डायर की जान लेने वाला हथियार आसानी से छिपाया जा सके। बैठक के बाद दीवार के पीछे से मोर्चा संभालते हुए उधम सिंह ने माइकल ओ'डायर पर गोलियां दाग दीं। दो गोलियां माइकल ओ'डायर को लगीं जिससे उसकी तत्काल मौत हो गई। उधम सिंह ने वहां से भागने की कोशिश नहीं की और अपनी गिरफ्तारी दे दी। उन पर मुकदमा चला। मुकदमेबाजी के दौरान जब उनसे उनके मकसद के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा था – 'मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मुझे उससे नफरत थी। वह इसके लायक था। वह असली अपराधी था। वह मेरे लोगों की आत्मा को कुचलना चाहता था, इसलिए मैंने उसे कुचल दिया है। पूरे 21 साल से मैं बदला लेने की कोशिश कर रहा था और मुझे खुशी है कि मैंने काम कर किया है। मैं मौत से नहीं डरता। मैं अपने देश के लिए मर रहा हूं। मैंने अपने लोगों को ब्रिटिश शासन के तहत भारत में भूख से मरते देखा है। मैंने इसका विरोध किया है, यह मेरा कर्तव्य था।' 04 जून 1940 को उधम सिंह को हत्या का दोषी ठहराया गया और 31 जुलाई 1940 को उन्हें पेंटनविले जेल में फाँसी दे दी गई।

आम लोगों और क्रांतिकारियों ने उधम सिंह की कार्रवाई का महिमामंडन किया। राष्ट्रवादी समाचार पत्रों जैसे कि अमृत बाजार पत्रिका ने डायर की हत्या के समर्थन में बयान दिए। दुनिया भर के

अधिकांश प्रेस ने जलियांवाला बाग की कहानी को याद किया और डायर को जलियांवाला बाग नरसंहार के लिए जिम्मेदार ठहराया था। उधम सिंह को 'सच्चा स्वतंत्रता सेनानी' कहा गया था और उनकी कार्रवाई को 'द टाइम्स' अखबार में 'पददलित भारतीय लोगों के दबे हुए रोष की अभिव्यक्ति' के रूप में संदर्भित किया गया था। मार्च 1940 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता जवाहर लाल नेहरू ने उनकी इस कार्रवाई की निंदा की, हालांकि, 1962 में नेहरू जी ने अपने इस रुख को उलट दिया और निम्नलिखित प्रकाशित बयान के साथ उधम सिंह की सराहना की – 'मैं शहीद– ए–आजम उधम सिंह को श्रद्धा के साथ सलाम करता हूं जिन्होंने फाँसी के फंदे को चूमा था ताकि हम आजाद हो सकें।' प्रसिद्ध रिपोर्टर और इतिहासकार विलियम एल. शायर ने लिखा था, "मैं जानता हूं कि अधिकांश अन्य भारतीय (गांधी के अलावा) यह महसूस करेंगे कि यह दैवीय प्रतिशोध है। 1919 के अमृतसर नरसंहार के लिए पंजाब का तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ'डायर भी जिम्मेदार था, जिसमें ब्रिगेडियर रेजीनॉल्ड ओ'डायर ने 1,500 भारतीयों की नृशंस हत्या कर दी थी। इस नरसंहार के ग्यारह साल बाद जब मैं 1930 में अमृतसर गया था, तब भी वहां के लोगों में कड़वाहट बनी हुई थी।"

भारत सरकार ने उनके सम्मान में 1992 में एक डाक टिकट जारी किया। 1999 में, खालसा पंथ की 300 साल की सालगिरह और उधम सिंह के जन्म के 100 साल की सालगिरह के दौरान उन्हें मरणोपरांत आनंदपुर साहिब फाउंडेशन द्वारा 'निशान–ए–खालसा' से सम्मानित किया गया था। उन्हें समर्पित एक संग्रहालय अमृतसर में जलियांवाला बाग के पास स्थित है। सुनाम में उन के पुश्तैनी घर को संग्रहालय में तब्दील कर दिया गया है। इस संग्रहालय में 30 पत्र और अन्य वस्तुएँ प्रदर्शित हैं। उनके पैतृक गाँव सुनाम का आधिकारिक नाम बदलकर 'सुनाम उधम सिंह वालां' किया गया है। अनूपगढ़ में शहीद उधम सिंह चौक का नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया है। वर्ष 2020 में बने उत्तराखंड राज्य में उधम सिंह नगर जिले का नाम इन के नाम पर रखा गया है। नैनीताल जिले के तराई वाले भाग को अलग करते हुए उत्तर प्रदेश की तत्कालीन मुख्यमंत्री सुश्री मायावती ने 30.09.1995 को इस नये जनपद का नाम इनके नाम पर 'उधम सिंह नगर' रखा था। 13 मार्च 2018 को अमृतसर के जलियांवाला बाग के मुख्य द्वार पर अंतर्राष्ट्रीय सर्व कम्बोज समाज द्वारा उनकी एक प्रतिमा स्थापित की गई और इस प्रतिमा का अनावरण तत्कालीन केंद्रीय गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने किया था।

उधम सिंह जाटव भारत के स्वतत्रता संग्राम के महान सेनानी एवं क्रांतिकारी थे। उन्होंने जलियांवाला बाग कांड के समय पंजाब के गर्वनर जनरल रहे माइकल ओ'डायर को लंदन में जाकर गोली मारी थी। कई इतिहासकारों का मानना है कि यह हत्याकाण्ड ओ'डायर व अन्य ब्रिटिश अधिकारियों का एक सुनियोजित षड्यंत्र था, जो पंजाब प्रांत पर नियंत्रण बनाने के लिये किया गया था।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

लघु कहानी

गेहूँ के दाने

एक समय की बात है जब राजस्थान के एक छोटे से गांव नयासर में अमरसेन नामक व्यक्ति रहता था। अमरसेन बड़ा होशियार था, परंतु समय के साथ–साथ अब अमरसेन वृद्ध हो चला था। उसके चार पुत्र थे जिनके विवाह हो चुके थे और सब अपना वैवाहिक जीवन जैसे–तैसे निर्वाह कर रहे थे। पत्नी के स्वर्गवास के बाद अमरसेन ने सोचा कि अब तक के संग्रहीत धन और बची हुई संपत्ति का उत्तराधिकारी किसे बनाया जाए? यह निर्णय लेने के लिए उसने चारों बेटों को उनकी पत्नियों के साथ बुलाया और एक–एक करके उन्हें गेहूँ के पाँच–पाँच दाने दिए। फिर उसने कहा कि मैं तीर्थ यात्रा पर जा रहा हूं और चार साल बाद लौटूंगा। जो भी इन दानों की सही हिफाजत करके मुझे लौटाएगा, तिजोरी की चाबियाँ और मेरी सारी संपत्ति उसे ही मिलेगी। इतना कहकर अमरसेन तीर्थ यात्रा पर चला गया।

पहले बहू–बेटे ने सोचा बुड्ढा सठिया गया है, चार साल तक कौन याद रखता है। हम बड़े हैं तो परिवार के धन पर पहला हक हमारा ही है। ऐसा सोचकर उन्होंने गेहूँ के दाने फेंक दिए।

दूसरे बहू–बेटे ने सोचा कि इन्हें संभालना तो मुश्किल है। यदि हम इन्हें खा लें तो शायद उनको अच्छा लगे, लौटने के बाद हमें आशीर्वाद दे दें और कहें कि तुम्हारा मंगल इसी में छुपा था। इस प्रकार सारी संपत्ति हमारी हो जाएगी। यह सोचकर उन्होंने वो पाँच दाने खा लिए।

**सोशल मीडिया से संकलित*

तीसरे बहू–बेटे ने सोचा कि हम रोज पूजा पाठ तो करते ही हैं और अपने मंदिर में जैसे ठाकुर जी को संभालते हैं वैसे ही ये गेहूँ भी संभाल लेंगे। उनके आने के बाद हम ये दाने उन्हें लौटा देंगे।

चौथे बहू–बेटे ने समझदारी से सोचा और पाँचों दानों को एक–एक कर जमीन में बो दिया। देखते–देखते अंकुरित पौधे बड़े हो गए और इनसे उन्हें कुछ और गेहूँ प्राप्त हो गए। फिर उन्होंने उन्हें भी बो दिया और इस तरह हर वर्ष गेहूँ की बढ़ोतरी होती गई। पाँच दाने एक किलो, पाँच किलो और पाँच बोरियों में बदल गए।

चार साल बाद जब अमरसेन वापस आया तो सबकी कहानी सुनी और जब वह चौथे बहू–बेटे के पास गया तो बेटा बोला – 'पिताजी, आपने जो पाँच दाने हमें दिए थे, अब वे पाँच बोरियों में बदल चुके हैं। हमने उन्हें संभाल कर गोदाम में रख दिया है, उन पर आप ही का हक है।' यह देख अमरसेन ने फौरन तिजोरी की चाबियाँ सबसे छोटे बहू–बेटे को सौंप दीं और कहा कि तुम लोग ही मेरी संपत्ति के असल हकदार हो।

शिक्षा: इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि मिली हुई जिम्मेदारी को अच्छी तरह से निभाना चाहिए और मौजूद संसाधनों, चाहे वो कितने कम ही क्यों न हों, का सही उपयोग करना चाहिए। गेहूँ के पाँच दाने एक प्रतीक हैं जो हमें यह समझाते हैं कि कैसे छोटी से छोटी शुरुआत करके उसे एक बड़ा रूप दिया जा सकता है।

स्वतंत्रता आंदोलन में वीर एवं विदुषी महिलाओं का योगदान

बीरेन्द्र सिंह रावत*

हमारे प्यारे देश 'भारत' को 15 अगस्त 1947 को मिली आजादी से पहले अंग्रेजी शासन के विरुद्ध चला भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन कई दौरों से गुजरा। ब्रिटिश शासन की शोषण की विभिन्न अमानवीय नीतियों के खिलाफ धीरे–धीरे भारतीय जनता में असंतोष फैलता गया, विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सैन्य विद्रोह एवं संघर्ष होने लगे और इनमें लोग अधिकाधिक संख्या में शामिल होने लगे। धीरे–धीरे इन विद्रोहों एवं संघर्षों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के मार्ग को प्रशस्त किया। पहले के विद्रोहों एवं संघर्षों और 1857 से शुरु हुए स्वतंत्रता आंदोलन में सभी व्यक्ति अपने–अपने ढंग एवं सामर्थ्य से तथा अपनी–अपनी कला एवं शक्ति से संघर्षरत रहे थे और महिलाएं भी पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही थीं। आजादी का अमृत महोत्सव के सुअवसर पर इस आलेख में उन वीरांगनाओं, जिन्होंने अपनी वीरता और अदम्य साहस का परिचय देते हुए अंग्रेजों के दाँत खट्टे किये थे, के साथ–साथ उन विदुषी महिलाओं, जिन्होंने शिक्षा का प्रसार करने, सामाजिक उत्थान के प्रयासों के साथ–साथ अपने विचारों से लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया था, के देशप्रेम को ससम्मान नमन करने का प्रयास किया गया है।

रानी चेन्नम्मा

भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम सन् 1857 में लड़ा गया। अंग्रेजों के औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध यह पहला संगठित महासमर था। लेकिन विदेशी दासता से मुक्ति के लिए लड़े गए इस महासमर की शुरुआत 1773 में हुए 'संन्यासी विद्रोह' के साथ ही हो चुकी थी। उसके बाद अनेक छोटे–मोटे सशस्त्र संघर्ष हुए। यह इतिहास की विडंबना ही है कि 1857 के पहले लड़े गए संग्रामों के देशभक्त नायकों व बलिदानी वीरांगनाओं का उल्लेख हमारे इतिहास में महत्वपूर्ण ढंग से नहीं हो पाया। भारत के स्वाधीनता संग्राम की ऐसी ही एक बलिदानी वीरांगना थीं कित्तूर की रानी चेनम्मा, जिनकी शौर्यगाथा के ओजस्वी स्वरों की झनकार आज भी कन्नड़ भाषा की लोककथाओं और लोकगीतों में गूंजती है। भारत के कर्नाटक (तत्कालीन मैसूर) राज्य में बेलगाम के दक्षिण तथा धारवाड़ के उत्तर में कित्तूर एक छोटी–सी रियासत थी। रानी चेन्नम्मा इसी समृद्ध रियासत की महारानी थीं। उन्होंने सन 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से भी 33 वर्ष पूर्व 1824 में अंग्रेजों की कुटिल नीति 'हड़प नीति (डॉक्ट्रिन ऑफ लेप्स)' का विरोध करते हुए अंग्रेजों से सशस्त्र संघर्ष किया था। रानी चेन्नम्मा की कहानी लगभग झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की तरह है। इसलिए उनको 'कर्नाटक की

लक्ष्मीबाई' भी कहा जाता है। भारत में स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करने वाले सबसे पहले शासकों में उनका नाम लिया जाता है।

चेन्नम्मा का जन्म कित्तूर के काकती नामक एक गांव में 23 अक्तूबर 1788 को हुआ। काकती के प्रतिष्ठित देसाई परिवार में जन्मीं चेन्नम्मा जन्म से ही बहुत सुंदर थी। कन्नड़ भाषा में 'चन्ना' का अर्थ होता है सुंदर, इसीलिए उनका नाम चेन्नम्मा रखा गया। पिता धूलप्पा और माता पद्मावती ने उनका पालन–पोषण राजकुल के युवराज की भाँति किया। उन्हें संस्कृत भाषा, कन्नड़ भाषा, मराठी भाषा और उर्दू भाषा के साथ–साथ घुड़सवारी, अस्त्र–शस्त्र चलाने और युद्ध–कला की भी शिक्षा दी गई। वह छोटी सी आयु में ही घुड़सवारी, तलवारबाजी एवं तीरंदाजी के साथ–साथ युद्ध कौशल में भी निपुण हो गईं। महज 15 वर्ष की आयु में ही उनके द्वारा ग्रामीणों को बचाने के लिए एक बाघ का शिकार किया गया। इस साहसिक कार्य से प्रभावित होकर कित्तूर राज्य के राजा मल्लसर्ज देसाई ने चेन्नम्मा से विवाह का प्रस्ताव उनके पिता के पास भेजा। प्रस्ताव स्वीकृति के पश्चात उनका विवाह राजा मल्लसर्ज से हुआ और इस तरह चेन्नम्मा कित्तूर की रानी बन गईं। राजा मल्लसर्ज राज्य के शासन संबंधी कार्यों में भी रानी की राय लिया करते थे। कुछ समय पश्चात चेन्नम्मा ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम उन्होंने शिव बसवराज रखा, लेकिन उसकी अकाल मृत्यु हो गयी। राजा मल्लसर्ज कित्तूर राज्य के ग्यारहवें शासक थे। वह प्रजावत्सल और न्यायपरायण थे और प्रजा आज्ञाकारिणी तथा स्वामिभक्त थी। वह धीर, गंभीर, साहसी, स्वाभिमानी और कलाप्रेमी राजा थे और उनकी महत्त्वाकांक्षा कित्तूर को अति संपन्न राज्य बनाने की थी, किंतु पूना के पटवर्धन ने चालाकी और मक्कारी से उनको बंदी बना लिया। अंत में बंदी के रूप में ही उनकी मृत्यु हो गई। तब उनकी बड़ी रानी रुद्रम्मा के पुत्र शिवरुद्र सर्ज ने शासन संभाला, पर वह अपने पिता की भाँति वीर एवं कुशल

* वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

शासक नहीं था। स्वार्थी दरबारियों की सलाह पर उसने मराठों और अंग्रेजों के संघर्ष में अंग्रेजों का साथ दिया। कुछ समय बाद राजा शिवरुद्र सर्ज का बीमारी से 11 सितंबर 1824 को देहांत हो गया। राजमाता चेन्नम्मा ने शिवरुद्र सर्ज के दत्तक पुत्र गुरुलिंग मल्लसर्ज को युवराज बना दिया और युवराज तथा साम्राज्य की संरक्षिका के रूप में कुशलतापूर्वक शासन करने लगीं।

राजा शिवरुद्र सर्ज की मृत्यु की खबर पाकर अपने राज्य का विस्तार करने की इच्छा रखने वाले अंग्रेजों ने इसे बड़ा अच्छा अवसर समझा। उनको एक बहुत अच्छा बहाना भी मिल गया, क्योंकि राजा निःसंतान मरा था। वैसे हड़प नीति (डाक्ट्रिन आफ लैप्स) को औपचारिक तौर पर तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी द्वारा 1848 में लागू किया गया था परंतु अंग्रेज इस अघोषित नीति पर पहले से ही अमल करते आ रहे थे। हड़प नीति के तहत कंपनी उन राज्यों, जिनके राजाओं का अपना कोई पुत्र नहीं होता था, का जबरदस्ती ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर लेती थी। यहां तक कि कंपनी दत्तक पुत्र को भी मान्यता नहीं देती थी। इसी नीति के तहत अंग्रेज कित्तूर साम्राज्य को हड़पने के लिए अपनी योजना बनाने लगे। कित्तूर राज्य के दोनों दीवान मल्लप्पा शेट्टी तथा वेंकटराव अंदर ही अंदर अंग्रेजों से मिले हुए थे। अंग्रेजों ने कित्तूर की शासन व्यवस्था को नहीं माना तथा राज्य की देखभाल के लिए धारवाड़ के कलेक्टर सेंट जॉन थैकरे को अपना राजनीतिक दूत बना दिया। थैकरे ने रानी को संदेश भेजा कि वह सारे अधिकार तुरंत मल्लप्पा शेट्टी को सौंप दे। रानी ने यह आदेश ठुकरा दिया। वह समझ गयीं कि अब देश और धर्म की रक्षा के लिए लड़ने–मरने का समय आ गया है। रानी अपनी प्रजा को मातृवत प्रेम करती थीं, अतः उनके आह्वान पर प्रजा भी तैयार हो गयी। गुरु सिद्दप्पा जैसे कुशल दीवान और संगोली रायण्णा, बालण्णा, जगवीर एवं चेन्नवासप्पा जैसे देशभक्त वीर योद्धा रानी के साथ थे।

23 अक्टूबर 1824 का दिन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में स्मरणीय रहेगा। उस दिन अंग्रेज सेना ने थैकरे के नेतृत्व में कित्तूर के किले को घेर लिया तथा जैसे ही किले के बाहर से थैकरे ने धमकी दी, तभी अचानक किले का फाटक खुला और वीर मर्दाने वेश में रानी चेन्नम्मा दो हजार देशभक्तों की जुझारू फौज के साथ शेरनी की भांति अंग्रेज़ों की सेना पर टूट पड़ी। भयानक युद्ध हुआ। कित्तूर के सैनिक अपने प्राण हथेली पर रखकर आए थे। रानी की प्रेरणा ने उनमें बिजली की शक्ति भर दी थी। उनके प्रचंड वेग को अंग्रेज़ सेना न सह सकी। चेन्नम्मा की तलवार ने कहर मचा दिया, थैकरे मारा गया और अंग्रेज़ सेना भाग खड़ी हुई। देशद्रोही मल्लप्पा शेट्टी और वेंकटराव का भी काम तमाम कर दिया गया। बहुत से सैनिक एवं गोरे अफसर मारे और बंदी बना लिए गए। दो ब्रिटिश अधिकारियों, सर वॉल्टर इलियट और स्टीवेन्सन को भी बंधक बना लिया गया था, जिन्हें रानी ने बाद में छोड़ दिया। स्वतंत्रता की यह लपट कित्तूर के निकटवर्ती सभी इलाकों में फैल गई। अतः अंग्रेजों ने बंबई और मद्रास से कुमुक मंगाकर 03 दिसम्बर 1824 को फिर धावा बोला। इस बार अंग्रेजों की सेना की कमान डीकन के हाथ में थी। अंग्रेजों के पास सेना भी अधिक थी और हथियार भी अधिक थे। लेकिन कित्तूर के देशभक्तों की वीरता के सम्मुख उन्हें दोबारा हार का सामना करना पड़ा। दूसरे हमले के दौरान भी अंग्रेजों को काफी नुकसान उठाना पड़ा और थॉमस मुनरो का भतीजा, सोलापुर का उप–कलेक्टर, मुनरो मारा गया। अब अंग्रेजों ने कित्तूर के एक किलेदार शिव बासप्पा को अपने साथ मिला लिया जिसने किले के कई भेद अंग्रेजों को दे दिए।

05 दिसंबर 1824 को अग्रेजों ने पुनः सारी शक्ति लगाकर घेरा डाला। कित्तूर की बची–खुची शक्ति इकट्ठी करके रानी चेन्नम्मा ने एक बार फिर अंग्रेजों के आक्रमण का सामना किया और कित्तूर के रणबांकुरों ने अपनी जान की बाजी लगाकर किले की रक्षा की मगर अंग्रेजों की सुसज्जित सेना (मद्रास नेटिव हॉर्स आर्टिलरी की तीसरी टुकड़ी के 20797 सैनिक) और भारी तोपखाने (437 तोपें) का मुट्ठी भर स्वाभिमानी देशभक्त भला कब तक सामना करते। युद्ध में रानी चेनम्मा ने अपूर्व शौर्य का प्रदर्शन किया और संगोली रायण्णा एवं गुरु सिद्दप्पा की सहायता से जमकर लड़ाई लड़ी, लेकिन अंततः रानी एवं गुरु सिद्दप्पा को पकड़ लिया गया। गुरु सिद्दप्पा को फांसी पर लटका दिया गया जबकि रानी को बैलहोंगल किले में कैद कर लिया गया। देशभक्त जनता ने रानी को मुक्त कराने का प्रयास किया, पर वे असफल रहे। सवा चार वर्ष के कठोर कारावास के बाद तबीयत खराब होने के कारण रानी चेनम्मा की 21 फरवरी 1829 को मृत्यु हो गई। हड़प नीति के अलावा रानी चेन्नम्मा का अंग्रेजों की कर नीति को लेकर भी विरोध था और उन्होंने उसे मुखर आवाज दी। रानी चेन्नम्मा पहले भारतीय शासकों में से एक थीं जिन्होंने अनावश्यक हस्तक्षेप और कर संग्रह प्रणाली को लेकर भी अंग्रेजों का विरोध किया था। हर साल 22–24 अक्टूबर को आयोजित कित्तूर उत्सव के दौरान चेन्नम्मा की विरासत और अंग्रेजों के खिलाफ मिली पहली जीत को अभी भी याद किया जाता है। रानी चेन्नम्मा के साहस एवं उनकी वीरता के कारण देश के विभिन्न हिस्सों, खासकर कर्नाटक में उन्हें विशेष सम्मान हासिल है और उनका नाम आदर के साथ लिया जाता है।

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान राष्ट्रवादी नेताओं द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ रानी चेन्नम्मा के साहसिक व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए अनेक नाटक, लोकगीतों का निर्माण किया गया एवं जन सामान्य में उनकी शौर्य गाथा को प्रसारित किया गया। रानी चेन्नम्मा के सम्मान में 11 सितंबर 2007 को भारत की पहली महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा भारतीय संसद परिसर में उनकी एक प्रतिमा का अनावरण किया गया। यह प्रतिमा कित्तूर रानी चेन्नम्मा मेमोरियल कमेटी द्वारा दान की गई और श्री विजय गौड़ द्वारा बनाई गई है। इसके अतिरिक्त, पुणे–बेंगलूरु राष्ट्रीय राजमार्ग पर बेलगाम के पास कित्तूर का राजमहल तथा अन्य इमारतें गौरवशाली अतीत की याद दिलाने के लिए मौजूद हैं।

झलकारी बाई

भारत की स्वाधीनता के लिए 1857 में हुए प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पुरुषों के साथ महिलाओं ने भी कंधे से कंधा मिलाकर बराबर का सहयोग दिया था। देश के लिए मर–मिटने वाली झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को भला कौन नहीं जानता है। वह उस संग्राम की प्रमुख हस्तियों में से एक थीं और भारतीय राष्ट्रवादियों के लिए ब्रिटिश राज के प्रतिरोध का प्रतीक बन गई थीं। रानी लक्ष्मीबाई की नियमित सेना में महिला शाखा दुर्गा दल की सेनापति झलकारी बाई भी बिल्कुल उनके जैसी वीर, पराक्रमी एवं देशभक्त वीरांगना थीं। वह भी अपने वतन की मिट्टी के लिए जी–जान से लड़ीं और इतिहास पर अपनी अमिट छाप छोड़ गयीं।

झलकारी बाई का जन्म 22 नवम्बर 1830 को झाँसी के पास के भोजला गाँव में एक निर्धन कोली परिवार में हुआ था। झलकारी बाई के पिता का नाम सदोवर सिंह और माता का नाम जमुना देवी था। जब झलकारी बाई बहुत छोटी थीं तब उनकी माँ की मृत्यु हो गयी थी, और पिता ने उन्हें एक लड़के की तरह पाला था। उन्हें घुड़सवारी और हथियारों का प्रयोग करने में प्रशिक्षित किया गया था। उन दिनों की सामाजिक परिस्थितियों के कारण उन्हें कोई औपचारिक शिक्षा तो प्राप्त नहीं हो पाई, लेकिन बचपन से ही बहुत साहसी और दृढ़ प्रतिज्ञ बालिका झलकारी ने खुद को एक अच्छे योद्धा के रूप में विकसित किया था। इसके साथ ही पेड़ों पर चढ़ने, नदियों में तैरने और ऊंचाई से छलांग लगाने जैसे कार्यों में भी झलकारी पारंगत हो गयीं। झलकारी घर के काम के अलावा पशुओं का रख–रखाव और जंगल से लकड़ी लाने का काम भी करती थीं। एक बार जंगल में उनका सामना एक खूंखार चीते से हो गया था। झलकारी ने अपनी कुल्हाड़ी से उस चीते का काम तमाम कर दिया और उसकी लाश कंधे पर लादकर ले आईं। एक अन्य अवसर पर जब गाँव के प्रधान जी को डाकुओं ने घेर लिया था तब झलकारी ने बहादुरी से उन डाकुओं का मुकाबला करते हुए केवल डंडे से ही उन की भरपूर ठुकाई की और उन्हें पकडकर गाँव ले आई। ऐसी वीरोचित घटनाओं से झलकारी पूरे गाँव की प्रिय बेटी बन गईं।

जब झलकारी युवा हुईं तो गाँव वालों ने उनका विवाह रानी लक्ष्मीबाई की सेना में तोपची पूरन कोरी से करवा दिया, पूरन भी बहुत बहादुर था और पूरी सेना उनकी बहादुरी का लोहा मानती थी। एक बार गौरी पूजा के अवसर पर झलकारी गाँव की अन्य महिलाओं के साथ महारानी को सम्मान देने झाँसी के किले में गयीं, वहाँ रानी लक्ष्मीबाई उन्हें देख कर अवाक रह गयीं क्योंकि झलकारी बिल्कुल रानी लक्ष्मीबाई की तरह दिखतीं थीं (दोनो के रूप में आलौकिक समानता थी)। अन्य औरतों से झलकारी की बहादुरी के किस्से सुनकर रानी लक्ष्मीबाई बहुत प्रभावित हुईं। रानी ने झलकारी को दुर्गा सेना में शामिल करने का आदेश दिया। झलकारी ने यहाँ अन्य महिलाओं के साथ बंदूक चलाना, तोप चलाना और तलवारबाजी का प्रशिक्षण लिया। यह वह समय था जब झाँसी की सेना को किसी भी ब्रिटिश दुस्साहस का सामना करने के लिए मजबूत बनाया जा रहा था। तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी द्वारा 1848 में लागू की गई हड़प नीति (डाक्ट्रिन आफ लैप्स) के तहत कंपनी उन राज्यों, जिनके राजाओं का अपना कोई पुत्र नहीं होता था, का जबरदस्ती ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर लेती थी। यहां तक कि कंपनी दत्तक पुत्र को भी मान्यता नहीं देती थी। हालांकि झाँसी के राजा गंगाधर राव ने स्वास्थ्य बहुत अधिक बिगड़ जाने पर सन 1853 में अपनी मृत्यु से पूर्व एक बच्चे को गोद लिया था और दत्तक पुत्र का नाम दामोदर राव रखा गया, परंतु अंग्रेजों ने इसी हड़प नीति के चलते राज्य उत्तराधिकारी को मान्यता नहीं दी, क्योंकि वे ऐसा करके राज्य को अपने नियंत्रण में लाना चाहते थे। अंग्रेजों की इस कार्रवाई के विरोध में रानी की सारी सेना एवं झाँसी के सब लोग रानी के साथ लामबंद हो गये और उन्होंने आत्मसमर्पण करने के बजाय अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठाने का संकल्प लिया। 1857 में सिपाहियों का विद्रोह बढ़ गया और यह उत्तरी एवं मध्य भारत के बड़े हिस्सों में फैल गया। कुछ सिपाही रानी लक्ष्मी बाई का समर्थन करने के लिए भी एकत्र हुए। झलकारी बाई को सेना की महिला टुकड़ी 'दुर्गा दल' का नेतृत्व करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। 1857 के दौरान लक्ष्मीबाई ने अपनी सेना का नेतृत्व सफलतापूर्वक किया और अंग्रेजों एवं उनके स्थानीय सहयोगियों द्वारा किये कई हमलों को नाकाम कर दिया।

1858 में जब ब्रिटिश जनरल सर ह्यू रोज़ की कमान में अंग्रेज़ी सेना ने झाँसी के किले पर हमला किया और घेर लिया तो रानी के सेनानायकों में से एक दूल्हेराव ने उन्हें धोखा दिया और किले का एक संरक्षित द्वार ब्रिटिश सेना के लिए खोल दिया। जब किले का पतन निश्चित हो गया तो झलकारी बाई शीघ्रता से रानी के महल पहुंचीं और उन्हें दत्तक पुत्र सहित सुरक्षित किले से बाहर जाने में सहायता दी। झलकारी बाई ने इसके लिए जो काम किया, उसकी कल्पना मात्र से ही रोमांच हो जाता है। झलकारी बाई का पति पूरन किले की रक्षा करते हुए शहीद हो गया था लेकिन झलकारी ने बजाय अपने पति की मृत्यु का शोक मनाने के, अंग्रेजों को धोखा देने की एक योजना बनाई। झलकारी बाई ने रानी लक्ष्मीबाई को एक साधारण महिला के वस्त्र पहना दिए और इस प्रकार वेश बदलकर रानी महल बाहर निकल गयीं। झलकारी बाई ने रानी के कपड़े एवं गहने पहने और उन का वेश धारण कर वह रणचंडी बनकर अंग्रेजों पर टूट पड़ीं। यह झलकारी की रणनीति

थी, ताकि वे अंग्रेजों को उलझाए रखें और रानी लक्ष्मी बाई को ताकत जुटाने के लिए और समय मिल जाय। काफी समय तक ब्रिटिश सेना के अधिकारी भ्रम में पड़े रहे। वे रानी लक्ष्मीबाई को किसी भी कीमत पर जिंदा या मुर्दा पकड़ना चाहते थे, पर झलकारी बाई ने झाँसी की सेना की कमान अपने हाथ में ले ली थी और वह दोनों हाथों में तलवार लिए ब्रिटिश सेना के सैनिकों को गाजर मूली की तरह काट रही थीं।

कुछ समय बाद वह किले के बाहर निकलकर ब्रिटिश जनरल ह्यू रोज़ के शिविर में उससे मिलने पहुँचीं। ब्रिटिश शिविर में पहुँचने पर उन्होंने चिल्लाकर कहा कि वह जनरल ह्यू रोज़ से मिलना चाहती हैं। जनरल ह्यू रोज़ और उसके सैनिक प्रसन्न थे कि न सिर्फ उन्होने झांसी पर कब्जा कर लिया है बल्कि जीवित रानी भी उनके कब्ज़े में है। जनरल ह्यू रोज़, जो उन्हें रानी ही समझ रहा था, ने झलकारी बाई से पूछा कि उनके साथ क्या किया जाना चाहिए? तो उन्होंने दृढ़ता के साथ कहा, मुझे फाँसी दो। जनरल ह्यू रोज़ झलकारी के साहस और नेतृत्व क्षमता से बहुत प्रभावित हुआ और झलकारी बाई को रिहा कर दिया गया। इसके विपरीत कुछ इतिहासकार मानते हैं कि झलकारी इस युद्ध के दौरान वीरगति को प्राप्त हुई। एक बुंदेलखंड किंवदंती है कि झलकारी के इस उत्तर से जनरल ह्यू रोज़ दंग रह गया और उसने कहा कि 'यदि भारत की एक प्रतिशत महिलाएं भी उसके जैसी हो जायें तो ब्रिटिशों को जल्दी ही भारत छोड़ना होगा'।

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि यदि लक्ष्मीबाई के सेनानायकों में से एक ने उनके साथ विश्वासघात न किया होता तो झांसी का किला ब्रिटिश सेना के लिए प्रायः अभेद्य था। झलकारी बाई की गाथा आज भी बुंदेलखंड की लोकगाथाओं और लोकगीतों में सुनी जा सकती है। भारत सरकार ने 22 जुलाई 2001 का झलकारी बाई के सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया है, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उनकी एक प्रतिमा आगरा में स्थापित की गयी है, साथ ही उनके नाम से लखनऊ में एक धर्मार्थ चिकित्सालय भी शुरु किया गया है। मुख्यधारा के इतिहासकारों द्वारा झलकारी बाई के योगदान को बहुत विस्तार नहीं दिया गया है, लेकिन आधुनिक लेखकों ने उन्हें गुमनामी से उभारा है। जनकवि बिहारी लाल हरित ने 'वीरांगना झलकारी' काव्य की रचना की। हरित ने झलकारी की बहादुरी को निम्न प्रकार पंक्तिबद्ध किया है:

लक्ष्मीबाई का रूप धार, झलकारी खड़ग संवार चली।
वीरांगना निर्भय लश्कर में, शस्त्र अस्त्र तन धार चली।।

अरुणाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल (21.10.1993 से 16.05.1999 तक) श्री माता प्रसाद ने झलकारी बाई की जीवनी की रचना की है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने झलकारी की बहादुरी को निम्न प्रकार पंक्तिबद्ध किया था:

जा कर रण में ललकारी थी, वह तो झाँसी की झलकारी थी।
गोरों से लड़ना सिखा गई, है इतिहास में झलक रही, वह भारत की ही नारी थी।

भगिनी निवेदिता

भगिनी निवेदिता का मूल नाम 'मार्गरेट एलिजाबेथ नोबेल' था। वह एक अंग्रेज–आइरिश सामाजिक कार्यकर्ता, लेखक, शिक्षक एवं स्वामी विवेकानन्द जी की शिष्या थीं। आध्यात्मिक और राजनीतिक रूप से सोए हुए भारतीयों को जगाने के लिए भारत को अपना घर बनाने वाली ब्रिटिश एनी बेसेंट से तो हम सब भलीभाँति परिचित हैं परंतु उन्हीं के समान भारत के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाली भगिनी निवेदिता को इतिहास के पन्नों में वह स्थान नहीं मिल पाया जिसकी वह हकदार थीं।

28 अक्टूबर 1867 को आयरलैंड में जन्मी मार्गरेट के पिता सैम्युअल नोबेल आयरिश चर्च में पादरी थे। बचपन से ही मार्गरेट नोबेल की रुचि सेवा कार्यों में थी। वह निर्धनों की झुग्गियों में जाकर बच्चों का पढ़ाती थीं। एक बार उनके घर भारत में कार्यरत एक पादरी आए। उन्होंने मार्गरेट को कहा कि शायद तुम्हें भी एक दिन मानव सेवा के लिए भारत जाना पड़े। तब से मार्गरेट के सपनों में भारत बसने लगा। मार्गरेट के पिता का 34 वर्ष की अल्पायु में ही देहांत हो गया। मरते समय उन्होंने अपनी पत्नी मेरी से कहा कि यदि मार्गरेट कभी भारत जाना चाहे, तो उसे रोकना नहीं। पति की मुत्यु के बाद मिसेज़ मेरी अपने मायके आ गयीं। वहीं पर मार्गरेट की शिक्षा पूर्ण हुई। 1884 में 17 साल की आयु में उन्होंने शिक्षिका के रूप में नौकरी शुरु की एवं अध्यापन का कार्य करने लगीं। कुछ समय बाद उनकी सगाई हो गई, पर विवाह से पूर्व ही उनके मंगेतर की बीमारी से मृत्यु हो गयी। इससे मार्गरेट का मन संसार से उचट गया, पर उन्होंने जिंदगी से हार नहीं मानी और 1892 में विम्बल्डन में 'रस्किन स्कूल' नाम के एक स्कूल की स्थापना की। वहाँ नये प्रकार की शिक्षा मिलती थी। नोबेल के जीवन में निर्णायक मोड़ 1895 में उस समय आया जब लंदन में उनकी स्वामी विवेकानंद से मुलाकात हुई। तब एक दिन मार्गरेट की सहेली लेडी इजाबेल मारगेसन ने उन्हें अपने घर बुलाया। वहाँ स्वामी विवेकानंद आए हुए थे। स्वामी जी 1893 में शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में भाषण देकर प्रसिद्ध हो चुके थे। उनसे बात करके मार्गरेट के हृदय के तार झंकृत हो उठे। फिर उनकी कई बार स्वामी जी से भेट हुई। जब स्वामी जी ने भारत की संस्कृति एवं आम जनता के जीवन का वर्णन किया, तो वह समझ गयी कि वह जिस बुलावे की प्रतीक्षा में थीं, वह आ गया है। स्वामी विवेकानंद के आकर्षक व्यक्ति, निरहंकारी स्वभाव और भाषण शैली से वह इतना प्रभावित हुईं कि उन्होंने न केवल रामकृष्ण परमहंस के इस महान शिष्य को अपना आध्यात्मिक

गुरु बना लिया बल्कि भारत को अपनी कर्मभूमि भी बनाया। वह 28 जनवरी 1898 को कोलकाता आ गईं। यहाँ आकर उन्होंने सबसे पहले बंगला भाषा सीखी, क्योंकि इसके बिना निर्धन और निर्बलों के बीच काम करना संभव नहीं था। 22 फरवरी को 1898 मार्गरेट ने दक्षिणेश्वर मंदिर का दौरा किया, जहां रामकृष्ण जी ने अपनी साधना की थी। स्वामी विवेकानंद ने शुरुआती कुछ दिन उन्हें भारत और उसके लोगों के बारे में सिखाने और लोगों के लिए प्यार विकसित करने में उनकी मदद करने में समर्पित किए; वह उनके चरित्र का विस्तार कर रहे थे। उन्होंने भारत के इतिहास, दर्शन, साहित्य, सामाजिक परंपराओं और महान व्यक्तियों के जीवन के बारे में उन्हें समझाया।

इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद ने नोबेल को 25 मार्च 1898 को दीक्षा देकर मानव सेवा के लिए भगवान बुद्ध के करुणा के पथ पर चलने की प्रेरणा दी। दीक्षा देते हुए स्वामी विवेकानंद ने अपने प्रेरणाप्रद शब्दों में उनसे कहा – जाओ और उस महान व्यक्ति का अनुसरण करो जिसने 500 बार जन्म लेकर अपना जीवन लोककल्याण के लिए समर्पित किया और फिर बुद्धत्व प्राप्त किया। दीक्षा के समय स्वामी विवेकानंद ने उन्हें नया नाम 'निवेदिता' दिया और बाद में वह पूरे देश में इसी नाम (सिस्टर निवेदिता/भगिनी निवेदिता) से विख्यात हुईं। इस तरह भगिनी निवेदिता किसी भी भारतीय पंथ को अपनाने वाली पहली पश्चिमी महिला बनी थीं। 1898 में ही वह अपने गुरु स्वामी विवेकानंद के साथ भारत भ्रमण पर निकलीं और हिमालय भ्रमण के दौरान अल्मोड़ा में उन्होंने पहली बार ध्यान की कला को सीखा। भारत भ्रमण करने के बाद वह अंततः कलकत्ता में बस गईं। अपने गुरु की प्रेरणा से उन्होंने कलकत्ता में लड़कियों के लिए स्कूल 'निवेदिता बालिका विद्यालय' खोला। निवेदिता स्कूल का उद्घाटन रामकृष्ण परमहंस की जीवनसंगिनी मां शारदा ने किया था। मां शारदा ने सदैव भगिनी निवेदिता को अपनी पुत्री की तरह स्नेह दिया और बालिका शिक्षा के उनके प्रयासों को हमेशा प्रोत्साहित किया। निवेदिता ने अपने सभी दैनिक गतिविधियों के माध्यम से अपने छात्रों के मन में राष्ट्रवादी भावना पैदा करने की पूरी कोशिश की। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में बांग्ला विभाग के पूर्व अध्यक्ष श्री अमरनाथ गांगुली ने कहा कि मार्गरेट नोबेल को स्वामी विवेकानंद ने निवेदिता नाम दिया था। इसके दो अर्थ हो सकते हैं एक तो ऐसी महिला जिसने अपने गुरु के चरणों में अपना जीवन अर्पित कर दिया, जबकि दूसरा अर्थ निवेदिता पर ज्यादा सही बैठता है कि एक ऐसी महिला जिन्होंने स्त्री शिक्षा के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया।

गांगुली जी ने कहा कि सिस्टर निवेदिता में एक आग थी और स्वामी विवेकानंद ने उस आग को पहचाना। निवेदिता अपने गुरु की प्रेरणा से स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में उस समय उतरीं जब समाज के संभ्रांत लोग भी अपनी लड़कियों को स्कूल भेजना पसंद नहीं करते थे। ऐसे समाज में स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देना निवेदिता जैसी जीवट महिला के प्रयासों से ही संभव हो सका। कलकत्ता प्रवास के दौरान भगिनी निवेदिता के संपर्क में उस दौर के सभी प्रमुख लोग आये। उनके साथ संपर्क रखने वाले प्रमुख लोगों में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु, शिल्पकार हैमेल तथा अवनीन्द्रनाथ ठाकुर और चित्रकार नंदलाल बोस शामिल हैं। उन्होंने रमेशचन्द्र दत्त और यदुनाथ सरकार को भारतीय नजरिए से इतिहास लिखने की प्रेरणा दी। गांगुली जी ने सिस्टर निवेदिता के देशप्रेम की चर्चा करते हुए कहा कि आयरिश होने के कारण स्वतंत्रता प्रेम उनके रक्त में था। ऐसे में यह बेहद स्वाभाविक था कि उन्होंने भारत में स्वतंत्रता सेनानियों और क्रांतिकारियों का समर्थन किया और उन्हें सहयोग दिया।

1899 में कोलकाता में प्लेग फैल गया। निवेदिता मानव सेवा में जुट गईं। उन्होंने खुद की जान जोखिम में डालकर मरीजों की सेवा की, गलियों से लेकर घरों तक शौचालय साफ किए। धीरे–धीरे उनके साथ अनेक लोग जुट गए। इससे निबट कर वह विद्यालय के लिए धन जुटाने विदेश गईं। दो साल के प्रवास में उन्होंने धन तो जुटाया ही, वहाँ पादरियों द्वारा हिंदू धर्म के विरुद्ध किए जा रहे झूठे प्रचार का मुँहतोड़ जवाब भी दिया। वापस आकर वह स्वतंत्रता आंदोलन में भी सक्रिय हुईं। उनका मत था कि भारत की दुर्दशा का एक कारण विदेशी गुलामी भी है। बंग भंग का उन्होंने प्रबल विरोध किया और क्रांतिगीत 'वंदेमातरम्' को अपने विद्यालय में प्रार्थना गीत बनाया। भारत आने से पहले निवेदिता ने भारत में जारी औपनिवेशिक शासन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया था, जो यूरोप में उनके समकालीनों के बीच एक प्रचलित भावना थी। परंतु, भारत में पहुंचते ही निवेदिता का औपनिवेशिक शासन से मोहभंग हो गया और उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि भारत को समृद्ध होने के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करना आवश्यक था। फरवरी 1902 में, मोहनदास करमचंद गांधी कलकत्ता में निवेदिता से मिलने गए। निवेदिता ने 1904 में भारत के लिए लाल एवं पीले रंगों युक्त एक राष्ट्रीय ध्वज भी डिजाइन किया था जिसमें लाल रंग की पृष्ठभूमि पर केंद्र में पीले रंग में प्रतीक के रूप में वज्र का निशान था और बंगाली में बंदे मातरम लिखा हुआ था। निवेदिता ने शुरुआत में जापान के ओकाकुरा और टैगोर परिवार से संबंधित सरला घोषाल के साथ काम किया था। बाद में उन्होंने अपने दम पर काम करना शुरू कर दिया और बंगाल के कई युवा क्रांतिकारियों के साथ सीधा संबंध बनाए रखा, जिसमें अनुशीलन समिति, एक गुप्त संगठन भी शामिल था। उन्होंने अपने व्याख्यानों के माध्यम से कई युवाओं को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। 1905 में लॉर्ड कर्जन के निर्देशन में औपनिवेशिक सरकार ने बंगाल के विभाजन की शुरुआत की जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक प्रमुख मोड़ साबित हुआ। निवेदिता ने आंदोलन के दौरान वित्तीय और रसद सहायता प्रदान की और सरकारी एजेंसियों से जानकारी प्राप्त करने एवं स्वतंत्रता सेनानियों को आगाह करने के लिए अपने संपर्कों का लाभ उठाया। प्रसिद्ध तमिल कवि सुब्रमण्यम भारती, जो उनसे 1906 में मिले, पर उनका काफी प्रभाव पड़ा। उन्होंने भारती जी को देश में महिलाओं की स्वतंत्रता के लिए काम करने के लिए कहा, जो उन्होंने जिंदगीभर किया।

भारत प्रेमी भगिनी निवेदिता दुर्गापूजा की छुट्टियों में भ्रमण के लिए दार्जीलिंग गई थीं। लेकिन वहां उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया और अंत में 13 अक्टूबर 1911 को 44 साल की उम्र में उनका निधन हो गया। मृत्यु से पूर्व उन्होंने अपनी सारी संपत्ति बेलूर मठ को दान कर दी थी। उनकी समाधि पर लिखा है – 'यहाँ भगिनी निवेदिता चिरनिद्रा में सो रही हैं, जिन्होंने भारत के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।'

भगिनी निवेदिता स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्त्री शिक्षा के लिए समर्पित भारत की सबसे प्रभावशाली महिला शख्सियतों में से एक रही हैं। उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखीं। उनकी पुस्तक *'काली, द मदर'* ने भारत माता को चित्रित करने वाले अबनींद्रनाथ टैगोर को प्रभावित किया था। 1968 में भारत सरकार ने उनकी स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया। दक्षिणेश्वर, कोलकाता के पास निवेदिता पुल का नाम उनके सम्मान में रखा गया है। उनके नाम पर कई स्कूल और कॉलेज बनाए गए हैं। उनके सम्मान में दिल्ली विश्वविद्यालय के एक महाविद्यालय (1993 में कैर, नजफगढ़ में स्थापित) का नाम भगिनी निवेदिता महाविद्यालय तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय के एक महाविद्यालय का नाम सिस्टर निवेदिता गवर्नमेंट जनरल डिग्री कॉलेज फॉर गर्ल्स (2015 में हेस्टिंग्स हाउस, अलीपुर में स्थापित) उनके नाम पर रखा गया है।

दुर्गाबाई देशमुख

स्वाधीनता के समर में आंध्र प्रदेश से सबसे पहले कूदने वाली महिला दुर्गाबाई का जन्म 15 जुलाई 1909 को राजमुंदरी जिले के काकीनाडा स्थान पर हुआ था। इनकी माता श्रीमती कृष्णवेनम्मा तथा पिता श्री रामाराव थे। पिताजी का देहांत तो जल्दी हो गया था, पर माता जी की कांग्रेस में सक्रियता से दुर्गाबाई के मन पर बचपन से ही देशप्रेम एवं समाजसेवा के संस्कार पड़े। 1921 में जब स्वदेशी आंदोलन अपने चरम पर था, दुर्गाबाई (दुर्गा) ने अपने चचेरे भाई की शादी में शामिल होने के लिए राजमुंदरी की यात्रा की। महात्मा गांधी के साथ एक मुलाकात ने 12 साल की दुर्गा के दिल में एक आग और दृढ़ संकल्प जगाया। गाँधी जी के सामने दुर्गाबाई ने अपनी पार्टी के फ्रॉक सहित विदेशी वस्त्रों की होली जलाई और स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गईं। यह उनकी कोई बचकानी हरकत नहीं थी। यह अपनी मातृभूमि की सेवा करने का ऐसा जज्बा था जो जीवन भर उनके साथ रहा।

उन दिनों गाँधी जी के आग्रह के कारण दक्षिण भारत में हिंदी का प्रचार हो रहा था। दुर्गाबाई ने हिंदी सीखना शुरू किया और केवल खादी पहनना शुरू कर दिया, जो महात्मा गांधी द्वारा पसंद किया जाने वाला सूती कपड़ा था। दुर्गाबाई ने पड़ोस के एक अध्यापक से हिंदी सीखकर 12 साल की उम्र में अपने गृहनगर, काकीनाडा में महिलाओं के लिए एक पाठशाला खोलकर हिंदी पढ़ाना शुरू किया। इसमें उनकी माँ भी पढ़ने आती थीं। उनकी हिंदी कक्षाओं की लोकप्रियता इतनी बढ़ गई कि यह जल्द ही एक नियमित स्कूल बन गया। उन्होंने इसे बालिका हिंदी पाठशाला कहा और वह 12 से 22 वर्ष की आयु तक इसकी प्रधानाचार्य रही थीं। बालिका हिंदी पाठशाला उन कई संस्थानों में से पहली थी, जिन्हें तत्कालीन मद्रास (वर्तमान चेन्नई) और हैदराबाद में बनाया गया था, और इसे आज सामूहिक रूप से आंध्र महिला सभा के रूप में जाना जाता है। इनमें

से सबसे पहले संस्थान, महिला विद्यालय की आधारशिला किसी और ने नहीं बल्कि स्वयं महात्मा गांधी जी ने रखी थी। इससे लगभग 500 महिलाओं ने हिंदी सीखी। इसे देखकर गाँधी जी ने दुर्गाबाई को स्वर्ण पदक दिया। इसके बाद वह अपनी माँ के साथ खादी के प्रचार में जुट गयीं। दुर्गाबाई बहुत अनुशासनप्रिय थीं। 1923 में काकीनाड़ा में हुए कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन में वह स्वयंसेविका के नाते कार्यरत थीं। वहाँ खादी वस्त्रों की प्रदर्शनी में उन्होंने नेहरू जी को भी बिना टिकट नहीं घुसने दिया। आयोजक नाराज हुए, पर अंततः उन्हें टिकट खरीदना ही पड़ा।

दुर्गाभाई देशमुख ब्रिटिश राज से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में महात्मा गाँधी की अनुयायी थीं। उन्होंने पूरे मन से स्वतंत्रता आंदोलन में खुद को झोंक दिया। वह एक सत्याग्रही एवं समाज सुधारक थीं। उन्होंने कभी भी आभूषण नहीं पहने और सौंदर्य प्रसाधान का उपयोग नहीं किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान उन्होंने श्री टी. प्रकाशम के साथ नमक सत्याग्रह में बढ़–चढ़कर भाग लिया। इसकी वजह से उन्हें 1930 से 1933 के बीच ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा तीन बार जेल में डाल दिया गया। कारावास का उपयोग उन्होंने अंग्रेजी का ज्ञान बढ़ाने के साथ–साथ साथी कैदियों को हिंदी सिखाने में किया। जेल से बाहर आने पर भी दुर्गाबाई ने भारतीय महिलाओं को शिक्षित करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने बनारस से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय से राजीनीति शास्त्र में बी. ए. किया। मद्रास विश्वविद्यालय से एम. ए. की परीक्षा में उन्हें पाँच पदक मिले। जेल की सजा ने उन्हें उन दुखद परिस्थितियों से अवगत कराया जो महिलाओं के जीवन पर हावी थीं, यह उनके अनुभव थे जिन्होंने उन्हें बाद में कानून का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने इंग्लैंड जाकर अर्थशास्त्र और कानून की पढ़ाई की। इंग्लैंड में वकालत कर उन्होंने पर्याप्त धन भी कमाया। वह एक प्रमुख आपराधिक वकील बनीं। स्वाधीनता के बाद उन्होंने आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय में वकालत की।

1946 में दुर्गाबाई लोकसभा और संविधान सभा की सदस्य निर्वाचित हुईं। वह 1952 में संसद संचालन समिति और योजना आयोग की सदस्य भी बनीं। आंध्र महिला सभा, एक धर्मार्थ और सेवा उन्मुख संगठन की स्थापना डॉ श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख ने वर्ष 1948 में गरीबों और जरूरतमंदों, विशेष रूप से महिलाओं की

सेवा करने के लिए एक महान दृष्टि के साथ की थी। योजना आयोग द्वारा प्रकाशित 'भारत में समाज सेवा का विश्वकोश' उन्हीं के निर्देशन में तैयार हुआ। आंध्र प्रदेश के गाँवों में शिक्षा के प्रसार हेतु उन्हें नेहरू साक्षरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने अनेक विद्यालय, नर्सिंग विद्यालय और तकनीकी विद्यालय स्थापित किए। उन्होंने नेत्रहीनों के लिए भी विद्यालय, छात्रावास तथा प्रशिक्षण केंद्र खोले। 1953 में उन्होंने भारत के तीसरे वित्त मंत्री श्री चिंतामन द्वारकानाथ देशमुख (सी. डी. देशमुख) से नेहरू जी की उपस्थिति में न्यायालय में विवाह किया। इसी वर्ष नेहरू जी ने इन्हें केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड (सीएसडब्ल्युबी) का अध्यक्ष बनाया। इसके अंतर्गत उन्होंने महिला एवं बाल कल्याण के अनेक उपयोगी कार्यक्रम प्रारंभ किए। इन विषयों के अध्ययन एवं अनुभव के लिए उन्होंने इंग्लैड, अमरीका, सोवियत संघ, चीन, जापान आदि देशों की यात्राएं भी कीं। उन्होंने ग्रामीण भारत में बड़े पैमाने पर यात्रा की और महिलाओं एवं बच्चों की योजनाओं और कल्याणकारी परियोजनाओं को उदारतापूर्वक सहायता प्रदान की। बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में उनकी प्रमुख उपलब्धियों में महिलाओं के लिए विशेष लाभ के साथ सघन शिक्षा पाठ्यक्रम शुरू करना, जेलों में सुधार, अपराधियों एवं व्यावसायिक यौनकर्मियों का पुनर्वास और स्वैच्छिक संगठनों को विशेष सहायता, नर्सिंग के क्षेत्र में काम करना, परिवारों का आर्थिक विकास और जन्म नियंत्रण को प्रोत्साहन देना शामिल हैं। दुर्गाबाई देशमुख ने आंध्र महिला सभा, विश्वविद्यालय संघ, नारी निकेतन जैसी कई संस्थाओं के माध्यम से महिलाओं के उत्थान के लिए अथक प्रयत्न किए।

उन्होंने गरीबों की सेवा करने के उद्देश्य से 1962 में हैदराबाद में सिर्फ 15 बिस्तरों के साथ एक नर्सिंग होम शुरू किया। यह छोटी–सी शुरुआत आंध्र महिला सभा की छत्रछाया में 200 से अधिक बिस्तरों के साथ एक पूर्ण विकसित बहु–विशिष्ट अस्पताल के रूप में विकसित हुई है, जिसे दुर्गाबाई देशमुख अस्पताल और अनुसंधान केंद्र के नाम से जाना जाता है। दुर्गाबाई देशमुख का जीवन देश और समाज के लिए समर्पित था। लम्बी बीमारी के बाद 09 मई 1981 को उनका देहांत हुआ। उनके द्वारा स्थापित अनेक संस्थाएं आज भी आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में सेवा कार्यों में लगी हुई हैं।

उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों में से कुछ निम्न प्रकार हैं:

- 1958 में भारत सरकार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद की पहली अध्यक्ष थीं।
- निरक्षरता उन्मूलन के लिए अंतर्राष्ट्रीय संपर्क समिति की सदस्य रहीं।
- भारत के सर्वोच्च न्यायालय में आपराधिक वकील रहीं।
- 1975 में पद्म विभूषण से सम्मानित।
- 1979 में पॉल जी. हॉफमैन पुरस्कार से सम्मानित, सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए यू.एन.डी.पी. द्वारा प्रदान किया गया।

इसके अलावा, दिल्ली मेट्रो की पिंक लाईन पर धौला कुंआ (रिंग रोड़ की ओर) के पास बेनिटो जुआरेज मार्ग के मोड़ पर बने मेट्रो स्टेशन का नाम पहले केवल साउथ कैंपस था। शिक्षा के क्षेत्र में दुर्गाबाई देशमुख के महत्वपूर्ण प्रयासों को देखते हुए उनके सम्मान में दिल्ली सरकार द्वारा दिसम्बर 2014 में इसका नाम बदलकर दुर्गाबाई देशमुख साउथ कैंपस कर दिया गया।

आजादी के अमृत महोत्सव पर ऐसी महान वीरांगनाओं एवं विदुषी महिलाओं की शक्ति, समाज सेवा और देशभक्ति को शत–शत नमन।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

जीना इसी का नाम है: पूर्णा मालावत

आजाद हिन्दुस्तान की शक्लो–सूरत तय करने वाले महानायकों में से एक बाबा साहब आंबेडकर ने कहा था कि किसी समाज की वास्तविक तरक्की को मापना हो, तो उस समाज की औरतों की हालत आंकना। इस पर हमारे देश ने बीते 75 वर्षों में यकीनन सदियों की दूरी तय की है, हालांकि अब भी इसका लंबा सफर बाकी है। पर बीते साढ़े सात दशकों में भारत की बहन–बेटियों ने क्या कुछ हासिल किया है, इसकी बेमिसाल नजीर हैं– पूर्णा मालावत। सबसे कम उम्र (13 वर्ष) में 25 मई, 2014 को एवरेस्ट फतह करने वाली भारतीय। दुनिया के स्तर पर यह कारनामा करने वाली वह दूसरी पर्वतारोही हैं। अमेरिकी पर्वतारोही जॉर्डन रोमेरो पहले नंबर पर हैं।

तेलंगाना के निजामाबाद जिले में एक गांव है पकाला, पूर्णा ने यहीं पर 10 जून 2000 को इस दुनिया में पहली बार अपनी आंखें खोली थीं। वह एक जनजातीय समुदाय से आती हैं। पूर्णा के माता–पिता लक्ष्मी व देवीदास मालावत, दोनों खेतिहर मजदूर थे और हाड़तोड़ मेहनत के बावजूद बमुश्किल गुजारा

लायक कमा पाते, लेकिन देवीदास की तमन्ना थी कि उनकी बेटी पढ़े–लिखे और गांव से बाहर निकल जिंदगी के तमाम सुख पाए। मगर उनकी आर्थिक स्थिति इसकी इजाजत नहीं देती थी। दुनियादारी की समझ के साथ–साथ पूर्णा की नजरों में माता–पिता की बेबसी स्पष्ट होती गई। वह अक्सर यही सोचा करतीं कि काश! उनके पास कोई जादुई छड़ी होती, और वह अपने माता–पिता की सारी तकलीफें पलक झपकते दूर कर पातीं। सब जानते थे कि हालात से उबरने की उनके पास एक ही राह है– सब्र के साथ अच्छी शिक्षा। लेकिन पिता निजी स्कूलों की फीस भरने में

असमर्थ थे। फिर समाज का अपना दबाव था, जो किशोरावस्था में ही लड़कियों को ब्याहने के लिए अभिभावकों को बाध्य कर देता। सामाजिक दबाव और सपनों की कशमकश के बीच पिता ने बेटी के लिए सबसे लड़ जाने का हौसला बटोरा और पूर्णा को लेकर वह आवासीय सरकारी स्कूल पहुंच गए। पूर्णा इस मामले में भाग्यशाली थीं कि उनके सूबे में ऐसी सुविधा उपलब्ध थी। हालांकि, इसके लिए उनके पिता को कई मोर्चों पर जूझना पड़ा था। वह अपने कुनबे के खिलाफ तो गए ही, भावनाओं के स्तर पर भी उन्हें बेटी को खुद से दूर भेजने की एक मुश्किल जंग लड़नी पड़ी। बेटी तब महज 10 साल की जो थी।

तेलंगाना (तत्कालीन आंध्र प्रदेश) में समाज कल्याण मंत्रालय के तहत ऐसे कई शिक्षण संस्थान दशकों से संचालित होते आ रहे हैं, जो हाशिये के नौनिहालों की तकदीर संवारने में जुटे हुए हैं। आज तेलंगाना के ऐसे 268 आवासीय संस्थानों में करीब डेढ़ लाख बच्चे पढ़ते हैं। पूर्णा को भी एक स्कूल में दाखिला मिल गया। वह काफी लगन से मां–पिता और भाई के सपनों को साकार करने में जुट गईं। स्कूल की खेल–कूद प्रतियोगिताओं में भी पूर्णा ने बढ़–चढ़कर भाग लेना शुरू कर दिया था। वॉलीबॉल, कबड्डी और एथलेटिक्स में खूब दिल लगता था।

एक दिन विभागीय सचिव आरएस प्रवीण कुमार मुआयना करने निकले कि इन स्कूलों में बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा, प्रशिक्षण और भोजन मिल भी रहा है या नहीं? इसी क्रम में उनकी नजर पूर्णा पर पड़ी। उन्होंने न केवल खेलों के बारे में पूर्णा का मार्गदर्शन किया, बल्कि सरकार और संस्थान की तरफ से उन्हें भरपूर सहयोग दिलाने का भी भरोसा दिया। प्रवीण कुमार लालायित थे कि इन स्कूलों के बच्चे कुछ ऐसा बड़ा करें, ताकि आदिवासी–वंचित समाज तक उसका पैगाम जाए, और वे ज्यादा से ज्यादा बच्चों को स्कूल भेजना शुरू करें। इसलिए जिस भी बच्चे में उन्हें जरा सी क्षमता दिखती, वह तत्परता से उसकी मदद करते। पूर्णा का चयन 'ऑपरेशन एवरेस्ट' के लिए हुआ। तब वह नौवीं कक्षा में पढ़ रही थीं। कई महीने तक कठिन प्रशिक्षण के दौर से गुजरना हुआ। इस दौरान उन्होंने लद्दाख और दार्जिलिंग में कई चोटियों की चढ़ाई की। लेकिन दार्जिलिंग में 4,880 मीटर ऊंची चोटी की सफल चढ़ाई ने उन्हें मजबूती से यह एहसास कराया कि वह एवरेस्ट फतह कर सकती हैं। लड़कियां भी इन चोटियों पर कदम रख सकती हैं। फिर शुरू हुआ उनके साठ दिनों का एवरेस्ट अभियान और इसके बाद तो बस कीर्तिमान है। तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव ने सूबे की इस जांबाज बेटी को पांच एकड़ जमीन और 25 लाख रुपये के नकद इनाम से नवाजा, तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी पूर्णा की दिल खोलकर प्रशंसा की।

25 मई 2014 को एवरेस्ट फतह करने वाली दुनिया की यह पहली आदिवासी बाला अब तक विश्व के छह महाद्वीपों की छह सबसे ऊंची चोटियों पर भारतीय दमखम का परचम लहरा चुकी है। इनमें अफ्रीकी माउंट किलिमंजारो, यूरोपीय माउंट एल्ब्रस, दक्षिण अमेरिकी माउंट अकोंकागुआ, ओशिनिया क्षेत्र की माउंट कारस्टेंसज और अंटार्कटिका की माउंट विन्सन मासिफ चोटियां शामिल हैं। पूर्णा के जीवन पर राहुल बोस ने एक बायोपिक भी बनाई है– पूर्णा: करेज हैज नो लिमिट।

आज उनके पास नाम और धन, दोनों हैं। उन्होंने माता–पिता को एक सम्मानजनक जिंदगी भी मुहैया करा दी है, पर उस्मानिया यूनिवर्सिटी से राजनीतिशास्त्र में एमए कर रही पूर्णा अब भारतीय प्रशासनिक सेवा में आना चाहती हैं, ताकि वह भी प्रवीण कुमार की तरह वंचितों की ईमानदारी से सेवा कर सकें। हालांकि, जाने–अनजाने उन्होंने अपने समाज और देश की एक बड़ी सेवा कर दी है। उनकी ख्याति और संपन्नता ने हजारों आदिवासी अभिभावकों के दृष्टिकोण बदल दिए हैं। 2014 के बाद से इन सरकारी शिक्षण संस्थानों में इस समुदाय के बेटे–बेटियों की आमद खूब बढ़ गई है।

साभार: दैनिक हिंदुस्तान

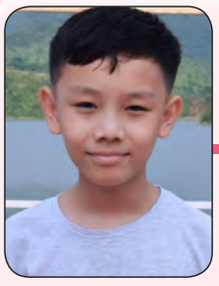

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

बरसात में एक शाम

लमजिंगरेनबा क्षेत्रिमयूम*

बरसता बरसात मेरे ऊपर,
नृत्य करता हंस–हंसकर,
मजा लेता उछल–उछल कर,

मोरनी पंख दिखाती,
और एक सुंदर गाना भी गाती।
पेड़ रिमझिम बारिश में हरे हो जाते,
वे एक दूसरे के साथ गले मिलते,

काले बादल गरजते,
हम सभी को बुलाते,
बादल हमारे साथ खेलने लगते।
मस्ती करते हम सभी,
किसी से ना डरें कभी,
झूमते, नाचते, गाना गाते,
खेलते फिरते, खुशी से हंसते,
हम सभी कभी ना टूटें।।

** सुपुत्र डॉ. ओतोजीत क्षेत्रिमयूम, फेलो, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा*

हमारे राष्ट्र की शान का प्रतीकः तिरंगा

गीता अरोड़ा*

किसी भी स्वतंत्र देश की पहचान उसके राष्ट्रीय प्रतीकों यानी राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान आदि के आधार पर होती है। ये प्रतीक जनसामान्य की आस्था एवं श्रद्धा के केंद्रबिंदु तो होते ही हैं, उनकी सामूहिक पहचान एवं राष्ट्रीय अस्मिता के परिचायक भी होते हैं। हमारे देश में कुल 17 राष्ट्रीय प्रतीक हैं और ये प्रतीक भारतीय पहचान और विरासत का मूलभूत हिस्सा हैं। विश्व भर में बसे विविध पृष्ठभूमियों के भारतीय इन राष्ट्रीय प्रतीकों पर गर्व करते हैं क्योंकि वे प्रत्येक भारतीय के हृदय में गौरव और देशभक्ति की भावना का संचार करते हैं। हमारे राष्ट्र के गौरव का प्रतीक हमारा राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' है। हमारा देश भारत विविध जातियों, धर्मों और संस्कृतियों का देश है। इसी प्रकार हमारा ध्वज भी भाव प्रधान है। हमारे राष्ट्र के झंडे में तीन रंग हैं, इसीलिये इसे तिरंगा कहते हैं। झंडे में तीन रंगों की पट्टियाँ हैं, जिनका आकार समान है। झंडे की सबसे ऊपरी पट्टी केसरिया रंग, बीच की पट्टी सफेद रंग और निचली पट्टी हरे रंग की है। ध्वज की मध्य सफेद पट्टी पर अशोक चक्र बना हुआ है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज पहले स्वतंत्रता संग्राम का प्रतिनिधित्व करता था और अब यह स्वतंत्र भारत का प्रतिनिधित्व करता है। तिरंगे को इसके वर्तमान स्वरूप में स्वतंत्रता प्राप्ति से कुछ ही दिनों पूर्व संविधान सभा द्वारा 22 जुलाई 1947 को अपनाया गया था। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से ही हमारे देश के अनेक राष्ट्रवादी नेताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन को गति देने और आम जनता को इसके प्रति लामबंद करने के लिए एक सशक्त प्रतीक के रूप में समय–समय पर राष्ट्रीय ध्वज की परिकल्पना की तथा तदनुसार झंडे तैयार किए। इस प्रकार, वर्तमान स्वरूप में पहुंचने से पूर्व राष्ट्रीय ध्वज में समय के साथ इसके रंग और डिजाइन के मामले में अनेक परिवर्तन किए गए थे। यह आलेख हमारे राष्ट्रीय ध्वज के संबंध में जानकारी विभिन्न स्रोतों से संकलित करते हुए तैयार किया गया है। सबसे पहले प्रस्तुत है **राष्ट्रीय ध्वज का क्रमागत विकास** – ध्वज संबंधी जानकारी संकलित करते समय पहले और दूसरे राष्ट्रीय ध्वजों के एक से अधिक संस्करण पाए गए परंतु इस आलेख में सरकारी स्रोत से प्राप्त संस्करणों को ही लिपिबद्ध किया गया है।

सबसे पहले 1904 में उन्नीसवीं सदी के महान मनीशी स्वामी विवेकानंद की आयरिश शिष्या भगिनी निवेदिता की देखरेख में कलकत्ता में निवेदिता कन्या विद्यालय की छात्राओं ने एक राष्ट्रीय ध्वज तब तैयार किया जब बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में औपनिवेशिक शासन से आजादी की माँग करने वाले भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन ने जोर पकड़ा और एक राष्ट्रीय ध्वज की आवश्यकता महसूस की गई जो इन आकांक्षाओं के एक शक्तिशाली प्रतीक के रूप में देशवासियों में राष्ट्रवाद की भावना जगाने का काम कर सके। इस ध्वज में वज्र का अंकन किया गया था, जो शक्ति का प्रतीक है। साथ ही, इसके मध्य में बांग्ला भाषा में वंदे मातरम लिखा हुआ था।

यह माना जाता है कि भारत का पहला राष्ट्रीय ध्वज 07 अगस्त 1906 को कलकत्ता में पारसी बागान स्क्वायर (गिरीश पार्क) में फहराया गया था। इसमें लाल, पीले और हरे रंग की तीन समान क्षैतिज पट्टियां थीं। बीच की पीली पट्टी पर देवनागरी लिपि में 'वन्दे मातरम्' लिखा हुआ था। इस ध्वज को सचिंद्र प्रसाद बोस और सुकुमार मित्रा द्वारा बंगाल के विभाजन के विरुद्ध लोकप्रिय एवं सामूहिक प्रतिरोध के एक ठोस प्रतीक के रूप में डिजाइन किया गया था।

दूसरा राष्ट्रीय ध्वज 22 अगस्त 1907 को जर्मनी के स्टटगार्ट में दूसरे अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में मैडम भीकाजी कामा द्वारा फहराया गया था। ऊपरी पट्टी में आठ कमल ब्रिटिश भारत के आठ प्रांतों का प्रतिनिधित्व करते थे। बीच की पट्टी में वन्दे मातरम् लिखा हुआ था और सबसे निचली पट्टी में एक अर्धचंद्र और सूर्य चित्रित था। यह माना जाता है कि इस ध्वज को उनके द्वारा वीर सावरकर (विनायक दामोदर सावरकर) और श्यामजी कृष्ण वर्मा के साथ संयुक्त रूप से डिजाइन किया गया था।

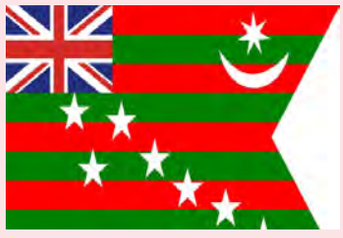

डॉ. एनी बेसेन्ट तथा लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में स्वराज की आकांक्षा से होमरूल आंदोलन शुरु किया गया, जिसके महत्वपूर्ण भाग के रूप में एक नया झण्डा

* आशुलिपिक ग्रेड – I, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा

अपनाया गया। यह पाँच लाल तथा चार हरी क्षैतिज पट्टियों के साथ बना हुआ था। जिसमें एक लाल पट्टी तथा फिर एक हरी पट्टी करके समस्त पट्टियों को जोड़ा गया था। बांये से ऊपर की ओर एक छोर पर यूनियन जैक था, तथा उससे लग कर तिरछे में बायें से नीचे की ओर सप्तऋषि विन्यास में साते तारे थे। एक सफेद अर्ध चन्द्र और तारा शीर्ष के एक कोने पर स्थित था।

अप्रैल 1921 में, मोहनदास करमचंद गाँधी ने अपनी पत्रिका 'यंग इंडिया' में एक भारतीय ध्वज की आवश्यकता के बारे में विस्तारपूर्वक लिखा, जिसमें केंद्र में चरखे के साथ एक ध्वज का प्रस्ताव था। उल्लेखनीय है कि चरखे का विचार लाला हंसराज द्वारा रखा गया था, और गाँधी जी ने पिंगलि वेंकय्या को लाल और हरे रंग की पृष्ठभूमि पर चरखे के साथ एक झंडा डिजाइन करने के लिए नियुक्त किया। जिसमें लाल रंग हिंदुओं की आस्था का प्रतीक था तो हरा मुसलमानों की आस्था का। गाँधी चाहते थे कि ध्वज को 1921 के विजयवाड़ा में हो रहे कांग्रेस अधिवेशन में प्रस्तुत किया जाए, लेकिन इसे समय पर तैयार नहीं किया जा सका। गाँधी जी ने बाद में लिखा कि देरी दैवाधीन थी क्योंकि इससे उन्हें यह एहसास हुआ कि ध्वज में अन्य धर्मों का प्रतिनिधित्व तो हुआ ही नहीं था। अतः, उन्होंने यह सुझाव दिया कि ध्वज में अन्य धर्मों की भावनाओं की कद्र करते हुए सफेद रंग जोड़ा जाए तथा मध्य में चलता चरखा होना चाहिए।

1929 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रसार के दौरान ब्रिटिश विरोधी विचारों को नई धार मिली। इसके साथ ही ध्वज में परिवर्तन आए। 1931 में कराची में हुए कांग्रेस अधिवेशन में पिंगलि वेंकय्या द्वारा तैयार किए गए तीन रंगों के ध्वज को भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया गया तथा इस तथ्य पर बल दिया गया कि झंडे की कोई धार्मिक व्याख्या नहीं होनी चाहिए। लाल रंग बलिदान का, श्वेत रंग पवित्रता का और हरा रंग आशा का प्रतीक माना गया। देश की प्रगति का प्रतीक चरखा इसके केंद्र में जोड़ा गया। गाँधी जी ने स्वीकार किया था कि ध्वज में यह परिवर्तन राष्ट्रीय आंदोलन में विशिष्ट आवश्यकताओं की प्रतिक्रिया थी। ऐसा माना गया कि नया झंडा राष्ट्रवादी भावनाओं के साथ जन आंदोलन के प्रयास अधिक सुचारू रूप से आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण प्रतीक हो सकता है।

झंडे के वर्तमान स्वरूप को मान्यता तब मिली जब 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने इसे स्वतंत्र भारत के

राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया। शीर्ष पर केसरिया रंग 'वीरता और शौर्य' का प्रतीक है, बीच में सफेद रंग 'पवित्रता, त्याग भावना एवं सादगी' का प्रतिनिधित्व करता है और नीचे हरा रंग 'भूमि की उर्वरता, संपन्नता और शुभता' का प्रतीक है। ध्वज पर प्रतीक के रूप में 24 तीलियों वाले नीले रंग के अशोक चक्र ने चरखे को प्रतिस्थापित किया। अशोक चक्र धर्म, विजय एवं प्रगति का द्योतक है।

राष्ट्रीय ध्वज के निर्माता: जैसा कि ऊपर उल्लिखित है, 1921 में कांग्रेस के विजयवाड़ा अधिवेशन के लिए राष्ट्रीय ध्वज तैयार करने का दायित्व मोहनदास करमचंद गाँधी द्वारा पिंगलि वेंकय्या को सौंपा गया था। पिंगलि वेंकय्या जी ने ही वह ध्वज तैयार किया जिसे कांग्रेस के 1931 के कराची अधिवेशन में अपनाया गया था। पिंगलि वेंकय्या का जन्म 02 अगस्त 1876 को वर्तमान आंध्र प्रदेश के मछलीपट्टनम के निकट भाटलापेनुमारु नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम हनुमंत रायुडू और माता का नाम वेंकटरत्नम्मा था और यह तेलुगू ब्राह्मण कुल से संबद्ध थे। मद्रास से हाई स्कूल उत्तीर्ण करने के बाद वह स्नातक की पढ़ाई करने के लिए कैंब्रिज यूनिवर्सिटी चले गये। वहाँ से लौटने पर उन्होंने एक रेलवे गार्ड के रूप में और फिर लखनऊ में एक सरकारी कर्मचारी के रूप में काम किया और बाद में वह एंग्लो वैदिक महाविद्यालय में उर्दू और जापानी भाषा का अध्ययन करने लाहौर चले गए। वह कई विषयों के ज्ञाता थे, उन्हें भूविज्ञान और कृषि क्षेत्र से विशेष लगाव था। वह हीरे की खदानों के विशेषज्ञ होने के साथ–साथ सच्चे देशभक्त एवं कृषि वैज्ञानिक भी थे। पिंगलि ने ब्रिटिश भारतीय सेना में भी सेवा की थी और दक्षिण अफ्रीका के एंग्लो–बोअर युद्ध में भाग लिया था। यहीं पर वह गांधी जी के संपर्क में आये और उनकी विचारधारा से बहुत प्रभावित हुए। 1906 से 1911 तक पिंगली मुख्य रूप से कपास की फसल की विभिन्न किस्मों के तुलनात्मक अध्ययन में व्यस्त रहे। उन्हें पट्टी वेंकैया के नाम से भी जाना जाता था क्योंकि उन्होंने कंबोडिया कपास में रिसर्च की थी। पट्टी का अर्थ है 'कपास' जो मछलीपटट्नम के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। भाषाओं के प्रति उनके प्रेम ने भी लोगों का ध्यान खींचा। पिंगलि 'जापान वेंकय्या' के रूप में भी प्रसिद्ध थे क्योंकि 1913 में उन्होंने आंध्र प्रदेश के एक कस्बे, बापटला के एक स्कूल में जापानी भाषा में एक पूर्ण व्याख्यान दिया। उन्होंने 1916 से 1921 तक विभिन्न झंडों के अध्ययन में अपने आप को

समर्पित कर दिया। उन्होंने इन पाँच सालों में तीस विभिन्न देशों के राष्ट्रीय ध्वजों पर शोध किया और भारत का खुद का राष्ट्रीय ध्वज होने की आवश्यकता पर बल दिया। उनका यह विचार गाँधी जी को बहुत पसंद आया। गाँधी जी ने उन्हें राष्ट्रीय ध्वज तैयार करने का सुझाव दिया। पिंगलि वेंकय्या ने लाल और हरे रंगों युक्त झंडे की परिकल्पना की। इस बीच जालंधर के लाला हंसराज ने झंडे में चक्र चिन्ह लगाने का सुझाव दिया। इस चक्र को प्रगति और आम आदमी के प्रतीक के रूप में माना गया। गाँधी जी चाहते थे कि ध्वज को 1921 के विजयवाड़ा में हो रहे कांग्रेस अधिवेशन में प्रस्तुत किया जाए, लेकिन इसे समय पर तैयार नहीं किया जा सका। परंतु इसके बनने के बाद देश में कांग्रेस पार्टी के सारे अधिवेशनों में दो रंगों वाले इस झंडे का प्रयोग किया जाने लगा हालांकि उस समय इस झंडे को कांग्रेस की ओर से अधिकारिक तौर पर स्वीकृति नहीं मिली थी। बाद में, गांधी जी के सुझाव पर पिंगलि वेंकय्या ने शांति के प्रतीक सफेद रंग को भी राष्ट्रीय ध्वज में शामिल किया। 1931 में कांग्रेस ने कराची के अखिल भारतीय सम्मेलन में केसरिया, सफ़ेद और हरे तीन रंगों से बने इस ध्वज को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया। बाद में राष्ट्रीय ध्वज में इस तिरंगे के बीच चरखे की जगह अशोक चक्र ने ले ली। राष्ट्रीय ध्वज बनाने के बाद पिंगलि वेंकय्या को 'झंडा वेंकय्या' के नाम से भी पहचान मिली। 04 जुलाई 1963 को पिंगलि वेंकय्या का निधन हो गया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को देखते हुए उन्हें मरणोपरांत 2009 में एक डाक टिकट के माध्यम से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय ध्वज के प्रदर्शन संबंधी महत्वपूर्ण बिंदु

'भारतीय झंडा संहिता 2002', 26 जनवरी 2002 से लागू की गई थी। इसके तहत भारतीय झंडा संहिता को तीन भागों में बांटा गया है। पहले भाग में राष्ट्रीय ध्वज का सामान्य विवरण शामिल है। दूसरे भाग में जनता, निजी संगठनों, शैक्षिक संस्थानों आदि के सदस्यों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज के प्रदर्शन के विषय में बताया गया है। संहिता का तीसरा भाग केंद्र और राज्य सरकारों तथा उनके संगठनों और अभिकरणों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने के विषय में जानकारी देता है। इसके अलावा संहिता में यह भी उल्लेख किया गया है कि तिरंगे का इस्तेमाल व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए नहीं किया जा सकता है। ध्वज का उपयोग किसी उत्सव के रूप में या किसी भी तरह के सजावट के प्रयोजनों के लिए नहीं किया जाना चाहिए। यही नहीं, अगर कहीं आधिकारिक प्रदर्शन होना है तो केवल भारतीय मानक ब्यूरो के निर्देशित विनिर्देशों के अनुरूप चिह्न वाले झंडे का ही इस्तेमाल किया जा सकता है। पहले निजी परिसरों में भारतीय ध्वज फहराने की अनुमति नहीं थी। कांग्रेस के पूर्व सांसद और उद्योगपति नवीन जिंदल ने निजी परिसर में झंडा फहराने को लेकर एक लंबी कानूनी लड़ाई लड़ी। उनकी 1995 की याचिका की सुनवाई पर फैसला सुनाते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय ने निजी परिसरों में राष्ट्रीय ध्वज फहराने की अनुमति दी थी। 30 दिसंबर 2021 के आदेश के जरिये भारत ध्वज संहिता 2002 को संशोधित किया गया है और राष्ट्रीय ध्वज हाथ से काते, हाथ से बुने हुए या मशीन से बने कपास/पॉलिएस्टर/ऊन/रेशम/खादी से बनाया जाएगा। यानी संशोधन करके पॉलिएस्टर और मशीन से बने झंडे को भी अनुमति दी गई। इसके बाद 20 जुलाई 2022 को एक अन्य संशोधन के तहत केंद्र ने राष्ट्रीय ध्वज को दिन के साथ–साथ रात में भी फहराने की अनुमति प्रदान कर दी है। लेकिन यह तब ही होगा जब झंडा किसी खुले स्थान पर किसी के घर पर फहराया गया हो। इसके पहले के नियमों के अनुसार तिरंगा केवल सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच ही फहराने का नियम था। यह संशोधन 'हर घर तिरंगा' अभियान को ध्यान में रखते हुए किया गया है। 'हर घर तिरंगा' आज़ादी का अमृत महोत्सव के तत्त्वावधान में लोगों को तिरंगा घर लाने और भारत की आज़ादी के 75वें वर्ष पर इसे फहराने के लिये प्रोत्साहित करने हेतु एक अभियान है। ध्वज के साथ हमारा संबंध हमेशा व्यक्तिगत से अधिक औपचारिक और संस्थागत रहा है। स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में एक राष्ट्र के रूप में ध्वज को सामूहिक रूप से घर पर फहराना न केवल तिरंगे से व्यक्तिगत संबंध स्थापित करना है, बल्कि यह राष्ट्र–निर्माण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक भी बन जाता है। इस पहल का उद्देश्य लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना जगाना और भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना है। सबसे महत्वपूर्ण बात, भारतीय संविधान अनुच्छेद 51 क (अ) के अनुसार, भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों एवं संस्थानों, राष्ट्रीय ध्वज तथा राष्ट्रगान का सम्मान करे। अतः, आजादी के अमृत महोत्सव के सुअवसर पर हम सब संकल्प लें कि स्वतंत्रता आंदोलन के अमर बलिदानियों की भावनाओं का पूरा–पूरा सम्मान करते हुए हम राष्ट्रीय ध्वज को अपने प्राणों से भी ज्यादा महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान समझें। जय हिंद।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है

महावीर प्रसाद द्विवेदी

आजादी के 75वें वर्ष में अमृत काल का संकल्प

राजेश कुमार कर्ण*

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी आजादी ने अमृत महोत्सव वर्ष से लेकर आजादी के शताब्दी वर्ष तक के 25 वर्षों के कालखंड को अमृत काल के रूप में मनाने का निर्णय लिया और देश की जनता का आह्वान किया कि आजादी के अमृत महोत्सव के वर्ष में हम व्यक्तिगत रूप से भी कोई ना कोई संकल्प लें, जो भारत को आगे बढ़ाए। ग्राम पंचायत से लेकर संसद तक और सरकार का हर विभाग एक लक्ष्य तय करे और संकल्प ले जो देश को आगे बढ़ाए। ये संकल्प लेने का वर्ष है और ये 25 साल का अमृत काल इन संकल्पों को सिद्ध करने का काल है। भारत आने वाले 25 वर्षों में दीर्घकालिक सोच के साथ जिन संकल्पों को साकार करने जा रहा है, वही शताब्दी वर्ष की विरासत बनेगी। प्रधानमंत्री जी की सोच बेहद स्पष्ट है कि आज के भारत की विकास यात्रा, कल के नए भारत की समृद्ध और गौरवशाली विरासत बने, भारत विकसित देश बने।

आजादी का अमृत महोत्सव अब आजादी की ऊर्जा का अमृत, नए विचारों का अमृत, नए संकल्पों का अमृत और आत्मनिर्भरता का अमृत बन गया है। भारत अमृत महोत्सव वर्ष में नींव रखकर एक भव्य और गौरवशाली राष्ट्र के निर्माण की दिशा में विकास की यात्रा शुरू कर चुका है ताकि अमृत काल की विकास यात्रा, कल के भारत की समृद्ध व गौरवमयी विरासत बने। 15 अगस्त 2022 तक मनाए जाने वाले इस अमृत महोत्सव की शुरुआत आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने से 75 सप्ताह पहले दांडी यात्रा की वर्षगांठ पर 12 मार्च 2021 को जब शुरू हुआ तो इसका उद्देश्य भी बेहद अमृत था। आजादी के संघर्ष की तरह ही जनसहभागिता को इसका आधार बनाया गया ताकि 130 करोड़ देशवासी आजादी के अमृत महोत्सव से जब जुड़ें तब लाखों स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणा लें और बड़े से बड़े लक्ष्यों को पूरा करने की सोच प्रबल हो। आजादी के 75 साल का ये अवसर एक अमृत की तरह है जो वर्तमान पीढ़ी को प्राप्त होगा। यह एक ऐसा अमृत बना है जो जन–जन को प्रतिपल देश के लिए जीने, देश के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित कर रहा है।

केन्द्र सरकार द्वारा आजादी के 75वें वर्ष में राष्ट्र को नए सिरे से परिभाषित करने के लिए नई पहल, कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं के साथ भविष्य की योजना को आकार दिया जा रहा है ताकि अगले 25 वर्ष यानी 2047 में जब भारत आजादी का शताब्दी वर्ष मनाए तब भारत दुनिया के शीर्ष पर स्थापित हो। इसी उद्देश्य से अगले 25 वर्ष को अमृत काल का नाम देकर अमृत यात्रा की शुरुआत की गई है।

आजादी का अमृत महोत्सव एक वर्ष से अधिक की यात्रा में लंबा सफर तय कर चुका है। जैसे–जैसे यह सफर आगे बढ़ा आजादी के अनगिनत संघर्ष, अनगिनत बलिदानों की ऊर्जा पूरे भारत में फैलती चली गई। यह सब संभव हो पाया जन–सहभागिता से। आजादी का अमृत महोत्सव में जनसहभागिता के साथ आत्मनिर्भरता को आंदोलन बनाया गया तो कला–संस्कृति, गीत और संगीत के रंग भी खूब भरे। चाहे इनोवेशन चैलेंज हो, राष्ट्रगान हो, या फिर आजादी के सेनानी, रंगोली प्रतियोगिता, हर जगह बच्चों, युवाओं से लेकर महिलाओं तक की जन सहभागिता दिखी। आजादी के अमृत महोत्सव में हो रहे इन सारे आयोजनों का सबसे बड़ा संदेश यही है कि हम सभी देशवासी अपने कर्तव्य का पूरी निष्ठा से पालन करें। इसीलिए अगले 25 साल का ये अमृतकाल हर देशवासी के लिए कर्तव्यकाल की तरह है।

इस यात्रा में अपने सामर्थ्य के साथ प्रगति के लिए अधीर भारत, आत्मनिर्भरता की बुलंदियां छूने को संकल्पबद्ध है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने ठीक ही कहा है कि 'अगर हमें आजादी के 100 वर्ष पर, भारत को नई ऊंचाई पर ले जाना है तो उसके लिए परिश्रम की पराकाष्ठा करनी होगी... और परिश्रम का कोई शॉर्ट–कट नहीं होता।'

आजादी के अमृत महोत्सव का उद्देश्य अपने नाम की तरह ही अमृत है। इसमें सरकार की सामूहिक शक्ति के साथ किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए जुट जाने की भावना के साथ सार्वजनिक, निजी क्षेत्र, एनजीओ–संस्थाओं और समाज के सभी वर्ग को साथ लाकर 'सबका प्रयास' की भावना को साकार करना है। इसकी योजना और रणनीति बनाते वक्त स्वतंत्रता संघर्ष, संस्कृति–अध्यात्म, पोषण, खेल–फिटनेस, पर्यावरण व सतत विकास, कानूनी सहायता सभी तक, अंतिम व्यक्ति तक लाभ, इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास, सुशासन, खाद्य व कृषि, इनोवेशन, विज्ञान–तकनीक जैसे सभी विषयों को ध्यान में रखा गया है। इस दौरान लगभग 50 हजार से अधिक आयोजन देश–विदेश में हो चुके हैं जिसमें लगभग 55 मंत्रालयों/विभागों ने समन्वित प्रयासों से जन–जन को इससे जोड़ा है।

औसतन देखा जाए तो हर घंटे अमृत महोत्सव से जुड़े चार कार्यक्रम आयोजित हुए हैं जिनमें इंडिया गेट पर नेताजी का होलोग्राम, उपभोक्ताओं का सशक्तिकरण, छात्रों द्वारा

* *आशुलिपिक सहायक ग्रेड–II, वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नोएडा*

प्रधानमंत्री को पोस्टकार्ड लिखना, नवीकरनीय ऊर्जा, पोषण माह–पोषण बगीचा, इनोवेशन–हैकॉथन, विज्ञान सर्वत्र पूज्यते, अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय सम्मेलन, राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव, उमंग उड़ान–मकर संक्रांति, भारतम्, धारा–वैदिक गणित आदि कार्यक्रमों का नाम उल्लेखनीय है। अमृत महोत्सव के सभी आयोजनों को निम्नलिखित पांच थीम पर रखा गया– (1) आजादी का संघर्ष– आजादी का आंदोलन कैसे हुआ? उन गुमनाम नायकों की कहानी, जिन्हें या तो भुला दिया गया या फिर इतिहास में वह स्थान नहीं मिला, जिनके वे हकदार थे। ऐसे महानायकों की कहानी व प्रेरक गाथा को बाहर लाना और उनसे प्रेरणा लेना। (2) 75वें वर्ष पर संकल्प–निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रतिबद्धता। उन लक्ष्यों के बारे में प्रचार–प्रसार करना। उन क्षेत्रों से जुड़े कार्यक्रम आयोजित करना। इनमें सभी सरकारों, गैर सरकारी संगठनों की सहभागिता से सफलता के मार्ग की रूपरेखा बनाना। (3) 75वें वर्ष पर विचार– वसुधैव कुटुंबकम, राष्ट्रीय सुरक्षा, इनोवेशन, शांति–एकता, भारत की अवधारणा, विकास, पर्यावरणीय सतत विकास और न्याय जैसे विचार और विषय पर काम करना जो भारत को एकसूत्र में बांधे रखे। (4) 75वें वर्ष पर उपलब्धियाँ– 75वें वर्ष तक विभिन्न क्षेत्रों जैसे– महिला, युवा, गांव, पर्यावरण, प्रवासी, रक्षा और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में हुए क्रांतिकारी परिवर्तन को आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में उत्सव का रूप देना ताकि अमृत काल की यात्रा को नई गति मिल सके। (5) 75वें वर्ष पर कदम– स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, आत्मनिर्भर भारत, एक भारत–श्रेष्ठ भारत, एक देश–एक राशन कार्ड, एक कृषि बाजार, सबका साथ–सबका विकास–सबका विश्वास, कौशल विकास, डिजिटल इंडिया, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति और जीएसटी जैसी पहल को दिशा देना।

आजादी का अमृत महोत्सव में देश के जन–जन के उत्साह ने जनसहभागिता का रंग भर दिया। आजादी के अमृत महोत्सव के इसी कालखंड में कोविड की दूसरी और तीसरी लहर के कारण कठिन समय आया और कई कार्यक्रमों को हाईब्रिड मोड में किया गया। छात्रों द्वारा प्रधानमंत्री मोदी जी को पोस्टकार्ड लिखे गए, स्वतंत्रता स्वर जिसमें ब्रिटिश द्वारा प्रतिबंधित कविताओं का संकलन हुआ, वंदे भारत नृत्य उत्सव, 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के स्मरण का कार्यक्रम जैसे अनेकों कार्यक्रम हुए। राष्ट्रगान का कार्यक्रम हो, रंगोली बनाने का कार्यक्रम हो, स्वतंत्रता संग्राम के अनजाने वीरों पर शोध और संकलन के कार्यक्रम हो, मेरा गांव, मेरी धरोहर कार्यक्रम हो, यह नागरिकों के मन में नई ऊर्जा का संचार कर रहा है। युवाओं को गुमनाम नायकों की कहानी लिखने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। आजादी की लड़ाई में आदिवासी समाज के अप्रतिम योगदान को हर घर तक पहुंचाने के लिए अमृत महोत्सव में अनगिनत प्रयास किए जा रहे हैं। आजादी के बाद पहली बार आदिवासी गौरव और विरासत को प्रदर्शित करने के लिए आदिवासी संग्रहालय बनाए जा रहे हैं। पिछले वर्ष ही 15 नवंबर को बिरसा मुंडा जयंती को 'राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाने की शुरूआत की गई है।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 125वीं जयंती को एक अवसर बनाया गया। सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था। सुभाष चंद्र बोस की याद में प्रत्येक वर्ष 23 जनवरी को पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वतंत्र भारत के विचार के प्रति अपनी उग्र प्रतिबद्धता दिखाने के लिए नेताजी आजाद हिंद के गठन जैसे साहसी कदम उठा कर देश की आजादी के लिए लड़े थे। वे एक महान राष्ट्रभक्त थे. उनके आदर्श और बलिदान हर भारतीय को हमेशा प्रेरित करते रहेंगे। राजा सुहेलदेव, राजा महेंद्र प्रताप जैसे कई महापुरुषों के योगदान का स्मरण कर आजादी के आंदोलन की एक नई पीठिका तैयार करनी शुरु की गई। इसके पीछे भारत सरकार की सोच है कि 1857 से 1947 तक के स्वाधीनता संघर्ष को आने वाली पीढ़ी के मन–मस्तिष्क में फिर से जागृत किया जाए क्योंकि सिर्फ इतिहास इसकी जानकारी युवा पीढ़ी को नहीं दे सकता। अनेक घटनाएं और वीर नायकों के चरित्र को उनके मानस पटल पर जीवित करना पड़ेगा, तभी लोग अपने आप को आजादी के संघर्ष के साथ जोड़ पाएंगे। वास्तव में अमृत महोत्सव का आयोजन 75 वर्षों की उपलब्धियों को भी दुनिया के सामने रखने के साथ अगले 25 वर्षों के लिए एक रूपरेखा और संकल्प पेश कर रहा है।

आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में देश के प्रत्येक व्यक्ति को 75 साल की उपलब्धियों से जुड़ने का सौभाग्य मिला है। पिछले कुछ वर्षों में भारत में आए क्रांतिकारी व परिवर्तनकारी बदलाव ने भारत को वैश्विक मंच पर प्रथम पंक्ति में बिठाने में सफलता हासिल की। विकास के सभी क्षेत्रों में कई कीर्तिमान सबके प्रयास के मंत्र के साथ रचे गए हैं। इतिहास और संस्कृति को भी संरक्षित रखने और सवंर्धित करने में सफलता हासिल की।

आजादी के 75 वर्ष का ये पर्व ऐसा महोत्सव बन गया जिसमें स्वाधीनता संग्राम की भावना, उसके त्याग–समर्पण का साक्षात अनुभव आज की पीढ़ी को भी होने लगा। यह एक ऐसा महोत्सव बन गया है जिसमें सनातन भारत के गौरव की भी झलक है, आधुनिक भारत की चमक भी है, मनीषियों के आध्यात्म का प्रकाश भी है, भारत के वैज्ञानिकों की प्रतिभा और सामर्थ्य का दर्शन भी है।

हरियाणा के यमुनानगर में आजादी का अमृत महोत्सव के तहत राजकीय स्कूलों के बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में उन्नत करने के लिए पाठन कौशल कार्यक्रम की शुरूआत की गई है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा 3 से 8वीं तक के सभी बच्चों को पुस्तकालय में अध्यापक के मार्गदर्शन में प्रतिदिन आधा या एक घंटा किताब पढ़ने के लिए दी जाती है। बच्चे

किताबें पढ़ने के बाद अपनी कहानियों को सुबह प्रार्थना सभा में सुनाते हैं। इस कार्यक्रम से बच्चों में स्वयं लिखने और पढ़ने की प्रतिभा उजागर हो रही है।

आजादी के अमृत महोत्सव की याद में भावी पीढ़ी को कुछ देने के संकल्प को पूरा करने के लिए प्रत्येक जिले में 75 अमृत सरोवर बनाए जा रहे हैं जो आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत उपयोगी होगा। यह धरती माँ के लिए भी लाभप्रद होगा। हमने इतना पानी खींच लिया है कि हमारी धरती माँ प्यासी है। इस धरती माँ का प्यास बुझाना इस धरती माँ की संतान के रूप में हमारा कर्तव्य है। अमृत सरोवर बनने से प्रकृति के प्राणों में भी एक नई ऊर्जा आ जाएगी, एक नई चेतना आ जाएगी। इससे छोटे किसानों को लाभ होगा, महिलाओं को लाभ होगा, इतना ही नहीं यह तो जीव दया का काम होगा, पशु–पक्षियों के लिए भी बहुत मददगार होगा। अर्थात प्रत्येक जिले में 75 अमृत सरोवरों का निर्माण मानवता की बहुत बड़ी सेवा है जिसे हमें जरूर करनी चाहिए।

प्रत्येक जिले में यह अमृत सरोवर नए हों, बड़े हों, इनके निर्माण में सरकार की तरफ से मनरेगा के पैसे की मदद भी ली जा रही है। हरियाणा के कुरूक्षेत्र के किरमच गांव में अमृत सरोवर योजना का शुभारंभ किया गया है। आजादी के अमृत महोत्सव में ऐतिहासिक तालाबों का अमृत सरोवर योजना के तहत जीर्णोद्धार व सौंदर्यीकरण का कार्य किया जा रहा है। इस अमृत सरोवर योजना से पानी की एक–एक बूंद को बचाने का भी अनोखा प्रयास होगा और यह सरोवर निश्चित ही भावी पीढ़ी को निर्मल जल की सौगात देगा। साथ ही इससे गांव के सौंदर्यीकरण में भी चार चांद लगेंगे।

आजादी के अमृत महोत्सव की श्रृंखला में 1 जुलाई से सिंगल यूज प्लास्टिक को बनाने, बेचने, जमा करने और निर्यात करने पर पूरी तरह प्रतिबंध लग गया है। यह प्रतिबंध इसलिए लगाया गया है ताकि सिंगल यूज प्लास्टिक के कचरे से होने वाले प्रदूषण को कम किया जा सके। सिंगल यूज प्लास्टिक को हम एक बार इस्तेमाल कर फेंक देते हैं जिससे पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है।

आने वाले दो वर्षों में देश के 75 बड़े नगर निकायों में गोबरधन बायो सीएनजी प्लांट बनाने पर काम किया जा रहा है। ये अभियान भारत के शहरों को स्वच्छ बनाने, प्रदूषण रहित बनाने, क्लीन एनर्जी की दिशा में बहुत मदद करेगा।

हम आजादी के 75 वर्ष पर दुनिया में पहुंचने के लिए नए–नए तौर–तरीके अपनाएं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा कि प्रवासी भारतीयों का राज्यवार समूह बनाकर उस राज्य के साथ निर्यात पर वर्चुअल समिट करें। इनमें तय हो कि हमारे राज्य की 5 या 10 ऐसी टॉप प्रायरटी की चीजें दुनिया के कम से कम 75 देशों में निर्यात हो।

आत्मनिर्भर नारी शक्ति से संवाद में प्रधानमंत्रीजी ने आह्वान किया कि आप अपने गांवों में तय कर सकते हैं कि आजादी के 75 साल हैं, हम कम से कम एक साल में 75 घंटे गांव में कोई न कोई स्वच्छता का काम करेंगे। इस 15 अगस्त से अगले वर्ष 15 अगस्त तक सखी मंडल की सभी बहनें ऐसा संकल्प ले सकती हैं। जल संरक्षण का काम कर सकते हैं, अपने गांव के कुएं, तालाब की मरम्मत, इनके उद्धार का अभियान भी चला सकते हैं।

24 जून 2021 को टॉयकथॉन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री जी ने आह्वान किया कि अमृत महोत्सव में खेल–खिलौने के क्षेत्र में इनोवेशन हो। आजादी के आंदोलन से जुड़ी दास्तां, क्रांतिवीरों के शौर्य, लीडरशिप की घटनाओं को खेल के रूप में तैयार किया जाए। छात्रों से संवाद में प्रधानमंत्री जी ने कहा कि आजादी के 75 साल के उपलक्ष्य में देश के स्वाधीनता सेनानियों के बारे में भी छात्र जानें। इसके लिए देश ने एक अभियान शुरू किया है और आपको इस अभियान से जुड़ना है। छात्र अपने राज्य की आजादी की लड़ाई से जुड़ी 75 घटनाएं खोजकर निकालें, ये किसी व्यक्ति के संघर्ष से जुड़ी हो सकती हैं, किसी क्रांतिवीर से जुड़ी हो सकती हैं। इन घटनाओं को आप अपनी मातृभाषा में विस्तार से लिखें। इसके अलावा हिंदी–अंग्रेजी में लिख सकें तो ये भी अच्छा होगा। आजादी के 75 साल के महत्वपूर्ण अवसर पर देश के कम से कम 75 जिले ऐसे होंगे जहां पर 75 से ज्यादा जन–औषधि केंद्र होंगे।

देश के 24 राज्यों में फैले ऐसे 75 रेलवे स्टेशनों की पहचान की गई है जहां स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एक नई पहल– आजादी की रेलगाड़ी और रेलवे स्टेशन शुरू की गई है।

बदलाव की अनगिनत कहानियां आजादी के अमृत महोत्सव का सारथी बन रही हैं। आजादी के आंदोलन में जनसाधारण की बड़ी सहभागिता रही है और तब चरखा, नमक जैसे प्रतीक ने जन–जन को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ दिया था। अब आजादी के 75 वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में मनाने की केन्द्र सरकार की सोच भी उसी तरह का प्रतीक बन गई है जो अब अमृत यात्रा से राष्ट्र को स्वर्णिम वर्ष तक एक नया भारत बनाने की दिशा में अग्रसर है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सभी नागरिकों से हर घर तिरंगा को सामूहिक अभियान के रूप में मनाने के क्रम में अपने सोशल मीडिया डीपी को तिरंगे से बदलने का आग्रह किया है। हम शान से तिरंगा फहराएं। 23 अप्रैल 2022 को आजादी के अमृत महोत्सव के तहत बिहार के जगदीशपुर स्थित दुलैर मैदान में वीर कुंवर सिंह विजयोत्सव कार्यक्रम में 78 हजार 220 राष्ट्रीय ध्वज यानी तिरंगा एक साथ फहराकर भारत ने गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया है।

असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान से हमें स्वतंत्रता मिली जिन्होंने हमारे भविष्य निर्माण के लिए अपना वर्तमान दांव पर लगा दिया। आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान

कृतज्ञ राष्ट्र उनके साहस और बलिदान को नमन करता है। इसके लिए डिजिटल ज्योति से श्रद्धांजलि देने की व्यवस्था की गई जिसके लिए अपनी फोटो, विवरण और संदेश के साथ श्रद्धांजलि दी जा सकती है। यह डिजिटल ज्योति सेंट्रल पार्क, कनॉट प्लेस में प्रज्ज्वलित होती है। इस माध्यम से लाखों लोगों ने स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि दी है।

आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर यह मंथन भी आवश्यक है कि गांधीजी ने अहिंसा को एक दमनकारी हुकूमत के विरुद्ध किस प्रकार एक हथियार बना दिया। अहिंसा उनकी सविनय अवज्ञा का आधार बन गई। किस प्रकार गांधी जी ने लोक नैतिकता का पूरा जीवन दर्शन प्रतिपादित किया और देश भर के लोगों को सफलतापूर्वक उससे जोड़ा। अहिंसा का मूलमंत्र इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमारे देश के सभ्यतागत और सांस्कृति मूल्यों के निकट है। गांधीजी को स्वाधीनता आंदोलन के उन सभी घटकों का समर्थन मिलता रहा, जिन्होंने भारत की स्वाधीनता के लिए, अद्भुत साहत के साथ अलग तरह से संघर्ष किया।

अमृत काल में नए भारत का लक्ष्य अपने स्वाधीनता सेनानियों के सपनों को पूरा करना है। नए भारत को उनके सपनों का सशक्त एवं समृद्ध भारत बनाना है। एक ऐसा भारत जिसमें गरीब, किसान, पिछड़ा, आदिवासी सबके लिए समान अवसर हों। अमृत काल में भारत की सोच समावेशी है और करोड़ों लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने में जुटा है। भारत आज अभूतपूर्व संभावनाओं से भरा है। एक मजबूत–स्थिर–निर्णायक सरकार के नेतृत्व में नए सपने भी देख रहा है, नए संकल्प भी ले रहा है और संकल्पों को सिद्धि में परिवर्तित करने के लिए जी–जान से जुटा हुआ भी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के शब्दों में ''2047 में जब देश की आजादी के 100 साल होंगे, तब हम देश को जहां ले जाना चाहते हैं, उन सपनों को पूरा करने के लिए पूरा देश चल पड़ेगा। देश में हो रहे नए–नए फैसले, नई–नई सोच, आत्मनिर्भर भारत जैसे संकल्प इन्हीं प्रयासों के साकार रूप हैं। ये उन स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को भी पूरा करने का प्रयास है, भारत को उस ऊंचाई पर पहुंचाने का प्रयास है, जिसकी इच्छा रखते हुए अनेकों वीरों ने फांसी के फंदे को गले लगा लिया था, अपना जीवन काल काल कोठरी में बिता दिया था।''

पिछले 75 वर्षों में असाधरण चुनौतियों से सफलतापूर्वक निपटने के बाद दुनिया में सामर्थ्यवान भारत की जो तस्वीर उभरकर आई है, उसके आधार पर देश में वर्ष 1947 तक विकसित देश बनने के बड़े लक्ष्य को हासिल करने की पूरी क्षमता है। वर्तमान में भारत विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। वैश्विक मंदी की चुनौतियों के बीच वर्ष 2021–22 में भारत ने 83.57 अरब डालर का रिकार्ड एफडीआई प्राप्त किया। भारत का उत्पाद एवं सेवा निर्यात लगभग 668 अरब डालर के ऐतिहासिक स्तर पर पहुंचना इस बात का संकेत है कि अब भारत निर्यात आधारित अर्थव्यवस्था की डगर पर बढ़ रहा है। आज दुनिया के कुल 60 प्रतिशत टीकों का उत्पादन भारत में हो रहा है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार भी लगभग 573 अरब डालर के मजबूत स्तर पर दिखाई दे रहा है जो दुनिया में चौथा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा भंडार है। वर्ष 2021–22 के चौथे अग्रिम अनुमान के अनुसार देश में कुल खाद्यान्न उत्पादन रिकार्ड 31.57 करोड़ टन होगा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 49.8 लाख टन अधिक है। डिजिटल इंडिया मुहिम देश को डिजिटलीकृत एवं ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था बनाने में अहम भूमिका निभा रही है। दुनिया के 40 प्रतिशत ऑनलाइन भुगतान भारत में हो रहे हैं। भारत स्टार्टअप और साफ्टवेयर से लेकर स्पेस जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सामर्थ्यवान देश के रूप में उभर रहा है। विभिन्न रेटिंग एजेंसियों के अनुसार वित्त वर्ष 2022–23 में भारतीय अर्थव्यवस्था लगभग सात प्रतिशत दर से बढ़ेगी, जो दुनिया में सबसे अधिक होगी।

किसी वरिष्ठ अर्थशास्त्री ने ठीक ही लिखा है कि जब हम इस प्रश्न पर विचार करते हैं कि हमें विकसित देश बनने के लिए कितने और कैसे प्रयास करने होंगे तो हमारे सामने दुनिया के 38 विकसित देशों का संगठन 'ओईसीडी' (आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन) दिखाई देता है। भारत को इस समूह के सदस्य देशों के बराबर पहुंचने के लिए लगातार 25 वर्षों तक लगातार लगभग सात से आठ प्रतिशत की विकास दर से बढ़ना होगा, जो मुश्किल नहीं है। हमें विकसित देश बनने के लिए चार सबसे अहम बातों पर ध्यान देना होगा। पहली, नई पीढ़ी को नए कौशल से सुसज्जित करें। दूसरी, शोध–अनुसंधान एवं नवाचार पर अधिक ध्यान दें। तीसरी, दुनिया का मैन्युफैक्चरिंग हब बनें। चौथी, कृषि क्षेत्र में ग्लोबल लीडर बनें। भारत को विकसित देश बनाने में देश की नई पीढ़ी की अहम भूमिका होगी। अगले वर्ष तक भारत दुनिया का सर्वाधिक आबादी वाला देश बन जाएगा। देश में श्रम योग्य आयु वाली आबादी का बढ़ना 2045 तक जारी रहेगा। इसमें भारत चीन को पीछे छोड़ देगा।

बढ़ती हुई श्रम योग्य आयु वाली आबादी के पर्याप्त रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है। यहां यह उल्लेख करना जरूरी है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने केंद्र सरकार के मंत्रालयों एवं विभागों में डेढ़ साल के भीतर 10 लाख नियुक्ति का निर्देश दिया है। देश में बड़ी संख्या में युवा सरकारी नौकरियों में करियर बनाना अपनी पहली पसंद मानते हैं। ऐसे में केंद्र सरकार द्वारा बड़ी संख्या में नौकरियों की घोषणा ऐसे युवाओं के लिए बड़ा राहतकारी फैसला है लेकिन केवल इसी से देश में रोजगार की बढ़ी हुई चुनौतियों का सामना नहीं हो सकेगा। इसके लिए कई रणनीतिक कदमों की आवश्यकता है। डिजिटल अर्थव्यवस्था में प्रशिक्षित नई पीढ़ी के लिए रोजगार और स्वरोजगार के अपार अवसर उभरते दिख रहे हैं। विश्व प्रसिद्ध मैकिंजी ग्लोबल इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2025 तक डिजिटल अर्थव्यवस्था के तहत करीब

6.5 करोड़ रोजगार भारत की नई पीढ़ी को मिल सकते हैं। वस्तुतः अब देश और दुनिया में परंपरागत रोजगारों के समक्ष चुनौतियां बढ़ गई हैं। आईटी, टेलीकाम सहित विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर एफडीआई के साथ रोजगार के मौके भी बढ़ रहे हैं। हम उम्मीद करें कि नई डिजिटल अर्थव्यवस्था में रोजगार के अपार अवसरों को ध्यान में रखकर सरकार देश की नई पीढ़ी को एआइ, क्लाउड कंप्यूटिंग, मशीन लर्निंग एवं अन्य नए डिजिटल कौशल के साथ अच्छी अंग्रेजी, कंप्यूटर दक्षता की योग्यताओं से सुसज्जित करने के लिए हरसंभव प्रयास करेगी। ऐसे प्रयासों से जहां देश की नई पीढ़ी के चेहरे पर मुस्कुराहट आ सकेगी, वहीं इससे अर्थव्यवस्था भी तेज गति से आगे बढ़ती हुई दिखाई देगी।

प्राकृतिक जल संसाधन को सुरक्षित रखना और खेती, उद्योग और बढ़ती जनसंख्या के लिए शुद्ध पानी की लगातार बढ़ती मांग को पूरा करना आसान नहीं है लेकिन हमने यह बखूबी किया है। बेशक, पिछले 75 वर्षों में पानी तक लोगों की पहुंच बहुत बढ़ी है और बढ़नी चाहिए। आजादी के समय भारत की लगभग तीन प्रतिशत भूमि पर बाढ़ आती थी, लेकिन अब भारत के 17 राज्यों में सूखा और 9 राज्यों में बाढ़ की मार रहती है। सूखे और बाढ़ का डिजास्टर यह बताता है कि भारत पानीदार देश है लेकिन सही प्रबंधन न होने के कारण बेपानी हो गया है। भारत की आजादी का अमृत काल में भारत को सामुदायिक विकेंद्रित जल प्रबंधन के रास्ते पर चलना होगा। भारत की छोटी–छोटी नदियां जो नाले बन चुकी हैं, उन्हें फिर से नदियां बनाना होगा। इसमें सरकार और जनता दोनों की मिली–जुली भागीदारी होनी चाहिए।

शोध–अनुसंधान एवं नवाचार किसी भी विकसित देश की महत्वपूर्ण विशेषता होती है। इस समय हम अपनी जीडीपी का मात्र 0.67 प्रतिशत ही शोध–अनुसंधान पर खर्च करते हैं। चीन और यूरोपीय संघ में इस पर उनकी जीडीपी का लगभग 2 प्रतिशत, अमेरिका और जापान में करीब तीन प्रतिशत और दक्षिण कोरिया में लगभग 4.5 प्रतिशत व्यय किया जाता है। वैसे तो कोविड–19 भारत में नए चिकित्सकीय शोध–अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देने का एक अवसर बन गया है, फिर भी शोध–अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ने के लिए हमें अपनी कुल जीडीपी का दो प्रतिशत तक इस पर खर्च करना होगा। शोध और विकास के लिए हमें जितना करना चाहिए था उतना हम नहीं कर पाए। हालांकि इस दिशा में अब मजबूती से प्रयास हो रहे हैं। कुछ दशकों पहले तक हमारे सामने मातृ और शिशु मृत्यु दर की गंभीर समस्या थी, लेकिन अनेक स्वास्थ्य एवं जागरूकता कार्यक्रमों द्वारा हम इसे नियंत्रित करने में सफल रहे। देश में कुपोषण की गंभीर समस्या बनी हुई है जिसके उन्मूलन के लिए निरंतर प्रयास हो रहे हैं। उम्मीद है कि 25 वर्ष बाद जब हम अपनी स्वाधीनता का 100वाँ साल मना रहे होंगे यह सवाल हमारे सामने नहीं होगा। आने वाले दिनों में भारत मेडिकल टूरिज्म का बहुत बड़ा हब बन सकता है। हमारे डाक्टर और मेडिकल प्रोफेशनल जो बाहर जाकर सेवाएं दे रहे हैं वे भारत में ही रहकर अपना योगदान दे सकेंगे। अगले 25 वर्षों में भारत दुनिया के लिए एक बड़ी मिसाल बन सकता है। हर देश के पास इलाज के लिए एक ही विधा है जबकि हमारे पास एलोपैथी के साथ–साथ आयुर्वेद, होम्योपैथ, यूनानी, सिद्धा जैसी पद्धतियां हैं। सुरक्षात्मक हेल्थकेयर के रूप में योग ने नए सिरे से अपनी पहचान स्थापित किया है तथा यह देश–दुनिया में एक जन–आंदोलन बन रहा है।

जहां कोविड से विकसित देश की अर्थव्यवस्था को बड़ा झटका लगा वहीं भारत अपने नीतिगत फैसलों से इससे बचा रहा। अमेरिका में मंदी की आहट के बीच भारत अगर मंदी के खतरे से बाहर दिख रहा है तो इसका कारण इसकी कोविड काल के दौरान अपनाई गई सफल नीति है। इसके सकारात्मक पहलुओं को देखकर आज विश्व हैरान है। उन्नत और उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं ने मुख्य रूप से मांग को प्रोत्साहित करने की अपनी नीति पर फोकस किया जबकि भारत ने आपूर्ति की कमी को नियंत्रित करने के लिए कदम उठाए। आत्मनिर्भर भारत अभियान में मैन्युफैक्चरिंग के तहत 24 सेक्टर को प्राथमिकता के साथ आगे बढ़ाया जा रहा है। चीन से आयातित कच्चे माल का विकल्प तैयार करने के लिए पिछले दो वर्ष में सरकार ने पीएलआइ स्कीम के तहत 13 उद्योगों को करीब दो लाख करोड़ रुपए आवंटन सुनिश्चित किए हैं। भारत को दुनिया का नया मैन्युफैक्चरिंग हब बनने की संभावनाओं को साकार करने के लिए सरकार को आत्मनिर्भर भारत अभियान एवं मेक इन इंडिया को सफल बनाने, उत्पाद लागत को घटाने, स्वदेशी उत्पादों की गुणवत्ता में बढ़ोतरी के लिए शोध–अनुसंधान एवं नवाचार पर फोकस करने, श्रम कानूनों को और सरल बनाने, अर्थव्यवस्था के डिजिटलीकरण की रफ्तार तेज करने, लाजिस्टिक की लागत कम करने के साथ विशेष आर्थिक क्षेत्र की नई अवधारणा और नए निर्यात प्रोत्साहनों पर ध्यान केंद्रित करना होगा। इस क्रम में दलहन और तिलहन की उन्नत खेती को भी तेजी से आगे बढ़ाना होगा। देश के के बुनियादी ढांचे को और मजबूत बनाना होगा और कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ानी होगी। रोजगार एवं स्वरोजगार के अधिक प्रयास जरूरी होंगे। शिशु मृत्यु दर एवं कुपोषण में कमी लानी होगी। शिक्षा के ढांचे पर भी नए सिरे से निगाह डालनी होगी। शिक्षा के उन्नयन और कौशल युक्त उच्च शिक्षा में छात्रों का प्रवाह बढ़ाना होगा। भारत को शिक्षा पर न केवल खर्च बढ़ाना होगा, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना होगा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सभी की पहुंच हो।

भारत की प्रगति के लिए यह भी आवश्यक है कि देश उन कमजोरियों को दूर करे, जो समाज की एकजुटता में बाधक हैं। जब तक देश में सामाजित सद्भाव प्रबल नहीं होगा, तब तक राष्ट्र का समग्र उत्थान नहीं होगा। शहरों की दशा

सुधारनी होगी। आज हमारे अधिकांश शहर बदहाली की कहानी कहते हैं। अनियोजित विकास के कारण उनमें सुविधाओं का स्तर विकसित देशों जैसा नहीं है। इसका कारण यह है कि भ्रष्ट तंत्र ने शहरों में बुनियादी ढांचे के विकास के नाम पर मनमानी ही अधिक की है। बेशक भ्रष्टाचार भारत की प्रगति में एक बड़ा अवरोध है। एक समय यह कहा जाता था कि एक रुपये में 85 पैसे भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाते हैं। हाल के वर्षों में स्थिति सुधरी अवश्य है और गरीबों के खातों में डीबीटी के जरिये सीधे पैसा जा रहा है, पर अभी भी भ्रष्ट नेताओं और नौकरशाहों के ठिकानों से जिस तरह नोटों के बंडल और अकूत संपत्ति के दस्तावेज मिलने का सिलसिला कायम है, वह यही बताता है कि भ्रष्ट तत्वों के दुस्साहस में कोई कमी नहीं आई है। यह सिलसिला तोड़नी होगी। इन उपायों को अमल में लाकर हम वर्ष 2047 में आजादी के सौ वर्ष पूरा करने के अवसर पर आर्थिक शक्ति और विकसित भारत बनने के सपने को साकार कर सकेंगे।

भारत के उप राष्ट्रपति माननीय श्री एम. वेंकैया नायडू ने ठीक ही लिखा है कि जब हम स्वाधीनता आंदोलन के स्वर्णिम अध्याय को याद करते हैं तो अपनी भारत माता के प्रति असीम सम्मान और समर्पण का भाव हमें एकसूत्र में बांध देता है। एक दमनकारी औपनिवेशिक शासन से मुक्ति के लिए हमारे महान स्वाधीनता सेनानियों का त्याग और संघर्ष हमें प्रेरित करता है। यह वह समय है जब हम एक आजाद भारत के सपने को पूरा करने के लिए अपने राष्ट्र नायकों और अनगिनत अनजान आंदोलनकारी क्रांतिकारियों के बलिदान को याद करें। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उनके सपनों के एक स्वतंत्र, जीवंत, खुशहाल और समतामूलक भारत के निर्माण के लिए अपना हरसंभव योगदान देने के लिए तत्पर रहें।

भारतीय विरासत कई शताब्दियों पहले की है। यह विशाल है, प्रामाणिक है और आज भी हमारे बीच जीवंत है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि भारत ने ही विश्व को शून्य का ज्ञान दिया। चिकित्सा की बात करें तो ऋषि सुश्रुत व चरक की तमाम संहिताएं भारत की ही देन हैं। अध्ययन–अध्यापन के मोर्चे पर तक्षशिला, नालंदा भारत में ही स्थापित ज्ञान के केंद्र रहे। भारत की इसी पावन भूमि पर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया था। आज गीता के ज्ञान को समूचा विश्व स्वीकारता है और अपना रहा है। देश–विदेश के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में इससे जुड़े अध्ययन–अध्यापन व शोध कार्य हो रहे हैं। भारत भूमि की विरासत में ऐसे अनेक गूढ़ सत्य विद्यमान हैं जो न सिर्फ भारत बल्कि समूचे विश्व की प्रगति, विकास और मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। हम इन विरासतों पर गर्व का अनुभव करते हैं। आज भारत जब सुपरपावर बनने की दिशा में अग्रसर है तो अवश्य ही हमें अपनी उस विरासत को संजोने, संरक्षित करने की ओर भी विशेष ध्यान देना होगा जिसके बूते आज हम इस मुकाम पर पहुंचे हैं।

यह सच है कि सैकड़ों वर्षों की गुलामी के कालखंड ने भारत के अंतर्मन और भारतीयों की भावनाओं को कई गहरे घाव दिए थे, इसके बावजूद हमारी जिजीविशा, जुनून और जोश का कम न होना उसी विरासत की देन है जिसके बूते आज तक भारत की हस्ती बरकरार है। भारत अब नई चेतना, नई उमंग और नए विश्वास के साथ अपने अतीत को सहेजते हुए भविष्य की ओर बढ़ रहा है। प्रो. टंकेश्वर कुमार ने ठीक ही लिखा है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को देखें तो उसमें भारतीयता, भारतीय भाषा ओं में शिक्षा, कौशल विकास, शोध, अनुसंधान, नवाचार और अपनी विरासत पर गर्व का भाव कूट–कूटकर भरा हुआ है। स्वतंत्र भारत की यह पहली ऐसी शिक्षा नीति है जो पूरी तरह से भारतीय संकल्पों, भारतीयता के भाव और भारतीय सोच के साथ भारत को विकसित देश बनाने का मार्ग प्रशस्त कर रही है। रास्ता लंबा है और इसमें हर कदम पर चुनौतियां हैं, लेकिन इतिहास गवाह है कि भारत ने सदैव चुनौतियों से पार पाते हुए विश्व को राह दिखाई है। यह भारत देश ही है जो कि वसुधैव कुटुंबकम की बात करता है। एक सच्चा नागरिक होने के नाते हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपने प्रधानमंत्री, जो स्वयं प्रधान सेवक के रूप में देश की प्रगति के लिए अनवरत प्रयासरत हैं, द्वारा दिए संकल्पों को अपनाएं और आत्मनिर्भर भारत, विश्वगुरू भारत, समृद्ध भारत, सुपर पावर भारत, सशक्त भारत के लिए जारी प्रयासों में योगदान दें। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए हमें हमारी विरासत से प्रेम और उस पर गर्व करते हुए आगे बढ़ना होगा। कोई भी देश तब तक विकास के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता जब तक वो अपनी विरासत को सहेजना नहीं जानता। हमारी कला–संस्कृति और ऐतिहासिक विरासत ही वो माध्यम है, जो हमें औरों से अलग पहचान दिलाती हैं। यही वो माध्यम है जो हमें पूर्वजों के ज्ञान को जानने–समझने और आत्मसात करते हुए भविष्य की चुनौतियों से लड़ने और उन पर विजय हासिल करने का बल प्रदान करती है।

जहां तक सफलता की बात है तो इतिहास गवाह है कि भारत ने सदैव विश्व समुदाय को भविष्य की राह दिखाई और आज भी उसी जज्बे के साथ मानवता की भलाई हेतु प्रयासरत है। योग भारतीय पुरातन संस्कृति का ऐसा ही प्रमाण है जो कई वर्षों से भारत की आत्मा में रचा–बसा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रयासों का ही परिणाम है कि भारतीय योग की महत्ता को आज समूचा विश्व स्वीकार करते हुए उसे अपना रहा है। संपूर्ण विश्व भी आज इस बात को समझता है कि भारतभूमि और इसके लोग ही हैं जो अपनी क्षमताओं के सहारे असाध्य लक्ष्यों को प्राप्त करने का दम रखते हैं। यकीनन भारत की मिट्टी में वो ताकत है, वो सामर्थ्य है जिसके बूते हम सदियों से अपनी पहचान को बनाए रखने में कामयाब रहे हैं। विरासत पर गर्व का यही भाव हमें विश्व–पटल पर विकसित राष्ट्र के मुकाम पर स्थापित करने में मददगार साबित होगा।

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान द्वारा प्रकाशित जर्नल

लेबर एंड डेवलपमेंट

लेबर एंड डेवलपमेंट संस्थान की एक छमाही पत्रिका है, और यह सैद्धांतिक विश्लेषण एवं आनुभविक अन्वेषण के जरिए श्रम के विभिन्न मुद्दों का प्रसार करने के लिए समर्पित है। इस पत्रिका में आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक मुद्दों के साथ–साथ विधिक पहलुओं पर बल देते हुए श्रम एवं संबंधित विषयों के क्षेत्र में उच्च शैक्षिक गुणवत्ता वाले लेखों का प्रकाशन किया जाता है। साथ ही, विशेषकर विकासशील देशों के संदर्भ में उन लेखों पर अनुसंधान टिप्पणियों एवं पुस्तक समीक्षाओं का भी इसमें प्रकाशन किया जाता है।

अवार्ड्स डाइजेस्टः श्रम विधान का जर्नल

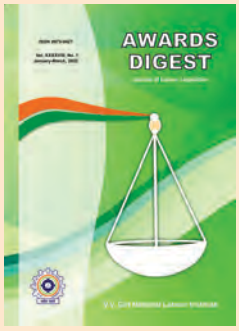

अवार्ड्स डाइजेस्ट एक तिमाही जर्नल है, जिसमें श्रम और औद्योगिक संबंधों के क्षेत्र के अद्यतन मामला विधियों का सार प्रकाशित किया जाता है। इस जर्नल में उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों, प्रशासनिक अधिकरणों तथा केंद्रीय सरकारी औद्योगिक अधिकरणों द्वारा श्रम मामलों के बारे में दिए गए निर्णय प्रकाशित किए जाते हैं। इसमें श्रमकानूनों से संबंधित लेख, उनमें किए गए संशोधन, अन्य संगत सूचना शामिल होती है। यह पत्रिका कार्मिक प्रबंधकों, ट्रेड यूनियन नेताओं और श्रमिकों, श्रम कानूनों के परामर्शदाताओं, शैक्षिक संस्थानों, सुलह अधिकारियों, औद्योगिक विवादों के मध्यस्थों, प्रैक्टिस करने वाले अधिवक्ताओं और श्रम कानून के विद्यार्थियों के लिए एक बहुमूल्य संदर्भ पत्रिका है।

श्रम विधान

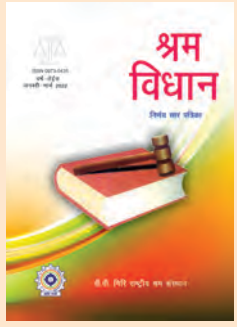

श्रम विधान तिमाही हिन्दी पत्रिका है। श्रम कानूनों और उनमें समय–समय पर होने वाले बदलावों की जानकारी को आधारिक स्तर (Grass Roots Level) तक सरल और सुबोध भाषा में पहुंचाने के लिए इस पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। इस पत्रिका में संगठित और असंगठित दोनों क्षेत्रों के लिए अधिनियमित मौजूदा कानूनों की सुसंगत जानकारी, उनमें होने वाले संशोधनों, श्रम तथा इससे संबद्ध विषयों पर मौलिक एवं अनूदित लेख, भारत सरकार द्वारा समय–समय पर जारी अधिसूचनाओं के प्रकाशन के साथ–साथ श्रम से संबंधित मामलों पर उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों तथा केंद्रीय प्रशासनीक न्यायाधिकरणों द्वारा दिए गए फैसलों को सार के रूप में प्रकाशित किया जाता है।

चंदे की दरः लेबर एंड डेवलपमेंट पत्रिका के लिए वार्षिक चंदा, व्यक्तियों के लिए 150 रुपए तथा संस्थानों के लिए 250 रुपए है। अवार्ड्स डाइजेस्ट पत्रिका के लिए वार्षिक चंदा, व्यक्तियों के लिए 240 रुपए तथा संस्थानों के लिए 300 रुपए है। श्रम विधान पत्रिका के लिए वार्षिक चंदा, व्यक्तियों के लिए 240 रुपए तथा संस्थानों के लिए 300 रुपए है। चंदे की दर प्रति कैलेण्डर वर्ष (जनवरी–दिसम्बर) है। ग्राहक प्रोफार्मा संस्थान की वेबसाइट www.vvgnli.gov.in पर उपलब्ध है। ग्राहक प्रोफार्मा पूरी तरह भरकर डिमांड ड्राफ्ट सहित जो वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान के पक्ष में एवं दिल्ली/नौएडा में देय हो, इस पते पर भेजेः

çdk'ku çHkkjh
वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान
सैक्टर–24, नौएडा–201301, उत्तर प्रदेश

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान श्रम एवं इससे संबंधित मुद्दों पर अनुसंधान, प्रशिक्षण, शिक्षा, प्रकाशन और परामर्श का अग्रणी संस्थान है। इस संस्थान की स्थापना 1974 में की गई थी और यह श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है। यह संस्थान विकास की कार्यसूची में श्रम और श्रम संबंधों को निम्नलिखित के द्वारा मुख्य स्थान देने के लिए समर्पित है:

- वैश्विक स्तर के अनुसंधानिक अध्ययनों और प्रशिक्षण हस्तक्षेपों को हाथ में लेना;
- कार्य की दुनिया में रूपांतरण के मुद्दे पर कार्रवाई करना;
- श्रम तथा रोजगार से संबंधित मुख्य सामाजिक भागीदारों तथा पणधारियों के बीच कौशल तथा अभिवृत्ति और ज्ञान का प्रचार–प्रसार करना;
- विश्व प्रसिद्ध संस्थानों के साथ समझ निर्माण तथा सहभागिता विकसित करना।

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान

(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत निकाय)

सैक्टर 24, नौएडा–201 301

उत्तर प्रदेश (भारत)

वेबसाइट: www.vvgnli.gov.in